राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

SM

स्वर्णिम मुंबई

जनवरी - 2025

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

बीड सरपंच हत्याकांड...

मकर संक्रांति पर्व एक रूप अनेक

उम्मीदों व आशाओं का राष्ट्रीय पर्व ‘गणतंत्र दिवस’

2025

January

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

February

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	

March

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

April

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

May

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31

June

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28
29	30					

July

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30	31		

August

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
					1	2
3	4	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30
31						

September

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30				

October

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

November

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30						

December

Su	M	Tu	W	Th	F	Sa
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

Holidays & Observances

Jan 01	New Year's Day
Jan 20	Martin Luther King Day
Jan 29	Chinese New Year
Feb 14	Valentine's Day
Feb 17	President's Day
Mar 01	Ramadan begins
Mar 05	Ash Wednesday
Mar 17	St. Patrick's Day
Mar 20	March equinox (GMT)
Apr 01	April Fool's Day
Apr 13	Passover
Apr 20	Easter
Apr 22	Earth Day
Apr 23	Admin Assistants Day
May 05	Cinco de Mayo
May 11	Mother's Day
May 26	Memorial Day
Jun 08	Pentecost
Jun 14	Flag Day
Jun 15	Father's Day
Jun 19	Juneteenth
Jun 21	June Solstice (GMT)
Jul 04	Independence Day
Sep 01	Labor Day
Sep 22	September equinox (GMT)
Sep 23	Rosh Hashanah
Oct 13	Federal Holiday
Oct 31	Halloween
Nov 11	Veterans Day
Nov 27	Thanksgiving
Dec 14	Hanukkah begins
Dec 21	December Solstice (GMT)
Dec 25	Christmas Day
Dec 26	Kwanzaa begins
Dec 31	New Year's Eve

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 9 • अंकः 10 • मुंबई • जनवरी-2025

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS.,
A-102, A-1 Wing , Near
Shahad Station , Kalyan (W),
Dist: Thane,
PIN: 421103,
Maharashtra.
Phone: 9082391833 ,
9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

नवी मुंबई एयरपोर्ट में पहली फ्लाइट का टेस्ट सफल	05
उम्मीदों व आशाओं का राष्ट्रीय पर्व 'गणतंत्र दिवस'	06
मकर संक्रांति पर्व एक रूप अनेक	10
दुनिया को अलविदा कह गए	12
देश-राज्य	16
पकवान	18
आधुनिकता बनाम फिजूलखर्चीः आज के विवाहोत्सव के परिपेक्ष्य में...	22
राशिफल	24
महाबलेश्वर	26
सिनेमा	29
कीट नन्हीं परी लिटिल मिस इण्डिया : २०२४	32
आलोक पुरुष एवं शांतिदूत : महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत	33
ईर्ष्या की अग्नि जला देती है मन	36
वहम	40
रामू काका	46
मूली की खेती	56

सुविचारः

लोहे को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, लेकिन इसकी खुद की ही जंग इसे नष्ट कर देती है। इसी प्रकार एक व्यक्ति को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता है, लेकिन खुद की मानसिकता उसे बर्बाद कर सकती है। - रतन टाटा

एक उत्कृष्ट अर्थशास्त्री

डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक ऐसा नाम हैं जो ज्ञान, सरलता और ईमानदारी का प्रतीक है। एक सफल अर्थशास्त्री से लेकर भारत के प्रधानमंत्री बनने तक, उनका जीवन प्रेरणादायक है। डॉ. मनमोहन सिंह का जन्म २६ सितंबर १९३२ को गाह, पंजाब (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। उनका बचपन संघर्षों से भरा था, लेकिन उनकी शिक्षा के प्रति समर्पण ने उन्हें आगे बढ़ने की ताकत दी। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ से पूरी की। इसके बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में स्नातक और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से पीएचडी की। उनकी शिक्षा और शोध ने उन्हें अर्थशास्त्र के क्षेत्र में गहरी समझ और प्रतिष्ठा दिलाई। डॉ. मनमोहन सिंह को भारतीय अर्थव्यवस्था में उनके असाधारण योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने १९९१ में भारत के वित्त मंत्री के रूप में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण (LPG) की नीति लागू की। भारतीय अर्थव्यवस्था को संकट से उबारने और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए खोलने में उनकी भूमिका ऐतिहासिक थी। उनके प्रयासों से भारतीय उद्योगों को प्रतिस्पर्धी बनने का अवसर मिला और विदेशी निवेश के द्वार खुले। १९९१ में भारत गंभीर आर्थिक संकट का सामना कर रहा था। विदेशी मुद्रा भंडार समाप्ति की कगार पर था, और देश को अपने सोने को गिरवी रखना पड़ा था। ऐसे कठिन समय में, डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के नेतृत्व में वित्त मंत्री नियुक्त किया गया।

प्रधानमंत्री के तौर पर अपने पहले कार्यकाल में उन्होंने परमाणु समझौते के मुद्दे पर न सिर्फ अपने प्रधानमंत्री बल्कि पूरी सरकार को हराया था। उन्होंने कहा, 'मेरी सरकार गिर जाए तो बेहतर होगा। लेकिन इस तथ्य के बारे में क्या है कि सिंह के कार्यों को 'कमजोर' करार दिया गया है कि वह परमाणु समझौते को वापस नहीं लेंगे, उन नेताओं को नहीं सिखाया है जिन्होंने आने वाले वर्षों में अपनी सरकार को बचाने के लिए चार सुधार बिलों को वापस ले लिया है? दूसरे, उस समय विपक्ष के लोगों ने सिंह के परमाणु समझौते की अश्लील शब्दों में आलोचना की और बाद में सत्ता में आने पर उसी परमाणु समझौते का पालन किया। फिर भी, प्रधानमंत्री के रूप में पद छोड़ने वाले सिंह ने कहाः 'देखो ... अंत में, मैं वह था जो सही था' इस तरह की परिचित राजनीतिक जीत का जश्न कभी नहीं मनाया। वास्तव में, ऐसा अवसर सिंह को २०१४ के बाद से कई बार मिला। चाहे वह मनरेगा मुद्दा हो या आधार कार्ड या वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)। जिन लोगों ने मनरेगा को 'मूर्तिपूजा भ्रष्टाचार' कहा, आधार कार्ड के विचार को 'असंवैधानिक' घोषित किया और जीएसटी को 'करने' की अनुमति नहीं देने का फैसला किया, यह उन सभी योजनाओं को लागू करने का समय था। यही सच्चा काव्यात्मक न्याय है। दूसरे शब्दों में, मनमोहन सिंह ने जो किया वह बाद के वर्षों में लागू किया गया। हालांकि, यह खुद मनमोहन सिंह के साथ-साथ देश के लिए भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि सिंह की कांग्रेस पार्टी को उस समय यह बात समझ में नहीं आई।

डॉ. मनमोहन सिंह २००४ से २०१४ तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। उनका नेतृत्व न केवल भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में सहायक था, बल्कि उन्होंने कई सामाजिक और विकासशील नीतियों की शुरुआत की। मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) जैसी योजनाओं से ग्रामीण विकास को प्रोत्साहन। भारत-अमेरिका परमाणु समझौता, जिसने भारत के ऊर्जा क्षेत्र में क्रांति ला दी। आर्थिक विकास दर को ८% तक पहुंचाना और गरीबी उन्मूलन की दिशा में ठोस कदम उठाना। उनके नेतृत्व में भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाया। डॉ. मनमोहन सिंह अपनी विनम्रता और ईमानदारी के लिए जाने जाते हैं। राजनीति के शिखर पर रहते हुए भी उनका जीवन सादगी और कर्तव्यनिष्ठा से भरा रहा। आलोचनाओं के बावजूद उन्होंने अपने शांत और धैर्यपूर्ण व्यवहार से अपनी पहचान बनाई। प्रधानमंत्री रहते हुए डॉ. सिंह को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उनके कार्यकाल में कुछ घोटालों और विवादों ने उनकी सरकार को घेरा। हालांकि, उनके समर्थकों का मानना है कि उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी पर कभी कोई सवाल नहीं उठा।

डॉ. सिंह का योगदान केवल भारत तक सीमित नहीं है। एक अर्थशास्त्री और नेता के रूप में उनकी नीतियां अन्य विकासशील देशों के लिए भी प्रेरणा हैं। उनके नेतृत्व ने यह साबित किया कि एक विद्वान और नीति-निर्माता भी बड़े राजनीतिक पद पर सफल हो सकता है। डॉ. मनमोहन सिंह का जीवन भारतीय युवाओं को यह संदेश देता है कि ज्ञान, समर्पण और ईमानदारी से हर बाधा को पार किया जा सकता है। उनका योगदान भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था में अमिट रहेगा। 'डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय इतिहास के उन चंद नेताओं में से हैं, जिन्होंने अपने कार्यों से भविष्य की पीढ़ियों के लिए मजबूत नींव रखी है।' ■

नवी मुंबई एयरपोर्ट में पहली फ्लाइट का टेस्ट सफल

महाराष्ट्र के नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पहली फ्लाइट की टेस्टिंग सफल रही. इंडिगो एयरलाइन्स का A320 विमान यहां सफलतापूर्वक लैंड हो गया जिसे वाटर कैनन से सलामी दी गई. एयपोर्ट के सीईओ बीवी जे के शर्मा ने कहा कि यह बहुत ही ऐतिहासिक दिन है. जितने भी माइल स्टोन हैं यह उनमें से एक है और अभी बहुत कुछ करना है. एयरपोर्ट के सीईओ ने कहा, ''१७ अप्रैल को उद्‌घाटन की बात कर रहे हैं. उसके बाद सीआईएएसफ पर निर्भर करता है सुरक्षा की जिम्मेदारी लेनी होती . फिर हमें पैसेज शुरू करके ट्रायल करना होता है. उद्‌घाटन से ऑपरेशन में एक महीने का समय लगता है.'' कौन-कौन से एयरलाइन्स यहां से उड़ान भरने की तैयारी कर रहे हैं? सीईओ ने कहा, ''सारे एयरलाइन्स इंडिगो, एयर इंडिया और अकाशा भी आने वाले हैं.

मुंबई ओवर क्राउडेट हो गया था. यह बहुत ज्यादा गेम चेंजर साबित होगा. एक एयरपर्ट की बहुत जरूरत थी वह पूरा होते हुए दिख रहा है.'' कोविड के कारण इस एयरपोर्ट पर काम २०२१ में शुरू हुआ था. यहां ऑपरेशन शुरू होने पर मुंबई के अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे पर भार कम होगा. इसके साथ ही आर्थिक विकास को गति मिलने की संभावना है.

इसे क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ाने के उद्देश्य से महत्वाकांक्षी विमानन परियोजना के विकास में एक बड़े कदम के तौर पर देखा जा रहा है। एक माह पहले सेना के विमान का सफल लैंडिंग परीक्षण किया गया था। मार्च तक एयरपोर्ट का काम पूरा होने पर यहां से नियमित उड़ान सेवा शुरू कर दी जाएगी। अदाणी एयरपोर्ट होल्डिंग्स लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अरुण बंसल ने मीडिया को बताया कि नवी मुंबई अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए यह एक महत्वपूर्ण दिन है। उन्होंने कहा कि इस सफल लैंडिंग के बाद अब हम यह कह सकते हैं कि हम सुरक्षा के तमाम पहलुओं को ध्यान में रखते हुए इस एयरपोर्ट से परिचालन के एक कदम करीब हैं। उन्होंने इस ऐतिहासिक पल के लिए डीजीसीए और सभी एजेंसियों के प्रति आभार जताया। अरुण बंसल ने कहा कि नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट विश्वस्तरीय विमानन सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा में भी काम करता है। अधिकारियों ने बताया कि एयरपोर्ट की टर्मिनल बिल्डिंग का काम अंतिम चरण में है। नवी मुंबई इंटरनेशनल एयरपोर्ट का काम ३१ मार्च, २०२५ तक पूरा हो जाएगा। यह हवाईअड्डा चालू होने पर यहां से एक साल में ९ करोड़ से ज्यादा यात्री सफर करेंगे। यह हवाई अड्डा लगभग ५९४५ एकड़ क्षेत्र में बनाया गया है। इस हवाई अड्डे का रनवे ३.७ किमी है, और एक ही समय में ३५० विमान पार्क किए जा सकते हैं। नवी मुंबई एयरपोर्ट का संचालन शुरू होने पर मुंबई एयरपोर्ट पर दबाव कम हो जाएगा। इसके साथ नवी मुंबई का विस्तार और तेजी से होगा।

एयरपोर्ट बनाने में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा. जेके शर्मा ने कहा, ''जब ४ अगस्त २०२१ को मैनेजमेंट में बदलाव हुआ तो उसके बाद काम शुरू किया गया. गांव वाले बसे थे गांव वालों को सैटल करना, ४५ मंदिर को निकालना था. बहुत बड़ा पहाड़ था. ५५ करोड़ क्यूबिट मीटर पहाड़ तोड़कर अंदर काम हुआ. पूरा का पूरा जमीन बना फिर उसपर टर्मिनल बना.''

उम्मीदों व आशाओं का राष्ट्रीय पर्व 'गणतंत्र दिवस'

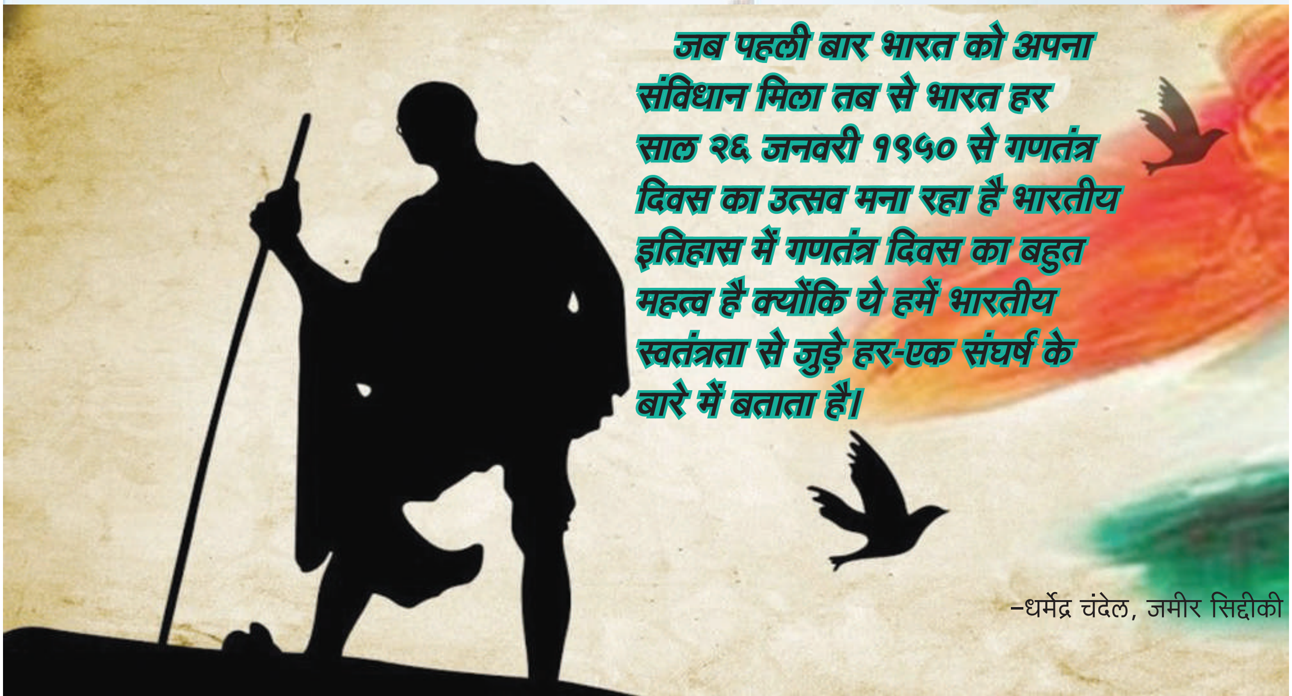

-धर्मेंद्र चंदेल, जमीर सिद्दीकी

हम अपने घर में चैन से इसीलिए रह पाते है क़्योंकि हमारे घर में हमारी मर्जी चलती है. हम जो चाहते हैं अपने घर में कर पाते हैं. ऐसा इसलिए होता है क्यूंकि हमारे घर में हमारे अपने कानून और नियम होते हैं. इसी तरह एक देश की आजादी उसका संविधान नियंत्रित करता है. देश तभी जाकर पूर्ण आज़ाद माना जाता है जब वह गणतांत्रिक होता है. आज भारत की संप्रभुता, गर्व, नागरिक उन्नयन व लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण दिवस मनाया जा रहा है. गणतंत्र दिवस इसलिए मनाया जाता है क्योंकि इस दिन भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य बना था। २६ जनवरी १९५० को भारत के संविधान को लागू किया गया था जब भारत के शासी दस्तावेज को भारत के अधिनियम १९३५ से बदला गया था। इस दिन का महत्व इसलिए भी है क्योंकि इस दिन भारत की स्वतंत्रता यानि पूर्ण स्वराज की घोषणा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने २६ जनवरी १९३० को की थी। भारत में गणतंत्र दिवस का दिन राष्ट्रीय अवकाश के रुप

में मनाया जाता है जब इस महान दिन का उत्सव लोग अपने-अपने तरीके से मनाते है, जैसे- समाचार देखकर, स्कूल में भाषण के द्वारा या भारत की आजादी से संबंधित किसी प्रतियोगिता में भाग लेकर आदि।

गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व जो प्रति वर्ष २६ जनवरी को मनाया जाता है। गणतंत्र दिवस समारोह २६ जनवरी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता है और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता

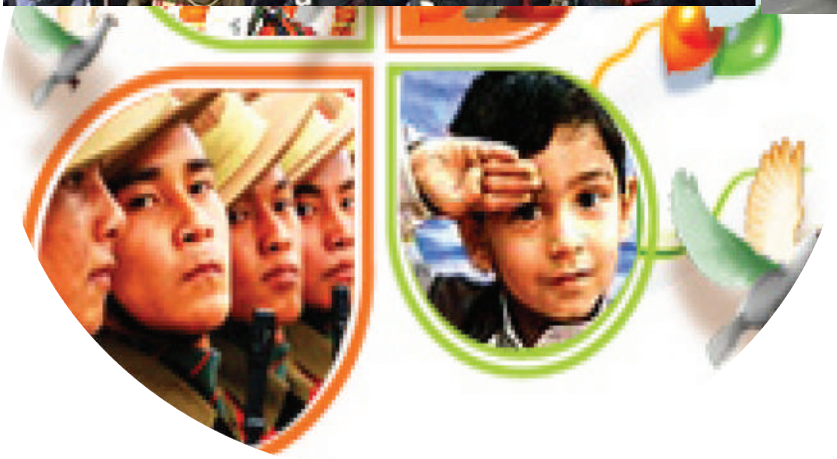

है। इस अवसर के महत्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति के निवास) तक राजपथ पर राजधानी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते है।

इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्प माला डालते हैं। इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति के बाद में अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं। परेड में विभिन्न राज्यों से चलित शानदार प्रदर्शिनी भी होती है, प्रदर्शिनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शिनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है। भारत के राष्ट्रपति व प्रधान मंत्री द्वारा दिया गये भाषण को सुनने के लाखो कि भीड़ लाल किले पर एकत्रित होती है।

गणतंत्र दिवस समारोह और परेड

इस दिन पूरा देश देशभक्ति के रंग में रंग जाता है लेकिन मुख्य तौर पर गणतंत्र दिवस का समारोह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सुबह ९ बजे से होता है जो लगभग तीन घंटे चलता है। पूरे देश से लोगों के शामिल होने की वजह से यह ऐतिहासिक अवसर राष्ट्रीय त्यौहार बन जाता है। यह दिन राष्ट्र की एकता का प्रतीक है क्योंकि इस दिन विभिन्न जाति, पंथ, धर्म और क्षेत्र के लोग आपस में मिलकर एक भारतीय होने के गर्व को उत्सव के रुप में मनाते हैं। यह समारोह राजपथ पर बहुत उत्साह और गर्व के साथ मनाया जाता है। राजधानी के भव्य समारोह के अलावा गणतंत्र दिवस को देश के विभिन्न हिस्सों में कई स्तरों पर मनाया जाता है, जैसे शहरों, जिला मुख्यालय, पंचायत, स्कूल और दफ्तरों में ।

--मुंबई में लोग गणतंत्र दिवस की परेड में शिवाजी पार्क या मरीन ड्राइव पर भाग ल `ते हैं।

- बेंगलुरु में लोग गणतंत्र दिवस समारोह फील्ड मार्शल मॉनक शॉ परेड मैदान में मनाते हैं जहां परेड और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।
- कोलकाता में लोग गणतंत्र दिवस परेड का मजा रेड रोड पर लेते हैं।
- चैन्नई में गणतंत्र दिवस समारोह मरीना बीच और कामराज सालै पर होता है।

भारत के गणतंत्र दिवस की भव्यता को भव्य परेड से देखा जा सकता है जो राष्ट्रपति भवन के पास रायसीना हिल से शुरु होकर इंडिया गेट पर खत्म होती है। इस अवसर पर राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और कई उच्च रैंक के अधिकारी मौजूद होते हैं। यह परेड तब शुरु होती है जब प्रधानमंत्री इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति पर भारतीय सेना के शहीदों की याद में पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।

भारतीय सशस्त्र सेनाओं के कमांडर इन चीफ भारत के राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज को फहराते हैं। इसके बाद राष्ट्रीय गान की धुन बजती है और २१ तोपों की सलामी दी जाती है। नौसेना, सेना और वायु सेना की विभिन्न रेजिमेंट राष्ट्रपति को सलाम करते हुए राजपथ पर अपना पराक्रम प्रदर्शित करती हैं। सशस्त्र बलों के कर्मी मोटर साइकिल की सवारी करते हैं जबकि भारतीय वायु सेना के जवान लड़ाकू विमानों में उड़ान परेड करते हैं।

गणतंत्र दिवस पर भारत की समृद्ध और रंगीन संस्कृति प्रदर्शित की जाती है। विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवर लोग पारंपरिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करते हैं। स्कूली बच्चे सुंदर पोशाकों में इस दिन भारत के गौरवमयी इतिहास के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं।

जरा याद उन्हें भी कर लो, जो लौट के घर न आए...

मंगल पांडेः देश के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में वर्ष १८५७ की क्रांति का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है. अंग्रेजी शासन के विरुद्ध लड़े गए इस आंदोलन में भारत के योद्धाओं ने अपना अहम योगदान दिया. इन योद्धाओं में मंगल पांडे का नाम अग्रणी रूप में लिया जाता है. मंगल पांडे वह पहले क्रांतिकारी थे जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद किया. यह मंगल पांडे के प्रयास का ही नतीजा था जिसकी बदौलत ९० साल बाद १९४७ मेंभारत को आजादी नसीब हुई.

रानी लक्ष्मीबाईः भारतीय स्वतंत्रता संग्राम वीरता और शौर्य की बेमिसाल निशानी रानी लक्ष्मीबाई के वर्णन के बगैर अधूरा माना जाता है. लक्ष्मीबाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह ध्रुव तारा हैं जिसकी रोशनी कभी कम नहीं हो सकती. देश के पहले स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली रानी लक्ष्मीबाई का अप्रतिम शौर्य किसी से छुपा नहीं है. झांसी ने अपनी मुट्ठी भर सेना की सहायता से अंग्रेजों के नाम में दम कर दिया था. उन्होंने कम उम्र में ही साबित कर दिया कि वह न सिर्फ बेहतरीन सेनापति हैं बल्कि कुशल प्रशासक भी हैं. वह महिलाओं को अधिकार संपन्न बनाने की भी पक्षधर थीं. उन्होंनेअपनी सेना में महिलाओं की भर्ती की थी.

भगत सिंहः युवाओं को अगर सही नेतृत्व मिले तो वह देश की अनमोल धरोहर साबित होते हैं. क्रांतिकारी भगत सिंह भी एक ऐसे ही अनमोल रत्न थे. उन्होंने भारतीय युवाओं की उपयोगिता और उनके जुनून को सबके सामने रखा. शहीद भगत सिंह ने ही देश के नौजवानों में ऊर्जा का ऐसा गुबार भरा कि विदेशी हुकूमत को इनसे डर लगने लगा. हाथ जोड़कर निवेदन करने की जगह लोहे से लोहा लेने की आग के साथ आजादी की लड़ाई में कूदने वाले भगत सिंह की दिलेरी की कहानियां आज भी हमारे अंदर देशभक्ति की आग जलाती हैं.

चन्द्रशेखर आजादः नाम आजाद, पिता का नाम स्वाधीनता, घर जेल - यह परिचय उस चिंगारी का था जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आग में सबसे ज्यादा घी डाला. चन्द्रशेखर आजाद ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों की ऐसी फौज खड़ी की जिससे अंग्रेजों की नींद उड़ गई. अंग्रेजों में चन्द्रशेखर का ऐसा खौफ था कि उनकी मौत के बाद भी कोई उनके करीब जाने से डरता था. वीरता, साहस और दृढ़निश्चयता की ऐसी मिसाल दुनिया में बहुत कम देखने को मिलती है.

सुभाष चन्द्र बोसः अगर आप सोचते हैं कि कहानियों में आने वाल ` साहसी कारनामे करने वाले नायक सिर्फ कल्पनाओं में होते हैं तो शायद आप गलत हैं. सुभाष चन्द बोस वह शख्स हैं जिन्होंने अपने कारनामों से ना सिर्फ अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे बल्कि उन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपनी एक अलग फौज भी खड़ी की थी. देश से तो उन्हें निकाल दिया गया लेकिन माटी की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने विदेश में जाकर ऐसी सेना चुनी जिसने अंग्रेजों को दिन में ही तारे दिखाने का हौसला दिखाया.

लाला लाजपत रायः 'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की कील बनेगी' यह कथन थे शेर-ए-पंजाब के नाम से मशहूर लाला लाजपत राय के जिन्होंने अपने नेतृत्व से अंग्रेजी शासन के गढ़ों में हमला किया था. लाला जी पंजाब केसरी कहे जाते थे और पूरे पंजाब के प्रतिनिधि थे. उन्होंने साइमन कमीशन केआगमन का कड़ा विरोध किया. वह घायल होने के बावजूद भी सक्रिय रूप से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ते रहे. आखिरी समय में उनके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द चरितार्थ हुआ.

वीर सावरकरः क्रांतिकारी होने का यह मतलब नहीं होता कि इंसान हमेशा गुस्से में दिखे और मरने-मारने पर आतुर रहे. जो क्रांतिकारी स्वभाव से जितने शांत होते हैं वह उतने ही घातक होते हैं. कुछ ऐसी ही शख्सियत के थे वीर विनायक दामोदर सावरकर. विनायक दामोदर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के अग्रिम पंक्ति के सेनानी और प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे. सावरकर की क्रांतिकारी गतिविधियाँ भारत और ब्रिटेन में अध्ययन के दौरान शुरू हुई. वे इंडिया हाउस से जुड़े थे. उन्होंने अभिनव भारत सोसायटी समेत अनेक छात्र संगठनोंकी स्थापना की थी.

मदन लाल ढींगराः यह नाम शायद आपने बहुत कम सुना होगा. लेकिन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कुछ भूले हुए क्रांतिकारियों में ढींगरा का नाम उल्लेखनीय है. मदन लाल ढींगरा को अंग्रेज अफसर कर्जन वाईली की हत्या के आरोप में फांसी पर लटका दिया गया था. इस देशभक्त को दफन होने के लिए देश की धरती भी नसीब नहीं हुई थी पर देश आज भी इस युवा क्रांतिकारी को याद करता है.

सुखदेवः दिल में आस हो और हौसलों में उड़ान हो तो कोई मंजिल दूर नहीं होती. कुछ ऐसा ही हौसला था युवा सुखदेव में जिन्होंने देशभक्ति की राह पर चलते हुए फांसी के झूले पर हंसते हंसते खुद को कुर्बान कर दिया. बचपन से ही सुखदेव ने भारतीय लोगों पर अत्याचार होते देखा था. यही कारण है कि किशोरावस्था में पहुंचते ही वह अंग्रेजों को भारत से बाहर करने के लिए चलाई जा रही क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे. मात्र २४ वर्ष की आयु में देश के लिए अपने प्राण त्यागने वाले सुखदेव को अपने साहस, कर्तव्य-परायणता और देशभक्ति के लिए हमेशा याद किया जाएगा.

गणेश विद्यार्थीः काव्य साहित्य का वह अंश है जिसका असर बहुत ज्यादा होता है. इतिहास गवाह है कि हर क्रांति में कवियों का अहम स्थान रहा है. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम एक ऐसे कवि के रूप में लिया जाता है जिनकी कविताओं ने युवाओं में क्रांति जगाने का काम किया.

उनके द्वारा लिखित और प्रकाशित समाचार पत्र 'प्रताप' ने स्वाधीनता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका निभाई. प्रताप के जरिये ही ना जाने कितने क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित हुए. इतना ही नहीं यह समाचार पत्र समय-समय पर साहसी क्रांतिकारियों की ढाल भी बना.

अशफ़ाक उल्ला खानः अंग्रेजी शासन से देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले अशफ़ाक उल्ला खां ना सिर्फ एक निर्भय और प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे बल्कि उर्दू भाषा के एक बेहतरीन कवि भी थे. इनको काकोरी कांड के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है.

बिपिन चंद्र पालः भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रतिष्ठित नेता और बंगाल पुनर्जागरण के मुख्य वास्तुकार थे बिपिन चंद्र पाल. इसके अलावा वह एक राष्ट्रभक्त होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट वक्ता, लेखक और आलोचक भी थे.हालांकि इतिहास के पन्नों में आजादी के कुछ ऐसे गुमनाम दीवाने भी हैं जिनके साथ भारतीय इतिहासकारों ने पूरा न्याय नहीं किया. आज जरूरत है उन्हें भी याद करने की. ■

बंसत कुमार बिस्वास | शहीदे-आज़म भगत सिंह | प० चन्द्रशेखर आज़ाद | विष्णु गणेश पिंगले | जतिन दास | करतार सिंह सराभा | राम प्रसाद बिस्मिल | अश्फ़ाक उल्ला खाँ | राजगुरू

मकर संक्रान्ति भारत के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। यह पर्व प्रत्येक वर्ष जनवरी महीने में समस्त भारत मनाया जाता है।परम्परा से यह विश्वास किया जाता है कि इसी दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। यह वैदिक उत्सव है। इस दिन खिचड़ी का भोग लगाया जाता है। गुड़-तिल, रेवड़ी, गजक का प्रसाद बाँटा जाता है। इस त्यौहार का सम्बन्ध प्रकृति, ऋतु परिवर्तन और कृषि से है। ये तीनों चीजें ही जीवन का आधार हैं। प्रकृति के कारक के तौर पर इस पर्व में सूर्य देव को पूजा जाता है, जिन्हें शास्त्रों में भौतिक एवं अभौतिक तत्वों की आत्मा कहा गया है। इन्हीं की स्थिति के अनुसार ऋतु परिवर्तन होता है और धरती अनाज उत्पन्न करती है, जिससे जीव समुदाय का भरण-पोषण होता है।

मकर संक्रांति
पर्व एक रूप अनेक

मकर संक्रांति हिंदू धर्म का प्रमुख त्यौहार है। यह पर्व पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पौष मास में जब सूर्य मकर राशि पर आता है तब इस संक्रांति को मनाया जाता है। यह त्यौहार अधिकतर जनवरी माह की चौदह तारीख को मनाया जाता है। कभी-कभी यह त्यौहार बारह, तेरह या पंद्रह को भी हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि सूर्य कब धनु राशि को छोड़ मकर राशि में प्रवेश करता है। इस दिन से सूर्य की उत्तरायण गति आरंभ होती है और इसी कारण इसको उत्तरायणी भी कहते हैं। मान्यता है कि मकर-संक्रांति से सूर्य के उत्तरायण होने पर देवताओं का सूर्योदय होता है और दैत्यों का सूर्यास्त होने पर उनकी रात्रि प्रारंभ हो जाती है. उत्तरायण में दिन बड़े और रातें छोटी होती हैं. संक्रांति को महापर्व का दर्जा दिया गया है. उत्तर प्रदेश में मकर-संक्रांति के दिन खिचड़ी बनाकर खाने तथा खिचड़ी की सामग्रियों को दान देने की प्रथा होने से यह पर्व खिचड़ी के नाम से प्रसिद्ध हो गया है. बिहार-झारखंड एवं मिथिलांचल में यह धारणा है कि मकर-संक्रांति से सूर्य का स्वरूप तिल-तिल बढ़ता है, अतः वहां इसे तिल संक्रांति कहा जाता है. यहां प्रतीक स्वरूप इस दिन तिल तथा तिल से बने पदार्थो का सेवन किया जाता है.

मकर संक्रांति को विभिन्न जगहों पर अलग-अलग तरीके से मानाया जाता है. हरियाणा व पंजाब में इसे लोहड़ी के रूप में मनाया जाता है. उतर प्रदेश व बिहार में इसे खिचड़ी कहा जाता है. उतर प्रदेश में इसे दान का पर्व भी कहा जाता है. असम में इस दिन बिहू त्यौहार मनाया जाता है. दक्षिण भारत में पोंगल का पर्व भी सूर्य के मकर राशि में प्रवेश करने पर होता है. वहां इस दिन तिल, चावल, दाल की खिचड़ी बनाई जाती है. वहां यह पर्व चार दिन तक चलता है. नई फसल के अन्न से बने

भोज्य पदार्थ भगवान को अर्पण करके किसान अच्छे कृषि-उत्पादन हेतु अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं. पश्चिम बंगाल में मकर सक्रांति के दिन देश भर के तीर्थयात्री गंगासागर द्वीप पर एकत्र होते हैं, जहाँ गंगा बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। एक धार्मिक मेला, जिसे गंगासागर मेला कहते हैं, इस समारोह की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस संगम पर डुबकी लगाने से सारा पाप धुल जाता है। सिन्धी समाज एक दिन पूर्व ही मकर संक्रान्ति को 'लाल लोही' के रूप में मनाता है। इस दिन कहीं खिचड़ी तो कहीं चूड़ादही का भोजन किया जाता है तथा तिल के लड्डु बनाये जाते हैं। ये लड्डू मित्र व सगे सम्बन्धियों में बाँटें भी जाते हैं। चावल व मूंग की दाल को पकाकर खिचड़ी बनाई जाती है। इस दिन खिचड़ी खाने का प्रचलन व विधान है। घी व मसालों में पकी खिचड़ी स्वादिष्ट, पाचक व ऊर्जासे भरपूर होती है। इस दिन से शरद ऋतु क्षीण होनी प्रारम्भ हो जाती है। बसन्त के आगमन से स्वास्थ्य का विकास होना प्रारम्भ होता है।

कर्नाटक में भी फ़सल का त्योहार शान से मनाया जाता है। बैलों और गायों को सुसज्जित कर उनकी शोभा यात्रा निकाली जाती है। नये परिधान में सजे नर-नारी, ईख, सूखा नारियल और भुने चने के साथ एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। पंतगबाज़ी इस अवसर का लोकप्रिय परम्परागत खेल है। गुजरात का क्षितिज भी संक्रान्ति के अवसर पर रंगबिरंगी पंतगों से भर जाता है। गुजराती लोग संक्रान्ति को एक शुभ दिवस मानते हैं और इस अवसर पर छात्रों को छात्रवृतियाँ और पुरस्कार बाँटते हैं। केरल में भगवान अयप्पा की निवास स्थली सबरीमाला की वार्षिक तीर्थयात्रा की अवधि मकर संक्रान्ति के दिन ही समाप्त होती है, जब सुदूर पर्वतों के क्षितिज पर एक दिव्य आभा 'मकर ज्योति' दिखाई पड़ती है। महाराष्ट्र में ऐसा माना जाता है कि मकर संक्रान्ति से सूर्य की गति तिल-तिल बढ़ती है, इसीलिए इस दिन तिल के विभिन्न मिष्ठान बनाकर एक-दूसरे का वितरित करते हुए शुभ कामनाएँ देकर यह त्योहार मनाया जाता है। महाराष्ट्र में नवविवाहिता स्त्रियाँ प्रथम संक्रान्ति पर तेल, कपास, नमक आदि वस्तुएँ सौभाग्यवती स्त्रियों को भेंट करती हैं। बंगाल में भी इस दिन तिल दान का महत्त्व है। इस दिन कुछ अन्य चीज भले ही न खाई जाएँ, किन्तु किसी न किसी रूप में तिल अवश्य खाना चाहिए। इस दिन तिल के महत्व के कारण मकर संक्रांति पर्व को 'तिल संक्राति' के नाम से भी पुकारा जाता है। तिल के गोल-गोल लड्डू इस दिन बनाए जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि तिल की उत्पत्ति भगवान विष्णु के शरीर से हुई है तथा उपरोक्त उत्पादों का प्रयोग सभी प्रकार के पापों से मुक्त करता है; गर्मी देता है और शरीर को निरोग रखता है। मंकर संक्रांति में जिन चीज़ों को खाने में शामिल किया जाता है, वह पौष्टिक होने के साथ ही साथ शरीर को गर्म रखने वाले पदार्थ भी हैं।

राजस्थान में सौभाग्यवती स्त्रियाँ इस दिन तिल के लड्डू, घेवर तथा मोतीचूर के ल ड्डू आदि पर रुपय रखकर, 'वायन' के रूप में अपनी सास को प्रणाम करके देती है तथा किसी भी वस्तु का चौदह की संख्या में संकल्प करके चौदह ब्राह्मणों को दान करती है।संक्रांति एक विशेष त्यौहार के रूप में देश के विभिन्न अंचलों में विविध प्रकार से मनाई जाती है. कहा जाता है कि मकर संक्रांति के दिन गंगा स्नान करने पर सभी कष्टों का निवारण हो जाता है. इसीलिए इस दिन दान, तप, जप का विशेष महत्व है. ऐसा मान्यता है कि इस दिन को दिया गया दान विशेष फल देने वाला होता है. मकर-संक्रांति से प्रकृति भी करवट बदलती है. इस दिन लोग पतंग भी उड़ाते हैं. उन्मुक्त आकाश में उड़ती पतंगें देखकर स्वतंत्रता का अहसास होता है. संक्रान्ति के पावन अवसर पर हज़ारों लोग इलाहाबाद के त्रिवेणी संगम, वाराणसी में गंगाघाट, हरियाणा में कुरुक्षेत्र, राजस्थान में पुष्कर, महाराष्ट्र के नासिक में गोदावरी नदी में स्नान करते हैं। गुड़ व श्वेत तिल के पकवान सूर्य को अर्पित कर सभी में बाँटें जाते हैं। गंगासागर में पवित्र स्नान के लिए इन दिनों श्रद्धालुओं की एक बड़ी भीड़ उमड़ पड़ती है। यह दिन सुन्दर पतंगों को उड़ाने का दिन भी माना जाता है। लोग बड़े उत्साह से पतंगें उड़ाकर पतंगबाज़ी के दाँव-पेचों का मज़ा लेते हैं। बड़े-बड़े शहरों में ही नहीं, अब गाँवों में भी पतंगबाज़ी की प्रतियोगिताएँ होती हैं।

संक्राति पर खान-पान

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में मकर संक्रांति के दिन बिहार और उत्तर प्रदेश की ही तरह खिचड़ी और तिल खाने की परम्परा है। यहाँ के लोग इस दिन गुजिया भी बनाते हैं। दक्षिण भारतीय प्रांतों में मकर संक्राति के दिन गुड़, चावल एवं दाल से पोंगल बनाया जाता है। विभिन्न प्रकार की कच्ची सब्जियों को लेकर मिश्रित सब्जी बनाई जाती है। इन्हें सूर्य देव को अर्पित करने के पश्चात सभी लोग प्रसाद रूप में इसे ग्रहण करते हैं। इस दिन गन्ना खाने की भी परम्परा है।

पंजाब एवं हरियाणा में इस पर्व में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में मक्के की

दुनिया को अलविदा कह गए डॉ.मनमोहन सिंह...

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह को देश के आर्थिक उदारीकरण का पुरोधा कहा जाता है। अर्थशास्त्र पर उनकी गहरी पकड़ और रुचि थी। १९९१ में नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्री रहते हुए उन्हें देश में लाइसेंस राज खत्म करने का श्रेय जाता है। उनके द्वारा किए गए सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई राह दिखाई।

देश के पहले सिख पीएम, सबसे लंबे समय इस पद पर रहने वाला चौथे नेता

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह गुरुवार को ९२ साल की उम्र में दुनिया को अलविदा कह गए। डॉ. मनमोहन सिंह ने १० वर्षों तक प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने से पहले आरबीआई गवर्नर, योजना आयोग के उपाध्यक्ष और वित्त मंत्री का भी कार्यभार संभाला था। उन्हें उदारीकरण के जरिए देश को गंभीर आर्थिक संकट से निकालने का श्रेय जाता है। इसके अलावे उनके नाम एक विशेष उपलब्धि भी है। वे देश के एकमात्र ऐसे प्रधानमंत्री रहे हैं, जिनका हस्ताक्षर भारत के नोटों (करेंसी) पर रहा। २००५ में डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री के पद पर थे तब भारत सरकार ने १० रुपये का एक नया नोट जारी किया था। उस पर मनमोहन सिंह के हस्ताक्षर थे। हालांकि नियमों के अनुसार उस समय नोटों पर भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर होते थे। लेकिन १० रुपये के नोट पर मनमोहन सिंह का हस्ताक्षर एक विशेष बदलाव के तहत किया गया था। डॉ. मनमोहन सिंह ने १६ सितंबर १९८२ से ल `कर १४ जनवरी १९८५ तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर का पदभार संभाला था। उस दौरान छपने वाले नोटों पर मनमोहन सिंह के हस्ताक्षर हुआ करते थे। भारत में यह व्यवस्था आज भी है कि करेंसी पर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की नहीं, बल्कि आरबीआई गवर्नर ही साइन करते हैं।

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह को देश के आर्थिक उदारीकरण का पुरोधा कहा जाता है। अर्थशास्त्र पर उनकी गहरी पकड़ और रुचि थी। १९९१ में नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्री रहते हुए उन्हें देश में लाइसेंस राज खत्म करने का श्रेय जाता है। उनके द्वारा किए गए सुधारों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई राह दिखाई। मनमोहन सिंह ने जब १९९१ वित्त मंत्रालय की बागडोर संभाली थी, तब भारत का राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के ८.५ प्रतिशत के करीब था, भुगतान संतुलन घाटा बहुत बड़ा था और चालू खाता घाटा भी जीडीपी के ३.५ प्रतिशत के आसपास पहुंच गया था था। देश के पास जरूरी आयात का खर्च जुटाने के लिए केवल दो हफ्ते विदेशी मुद्रा ही शेष बचा था। देश को अपना सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड के पास गिरवी रखना पड़ा था। हाल ांकि मनमोहन पद संभालने के बाद अपने दूरदर्शी फैसलों से देश को आर्थिक संकट के दौर से निकालने में कामयाब रहे। आगे चल कर देश का गिरवी रखा सोना भी आरबीआई को लौटाया गया।

२४ जुलाई १९९१ को केंद्रीय बजट १९९१-९२ पेश करते हुए डॉ. मनमोहन सिंह

डॉ. मनमोहन सिंह से जुड़ी खास बातें

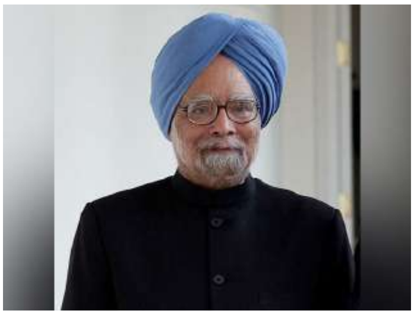

१. भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के दो गवर्नर वित्त मंत्री बने- उनमें एक मनमोहन सिंह और दूसरे थे सीडी देशमुख।
२. चार वित्त मंत्री प्रधानमंत्री बने- ये नाम हैं मोरारजी देसाई, चरण सिंह , वी.पी. सिंह और मनमोहन सिंह।
३. चार शीर्ष नौकरशाह जो वित्त मंत्री बने- उनमें एचएम पटेल, सीडी देशमुख, यशवंत सिन्हा और मनमोहन सिंह का नाम।
४. मनमोहन सिंह धाराप्रवाह हिंदी बोल सकते थे, लेकिन उर्दू में भाषा में उनकी दक्षता के कारण उनके भाषण उर्दू में लिखे जाते थे।
५. मनमोहन सिंह को १९९३ में यूरोमनी और एशियामनी की ओर से 'फाइनेंस मिनिस्टर ऑफ द ईयर' के रूप में नामित किया गया
६. १९६२ में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने मनमोहन सिंह को सरकार में पद की पेशकश की तो सिंह ने कर दिया था अस्वीकार

नए आर्थिक युग की शुरुआत की थी। उन्होंने आर्थिक सुधार, लाइसेंस राज का खात्मा और कई क्षेत्रों को निजी व विदेशी कंपनियों के लिए खोलने जैसे साहसिक कदम उठाए। उन्होंने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई), रुपये के अवमूल्यन, करों में कटौती और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के निजीकरण की अनुमति देकर एक नई शुरुआत की। आर्थिक सुधारों की एक व्यापक नीति की शुरुआत में उनकी भूमिका को दुनिया भर में स्वीकार किया गया। उनकी नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण की दिशा में ले जाने का काम किया। वह १९९६ तक वित्त मंत्री के तौर पर आर्थिक सुधारों को अमलीजामा पहनाते रहे।

मई २००४ में मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का मौका मिला। मनमोहन सिंह की सरकार २००५ में महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) लेकर आई और बिक्री कर की जगह मूल्य वर्धित कर (वैट) लागू हुआ। इसके अलावा उन्होंने देश भर में ७६,००० करोड़ रुपये की कृषि ऋण माफी और ऋण राहत योजना लागू कर करोड़ों किसानों को लाभ पहुंचाने का काम किया। देश में आधार जैसी पहचान प्रणाली शुरू करने का काम भी डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में ही शुरू हुआ।

डॉ. सिंह ने २००८ की वैश्विक वित्तीय मंदी दौर में देश का नेतृत्व किया। उन्होंने इस मुश्किल वक्त से बाहर निकलने के लिए एक विशाल प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की थी। उनके प्रधानमंत्री रहते हुए वित्तीय समावेशन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दिया गया। प्रधानमंत्री के तौर पर उनके कार्यकाल के दौरान देश भर में बैंक शाखाएं खोली गईं। सूचना का अधिकार, भोजन का अधिकार और बच्चों को मुफ्त व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसे अन्य सुधार भी उनके कार्यकाल में हुए।

१. मनमोहन बतौर वित्त मंत्री देश में उदारीकरण लाए : नरसिम्हा राव ने कहा था- सफल हुए तो श्रेय हम दोनों को, नाकाम हुए तो आप जिम्मेदार

२. PM आवास में भी मारुति ८०० रखते थे मनमोहन सिंह:भाषण की स्क्रिप्ट उर्दू में लिखवाते थे; सिख दंगों पर संसद में माफी मांगी थी

३. मनमोहन सिंह ने टीचर्स के कहने पर इकोनॉमिक्स चुनी:अमृतसर हिंदू कॉलेज लेता था आधी फीस, क्लासमेट बोले-कम शब्दों में अपनी बात बोल जाते थे

४. मनमोहन सिंह : संसद में बोले थे- हजारों जवाबों से अच्छी है मेरी खामोशी... आखिरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा- इतिहास मेरे प्रति उदार होगा

५. पूर्व PM मनमोहन सिंह को अमेरिकी विदेशमंत्री ने श्रद्धांजलि दी : NYT ने कहा- मृदुभाषी और बुद्धिजीवी का निधन, BBC ने आर्थिक सुधारों का प्रणेता कहा

६. उर्दू में लिखा जाता था मनमोहन सिंह का भाषण:पहले स्पीच की तैयारी में तीन दिन लगे, टेलीप्रॉम्प्टर के सामने करते थे प्रैक्टिस।

मनमोहन सिंह, २००४ में देश के १४वें प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने मई २०१४ तक इस पद पर दो कार्यकाल पूरे किए थे। वे देश के पहले सिख और सबसे लंबे समय तक रहने वाले चौथे प्रधानमंत्री थे। मनमोहन सिंह के निधन के चलते केंद्र सरकार ने ७ दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया है। साथ ही शुक्रवार को होने वाले सभी कार्यक्रम कैंसिल कर दिए गए हैं।

राहुल गांधी और कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे बेलगावी से देर रात दिल्ली पहुंचने के बाद सीधे मनमोहन सिंह के आवास गए थे। राहुल ने X पर लिखा- मैंने अपना मार्गदर्शक और गुरु खो दिया। इस बीच, कर्नाटक के बेलगावी में चल रही कांग्रेस वर्किंग कमेटी (CWC) मीटिंग रद्द कर दी गई। कांग्रेस स्थापना दिवस से जुड़े आयोजन भी कैंसिल हो गए हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस पार्लियामेंट्री पार्टी की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने संदेश जारी किया।

उन्होंने लिखा कि हमने एक ऐसे नेता को खो दिया है जो ज्ञान, बड़प्पन और विनम्रता के प्रतीक थे, जिन्होंने पूरे दिल और दिमाग से हमारे देश की सेवा की। उनकी दूरदर्शिता ने लाखों भारतीयों का जीवन बदल दिया और उन्हें सशक्त बनाया। सोनिया ने लिखा कि मेरे लिए डॉ. मनमोहन सिंह का निधन एक गहरी व्यक्तिगत क्षति है। वे मेरे मित्र और मार्गदर्शक थे। उनका व्यवहार बहुत ही सौम्य था, लेकिन अपने विश्वासों के प्रति वे बहुत दृढ़ थे। वे एक ऐसा शून्य छोड़ गए जिसे कभी नहीं भरा जा सकता। कांग्रेस पार्टी और भारत के लोग हमेशा गर्व और आभारी रहेंगे कि हमारे पास डॉ. मनमोहन सिंह जैसे नेता थे जिनका भारत की प्रगति और विकास में अतुलनीय योगदान है।

कांग्रेस के सीनियर नेता डॉ. करण सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरी शोक व्यक्त करते हुए उन्हें अद्भुत इंसान बताया। डॉ. करण सिंह ने कहा, डॉ. मनमोहन सिंह बहुत ही सम्मानजनक और विनम्र व्यक्ति थे। उन्हें कभी यह उम्मीद नहीं थी कि वह देश के प्रधानमंत्री बनेंगे, लेकिन सोनिया गांधी जी ने उन्हें यह जिम्मेदारी सौपी। डॉ. मनमोहन सिंह ने देश के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए और दो बार प्रधानमंत्री के रूप में अपनी सेवा दी। उनकी भाषण शैली बहुत ही गरिमामयी थी। डॉ. करण सिंह ने यह भी कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह को विपक्षी दलों से कई बार हमलों का सामना करना पड़ा, लेकिन वह हमेशा शांत रहे और कभी भी प्रतिक्रिया नहीं दी। उनके किए गए कामों के लिए हमेशा याद किया जाएगा।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने एक्स पर एक वीडियो शेयर किया जिसमें उन्होंने कहा 'पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन से हम सभी बहुत दुखी हैं। उन्होंने वित्त मंत्री, आरबीआई गवर्नर और देश के प्रधानमंत्री के रूप में अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करने की पूरी कोशिश की, खासकर देश की अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा देने का प्रयास किया वो सराहनीय है। उनका जाना देश के लिए एक बड़ी और अपूरणीय क्षति है। मैं अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूं।'

एकनाथ शिंदे बोले- मनमोहन सिंह ने देश के आर्थिक परिदृश्य के लिए नए रास्ते खोले देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। पहले केंद्रीय वित्त मंत्री और बाद में प्रधान मंत्री के रूप में, वह एक दूरदर्शी नेता थे जिन्होंने देश के आर्थिक विकास को गति देने के लिए साहसिक कदम उठाए और देश की अर्थव्यवस्था के लिए नए दरवाजे खोलने के लिए क्रांतिकारी निर्णय लिए।

अजित पवार ने जताया शोक डिप्टी सीएम अजित पवार ने दुख जताते हुए एक पोस्ट शेयर की जिसमें उन्होंने लिखा 'पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के निधन की खबर से अत्यंत दुख हुआ। वे पूरी तरह से एक सज्जन व्यक्ति थे, उनका दृष्टिकोण हमारे देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया। इस कठिन समय में मेरे विचार और प्रार्थनाएँ उनके परिवार और दोस्तों के साथ हैं।'

अठावले बोले- देश को बड़ा नुकसान हुआ केंद्रीय मंत्री और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के नेता रामदास अठावले ने सिंह के निधन से पैदा हुई कमी को उजागर करते हुए दुख जताया है। अठावले ने कहा, 'पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह देश के बहुत ही प्रिय नेता थे। उन्होंने दस साल तक प्रधानमंत्री के तौर पर अच्छा काम किया। उन्होंने देश को अर्थव्यवस्था के मामले में मजबूती से आगे बढ़ाया। उनके जाने से देश को बहुत बड़ी क्षति हुई है।'

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

WR ने प्रतिष्ठित 'ATI स्पेशलिस्ट रेलवे सर्विस अवार्ड' २०२४ के मेधावी विजेताओं को सलाम किया

हर साल, भारतीय रेलवे अपने उन कर्मचारियों को सम्मानित करता है जिन्होंने विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और अनुकरणीय, उत्कृष्ट, मेधावी और सराहनीय प्रदर्शन किया है। इन अधिकारियों/कर्मचारियों को भारतीय रेलवे के लाखों रेल वे कर्मचारियों में से चुना जाता है। इस साल, भारतीय रेलवे ने १०१ कर्मचारियों और अधिकारियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार (एवीआरएसपी) से सम्मानित किया है। चयनित कर्मचारियों और अधिकारियों को रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने हाल ही में भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में ६९वें रेलवे सप्ताह केंद्रीय समारोह में सम्मानित किया।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस वर्ष पश्चिम रेलवे के आठ अधिकारियों/कर्मचारियों को वर्ष २०२३-२४ के दौरान उनके सराहनीय प्रदर्शन के लिए प्रतिष्ठित 'अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार' प्राप्त हुआ। इनमें से (१) डॉ. शिशिर कुमार राउल - अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य निदेशक; (२) विजय कुमार - स्टेशन खातों के वरिष्ठ यात्रा निरीक्षक; (३) श्रीमती मंजू मीणा - वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक; (४) नलिन लोचन गुप्ता - सीनियर डिवीजनल इलेक्ट्रिकल इंजीनियर/टीआरडी; (५) श्रीमती शुचिता अरोड़ा - डिवीजनल इलेक्ट्रिकल इंजीनियर/टीआरएस; (६) श्याम सुंदर शर्मा - डिवीजनल सिग्नल एंड टेलीकम्युनिकेशन इंजीनियर / (७) प्रशांत सिंह - उप मुख्य अभियंता; और (८) नरेंद्र कुमार - सीनियर डिवीजनल ऑपरेशंस मैनेजर। यह पुरस्कार न केवल अधिकारी/कर्मचारियों के लिए एक उपलब्धि है, बल्कि उनके परिवार के सदस्यों, सहकर्मियों और उनके निकट और प्रियजनों के लिए भी गर्व की बात है। पश्चिम रेलवे उनकी उपलब्धियों, कड़ी मेहनत और समर्पण की एक झलक दिखाता है जिसने उन्हें जीवन भर के इस अवसर को हासिल करने में मदद की।

पश्चिम रेलवे अपने कर्मचारियों और अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता है और उनके द्वारा दिखाए गए कठिन परिश्रम और समर्पण को सलाम

नए साल पर किसानों को CM देवेंद्र फडणवीस का तोहफा, वापस होंगी ३०-४० साल पुरानी जमीनें

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि क्लास-२ हो चुकी जमीनों को क्लास-१ करके किसानों को वापस की जाएंगी.

महाराष्ट्र के सीएम देवेंद्र फडणवीस ने बड़ा ऐलान किया है. किसानों को ३०-४० पुरानी जमीनें वापस की जाएंगी. सीएम फडणवीस ने कहा कि ये ऐसी जमीनें हैं जिनका बकाया रेवेन्यू किसान नहीं भर पाए. रेवेन्यू नहीं भरे जाने की वजह से ये जमीनें क्लास-२ की हो गई थीं. अब उन जमीनों को क्लास-१ बनाकर हमारी सरकार ने किसानों को वापस करने का फैसला किया है.

महाराष्ट्र भू-राजस्व संहिता, १९६६ (राजस्व विभाग) की धारा-२२० में कृषि योग्य भूमि संबंधी प्रावधान में संशोधन का निर्णय लिया गया है. सरकारी कर्मचारियों के वेतन और भत्ते के भुगतान के लिए मुंबई जिला सेंट्रल बैंक में व्यक्तिगत खाते खोलने की मंजूरी और निगमों और सार्वजनिक उपक्रमों (Public Undertakings) से अतिरिक्त धन निवेश करने के लिए प्राधिकरण और इसके लिए मानदंडों में छूट (वित्त विभाग) की बात कही गई है.

ठाणे में अवैध रूप से रहने के आरोप में आठ बांग्लादेशी नागरिक गिरफ्तार

पुलिस ने बताया कि एक गुप्त सूचना तथा शिकायत के आधार पर शनिवार और रविवार को भिवंडी शहर के काल्हेर और कोनगांव में छापेमारी की गई। इन आठों के पास भारत में रहने के लिए कोई वैध दस्तावेज नहीं थे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में अवैध रूप से रहने के आरोप में पुलिस ने एक महिला समेत आठ बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि एक गुप्त सूचना तथा शिकायत के आधार पर शनिवार और रविवार को भिवंडी शहर के काल्हेर और कोनगांव में छापेमारी की गई। इन आठों के पास भारत में रहने के लिए कोई वैध दस्तावेज नहीं थे।

पुलिस ने बताया कि इनमें से तीन कबाड़ बेचने का, दो मजदूर के तौर, एक राजमिस्त्री के तौर पर और एक अन्य प्लंबर के तौर पर काम करता है। अधिकारी ने बताया कि सभी के खिलाफ विदेशी नागरिक अधिनियम तथा भारतीय पासपोर्ट अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया है।

भारतीय रेलवे ने ६,४५० किलोमीटर ट्रैक नवीनीकरण पूरा किया, प्रमुख खंडों पर गति बढ़ाकर १३० किमी प्रति घंटे की कर दी

रेल मंत्रालय की रविवार को जारी वर्षांत समीक्षा के अनुसार, भारतीय रेलवे ने २०२४ में ६,४५० किलोमीटर ट्रैक नवीनीकरण, ८,५५० टर्नआउट नवीनीकरण और २,००० किलोमीटर से अधिक की गति को बढ़ाकर १३० किमी प्रति घंटे कर दिया। इसने २०२४ में ३,२१० रूट किलोमीटर पटरियों का विद्युतीकरण भी किया, विद्युतीकृत ब्रॉड गेज (बीजी) नेटवर्क को ९७ प्रतिशत तक विस्तारित किया, जिसमें अक्षय ऊर्जा क्षमता २,०१४ मेगावाट तक पहुंच गई। समीक्षा में कहा गया है कि पीक सीजन के दौरान २१,५१३ विशेष ट्रेनों के साथ-साथ वर्ष के दौरान रिकॉर्ड १३६ वंदे भारत ट्रेनें और पहली नमो भारत रैपिड रेल शुरू की गईं।

समीक्षा में कहा गया कि १०,००० रेल इंजन कवच सुरक्षा प्रौद्योगिकी से लैस किए जा रहे हैं और रेलवे नेटवर्क पर सुरक्षा में सुधार के लिए आधुनिकीकरण अभियान के हिस्से के रूप में १५,००० किलोमीटर मार्ग के लिए निविदाएं आमंत्रित की गई हैं। रेलवे ने २०२४ में १,४७३ मिलियन टन माल ढुलाई भी की, जिससे कमाई बढ़ाने के लिए ३.८६ प्रतिशत की वृद्धि हासिल हुई, जिसमें पूर्वी समर्पित फ्रेट कॉरिडोर (ंइ्रण) और वेस्टर्न डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (ेइ्रण) ने ७२,००० से अधिक ट्रेन रन की सुविधा प्रदान की। इसके अलावा, अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत १,३३७ स्टेशनों में से १,१९८ स्टेशनों के पुनर्विकास पर काम शुरू हो गया। अन्य स्टेशन निविदा और योजना के विभिन्न चरणों में हैं। समीक्षा रिपोर्ट में कहा गया है कि देश भर में रेल वे स्टेशनों के पुनर्विकास का अर्थव्यवस्था पर गुणक प्रभाव पड़ेगा, रोजगार सृजन में वृद्धि होगी और आर्थिक विकास में सुधार होगा।

छह रेलवे स्टेशनों अर्थात पश्चिम मध्य रेलवे का रानी कमलापति स्टेशन, पश्चिम रेलवे का गांधीनगर राजधानी स्टेशन, दक्षिण पश्चिम रेलवे का सर एम विश्वेश्वरैया टर्मिनल स्टेशन, पूर्वोत्तर रेलवे का गोमती नगर रेल वे स्टेशन का पहला चरण, उत्तर रेलवे का अयोध्या रेलवे स्टेशन और पूर्व तट रेलवे का कटक रेलवे स्टेशन विकसित और चालू किया गया है। रिपोर्ट में कहा गया है।

रेलवे ने ८० स्टेशनों और ७८ संरचनाओं सहित विरासत स्थलों का डिजिटलीकरण भी किया, जबकि घूम जैसे त्योहारों ने पर्यटन को बढ़ावा दिया। हाथियों से जुड़ी दुर्घटनाओं को रोकने के लिए पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) में एक संवेदनशील स्थान पर २०८ करोड़ रुपये की कुल लागत से नो एलिफेंट इंट्रूजन डिटेक्शन सिस्टम (ईआईडीएस) भी शुरू किया गया है। रेलवे बोर्ड ने क्षेत्रीय रेलों और क्रिस को राष्ट्रीय गाड़ी पूछताछ प्रणाली (एनटीईएस) के साथ एकीकृत कोच मार्गदर्शन प्रणाली (सीजीएस) और गाड़ी संकेतक बोर्डों (टीआईबी) की निगरानी के लिए एक एप्लीकेशन विकसित करने की भी सलाह दी है।इसके अलावा, उच्च स्तर की संरक्षा और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए लोको पायलटों और गार्डों के बीच संचार के लिए भारतीय रेलों पर डिजिटल अति उच्च आवृत्ति (वीएचएफ) सेटों का उपयोग शुरू किया गया है।

समीक्षा में कहा गया है कि डिजिटल प्रौद्योगिकी आधारित वीएचएफ सेटों द्वारा दिए जाने वाले लाभों का लाभ उठाने के लिए, रेलवे बोर्ड ने भारतीय रेलवे में केवल डिजिटल ५ वॉकी-टॉकी सेट खरीदने को मंजूरी दी है।

टिकट जांच अभियान के दौरान जुर्माने के रूप में ९३ करोड़ रुपये से अधिक की राशि वसूली

पश्चिम रेलवे पर सभी वास्तविक यात्रियों को परेशानी मुक्त, आरामदायक यात्रा और बेहतर सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए, मुंबई उपनगरीय स्थानीय सेवाओं, मेल / एक्सप्रेस के साथ-साथ यात्री ट्रेनों और अवकाश विशेष ट्रेनों में लगातार गहन टिकट जांच अभियान चल ाए जा रहे हैं ताकि बिना टिकट / अनियमित यात्रियों के खतरे को रोका जा सके। पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारियों की देखरेख में अत्यधिक प्रेरित टिकट चेकिंग टीम ने अप्रैल से नवंबर २०२४ के महीनों के दौरान कई टिकट चेकिंग ड्राइव आयोजित किए, जिससे ९३.४७ करोड़ रुपये की राशि वसूल की गई, जिसमें मुंबई उपनगरीय खंड से ३०.६३ करोड़ रुपये भी शामिल हैं।

उपमा

सामग्री
१ कप रवा / सूजी, मोटे
¾ कप पोहा , पतला
½ कप दही
२ टी स्पून चीनी
२ कप पानी
½ टी स्पून नमक
½ टी स्पून ईनो, फ्रूट साल्ट

विधिः सबसे पहले, एक छोटी मिक्सी में १ कप रवा और ¾ कप पोहा लें। बिना पानी डालकर फाइन पाउडर में ब्लेंड करें। अब इसमें ½ कप दही, २ टी स्पून चीनी, ½ टी स्पून नमक और १ कप पानी डालें। जब तक कोई गांठ न रहे, तब तक अच्छी तरह मिलाइए। अब १ कप पानी डालें और अच्छी तरह मिलाइए। स्मूथ फ़्लोइंग स्थिरता बैटर बनने तक मिलाइए। अब ½ टी स्पून इनो डालें और धीरे से मिलाइए। एक बार बैटर जमने के बाद, तुरंत गर्म तवा के ऊपर डालें।

आंच को मध्यम रखें और जब तक अप्पम के ऊपर से अच्छी तरह से पक न जाए तब तक पकाएं। अंत में, नारियल की चटनी के साथ इंस्टेंट रवा अप्पम सर्व करें।

दाल मखनी

सामग्रीः
100 ग्राम -काली साबुत उड़द दाल
50 ग्राम- काला चना या राजमा
1/4 खाने का सोडा
4-टमाटर
2-3- हरी मिर्च
थोड़ा सा - अदरक
2-3 टेबल स्पून -देशी घी
थोड़ी सी- हींग
1/2 चम्मच- जीरा
1/4 चम्मच -हल्दी पाउडर
1/4 चम्मच- लाल मिर्च पाउडर
1/4 चम्मच - गरम मसाला
स्वादुनासार -नमक
कटी हुयी हरी धनिया

विधिः

उड़द और चने या राजमा को धो कर 8 घंटे या रात में ही पानी में भिगो दें। इसके बाद दाल को धोकर कुकर में डालें। इसमें खाने वाला सोडा और नमक डाल कर पानी डाल ें और उबाल लें। अब टमाटर, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट तैयार कर ल ें। इसके बाद कढ़ाई में घी डाल कर हींग और जीरा का तड़का लगाएं। इसके बाद इसमें कद्दूकस की हुई अदरक(थोड़ी सी), हल्दी पाउडर, धनियां पाउडर और लाल मिर्च पाउडर डाल कर अच्छे से मिक्स करें। अब मसाले में टमाटर, हरी मिर्च का पेस्ट और क्रीम या मक्खन डालें। इसके बाद इस पूरे मिश्रण को अच्छे से भूनें। जब मसाला अच्छे से भुन जाए तो इसमें दाल डालकर मिक्स करें और आवश्यकतानुसार पानी मिलाएं। दाल को उबाल आने तक अच्छे से धीमी आंच पर पकाएं। इसके बाद हरी धनिया से गार्निश करके सर्व करें।

सरसों का साग

सामग्रीः
सरसों के पत्ते - ४-५ कप
पालक कटी - ४-५ कप
प्याज कटा - १/२ कप
अदरक कटा - १ टेबलस्पून
लहसुन कटा - १ टेबलस्पून
हरी मिर्च कटी - १ टेबलस्पून
जीरा - १ टी स्पून
हल्दी - १/२ टी स्पून
लाल मिर्च पाउडर - १ टी स्पून
हींग - १ चुटकी
तेल - १-२ टेबलस्पून
नमक - स्वादानुसार

विधिः सरसों का साग बनाने के लिए सबसे पहले सरसों के पत्ते लेकर उन्हें अच्छे से धोकर उसके बारीक-बारीक टुकड़े कर लें. इसके बाद पालक को धोकर उसके डंङ्गल अलग करें और बारीक काट लें. अब एक गहरे तले वाली कड़ाही में पानी डाल कर गर्म करें. जब पानी उबलने लगे तो उसमें सरसों के पत्ते और पालक के पत्ते डालकर मिलाएं और सभी को ४-५ मिनट तक पकने दें. इस दौरान बीच-बीच में इसे चलाते भी रहें.तय समय के बाद एक छलनी लें और उसकी मदद से सरसों के पत्तों और पालक पत्तों का सारा अतिरिक्त पानी निकाल दें. इसके तत्काल बाद सरसों, पालक को ठंडा पानी से दो बार धोकर अच्छी तरह से छान लें. पानी निथारने के बाद इन्हें कुछ देर के लिए अलग रख दें. अब मिक्सर में आधा कप पानी और सरसों, पालक के पत्ते डालकर ग्राइंड कर पेस्ट तैयार कर लें. इस पेस्ट को एक बर्तन में निकालकर अलग रख दें.

अब एक कड़ाही में तेल जब तेल गर्म हो जाए तो उसमें जीरा और हींग डालकर कुछ सेकंड तक भूनें. फिर बारीक कटा लहसुन और अदरक डालकर फ्राई करें. ३० सेकंड तक भूनने के बाद इसमें बारीक कटा प्याज डालकर एक- दो मिनट तक पकाएं. जब प्याज का रंग बदलने लगे तो इसमें सरसों-पालक का पेस्ट डालकर मिक्स कर दें और २ मिनट तक पकाएं.अब साग में हल्दी, लाल मिर्च पाउडर और स्वादानुसार नमक डालकर मिलाएं और सरसों साग को ३-४ मिनट के लिए धीमी आंच पर पकने दें. इस दौरान साग को बीच-बीच में चलाते भी रहें. सरसों का साग तैयार है.

चिली गार्लिक ब्रेडस्टिक्स

सामग्री
¼ कप मक्खन, नरम
6 लहसुन, ग्रेट किया हुआ
2 टेबल स्पून धनिया पत्ती,
1 टी स्पून मिक्स्ड हर्ब्स
1 टी स्पून चिल्ली फ़्लेक्स
¼ टी स्पून सफेद मिर्च पाउडर
¼ टी स्पून नमक
4 स्लाइस ब्रेड, सफेद या भूरा

विधिः सबसे पहले, एक छोटे कटोरे में ¼ कप मक्खन और ६ लहसुन लें। २ टेबल स्पून धनिया पत्ती, १ टीस्पून मिक्स्ड हर्ब्स, १ टीस्पून चिल्ली फ्लेक्स, ¼ टीस्पून सफेद मिर्च पाउडर और ¼ टीस्पून नमक मिलाएं। अच्छी तरह से मिश्रण करें। अब ब्रेड के साइड्स को स्ट्रिप्स में काट लें। ब्रेड स्ट्रिप्स पर लहसुन मक्खन फैलाएं। तवे पर ब्रेडस्टिक्स को टोस्ट करें। ब्रेड को गोल्डन ब्राउन होने तक पलट-पलट कर पकाएं। अंत में, अधिक चिल्ली फ़्लेक्स के साथ चिली गार्लिक ब्रेडस्टिक्स का आनंद लें।

पोषक तत्वों से भरपूर अंजीर

- अंजीर में उच्च मात्रा में पोटेशियम होता है जो आपके शरीर में शुगर के स्तर को नियंत्रित रखता है।
- अंजीर में अच्छी मात्रा में फाइबर पाया जाता है जो कब्ज की समस्या को दूर करने में मदद करता है। यह पाचन में सुधार करने के साथ-साथ एसिडिटी की समस्या को भी दूर करता है।
- अंजीर में पेक्टिन नाम का सॉ ल्युबल फाइबर होता है जो खून में मौजूद बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए जाना जाता है। अंजीर का सेवन करने से कोलेस्ट्रॉल लेवल नियंत्रित रहता है।
- शरीर में आयरन की कमी होने से व्यक्ति एनीमिया का शिकार हो जाता है। सूखे अंजीर को आयरन का बेहतरीन सोर्स माना जाता है। एनीमिया के रोगियों को अंजीर खाना चाहिए।
- अंजीर खाने से शरीर के अंदर म्यूकस झिल्लियों को नमी मिलती है और कफ साफ होता है, जिससे अस्थमा के मरीज को राहत मिलती है।
- हड्डियों की मजबूती के लिए कैल्शियम बहुत जरूरी होता है और अंजीर में कैल्शियम भी पाया जाता है जो हड्डियों को मजबूत बनाए रखने में मदद करता है।

टूटे रिश्ते...

कहते है रिश्ते की डोर को ज्यादा कस के या फिर ढील देने से रिश्ते कमजोर हो जाते हैं। और कई बार इतने कमजोर रिश्तों के टूटने पर बन आती है। फिर एक बार अगर रिश्ता टूट जाए तो उसे जोड़ना उतना ही मुश्किल हो जाता है। अगर आपके रिश्ते में भी टूटने की नौबत आ गई है तो ये तरीके टूटे हुए रिश्ते को जोड़ने के काम आ सकते हैं।

अगर आप रिश्ता जोड़ने के लिए टॉ पिक को घुमा रहे हैं तो आपको सावधान रहना होगा। आप जो महसूस करते हैं उस पर चर्चा करते समय हमेशा सेंसेटिव रहें। एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करें।

अक्सर लड़ाई या बहस के दौरान ल ोग एक ही बात को खींचते चले जाते हैं जो एक संभावित ट्रिगर हो सकता है। एक-दूसरे के ट्रिगर को पुश करने से दुश्मनी बढ़ती है। किसी भी परिस्थिति में ऐसा करने से बचें ।

किसी भी रिश्ते को सफल बनाने के लिए माफी मांगना जरूर सीखें। ये बात अक्सर घर के बड़े बच्चों को समझाते हैं कि माफी मांगने से कोई बड़ा या छोटा नहीं हो जाता। इस मूल मंत्र को आप भी याद रखें तो रिश्ते में जब जरूरी हो तब मांफी मांगे। अपनी गलतियों को जल्दी स्वीकार कर लेना ही सही है।

अगर बातचीत करने और फिर से जोड़ने की कोशिश करने के कई प्रयासों के बावजूद, आप खुद को ऐसी स्थिति में पाते हैं जहां कोई जीत नहीं है तो यह आपके जाने का संकेत है। कभी-कभी, जाने देना अपने और अपने साथी के प्रति सबसे अच्छा इशारा होता है।

सौंदर्य का खजाना मुल्तानी मिट्टी

अधिकांश लोग फेस को ग्लोइंग बनाने के लिए महंगे कॉस्मेटिक्स का यूज करते हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं वाकई में फेस को ग्लोइंग बनाने के लिए प्रचीन समय में ये साधन नहीं थे। फिर भी लोगों की स्किन आज से ज्यादा ग्लोइंग हुआ करती थी। इसका कारण था कि वे कुछ खास तरह के घरेलू नुस्खों का उपयोग करते थे। ये नेचुरल कंडीशनर भी है और ब्लीच भी। ये सौन्दर्य निखारने का सबसे सस्ता और आयुर्वेदिक नुस्खा है।

आधा चम्मच संतरे का रस लेकर उसमें ४-५ बूंद नींबू का रस, आधा चम्मच मुल्तानी मिट्टी, आधा चम्मच चंदन पाउडर और कुछ बूंदें गुलाब जल की मिलाकर थोड़ी देर के लिए फ्रिज में रख दें। फिर इसे लगा कर १५-२० मिनट तक रखें। इसके बाद पानी से इसे धो दें। यह ऑयली त्वचा का सबसे अच्छा उपाय है। यंग एज में मुहांसे एक आम समस्या होती है। मुहांसों से परेशान युवाओं के लिए मुल्तानी मिट्टी का फेसपैक बहुत

एक गिलास मेथी का पानी...

भारत में लोग मेथी काफी चाव से खाते है। यहाँ लोग मेथी कभी सब्जी में कभी पराठें में तो कभी लड्डू के रूप में सेवन करते हैं मगर हम में से बहुत कम लोग ही मेथी के फायदे के बारे में जानते हैं। आयुर्वेदिक विशेषज्ञों के मुताबिक मेथी में अनेक प्रकार के विटामिन और मिनरल्स पाए जाते हैं जो काफी लाभदायक होते हैं। मेथी की मदद से हम अनेक प्रकार के रोग व बीमारियों का इलाज कर सकते हैं। मेथी के बीज में एंटी-ऑक्सिडेंट्स अच्छी मात्रा में मौजूद होते हैं। आयुर्वेद एक्सपर्ट के मुताबिक मेथी के बीजों का पानी स्वास्थ्य के लिए काफी फायदेमंद होता है, खासकर जब आप इसे सुबह खाली पेट पीते हैं। मेथी के पानी का इस्तेमाल बाल, त्वचा के लिए भी किया जाता है। मेथी के अंदर बहुत से तत्व पाए जाते हैं, जो शरीर के लिए जरूरी हैं। मेथी में प्रोटीन, टोटल लिपिड, ऊर्जा, फाइबर, कैल्शियम, आयरन, फास्फोरस, पोटैशियम, जिंक, मैंगनीज, विटामिन सी, विटामिन बी, सोडियम, कार्बोहाइड्रेट आदि तत्व मौजूद होते हैं। मेथी का पानी बनाने के लिए आपको बहुत ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं है। एक से डेढ़ चम्मच मेथी दानों को रात को एक गिलास साफ पानी में भिगो दें। सुबह उठकर इस पानी को अच्छे से छान लें और फिर इसे खाली पेट पीएं। अगर आप चाहे तो मेथी दाने को बाद में भी खा सकते हैं।

सुबह खाली पेट मेथी पानी पीने से शरीर में मौजूद विषाक्त तत्व बाहर निकल जाते हैं। मेथी गर्म होती है, इसलिए प्रेगनेंसी में महिलाएं केवल डॉक्टर की सलाह पर ही इसका सेवन करें। सुबह खाली पेट मेथी का पानी पीने से वजन कम करने में मदद मिलती है। यह कोलेस्ट्रॉल को काफी तेजी से कम करता है। यह एसिडिटी की प्रॉब्लम को दूर करता है, पाचन शक्ति को इम्प्रूव करता है और पेट की कई समस्याओं जैसे एसिडिटी कब्ज की प्रॉब्लम को दूर करता है। मेथी का पानी ब्लड शुगर लेवल को भी कंट्रोल करता है। जोड़ों के दर्द को कम करता है।

आधुनिकता बनाम फिजूलखर्ची: आज के विवाहोत्सव के परिपेक्ष्य में...

आज का युग सोसल मीडिया का युग है। २१वीं सदी का भारत सूचना तकनीक संपन्न भारत है।इसीलिए आज हमारी समस्त सनातनी शाश्वत परम्पराएं,हमारे सोलहों संस्कार,पूजा विधि-विधान,समस्त लौकिक रीति-रिवाज आदि पर आधुनिकता का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे रहा है जो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में सबसे बड़ा बाधक है।सच कहा जाय तो हमारा तन-मन पूरी तरह से आधुनिकता में रंग चुका है। आज का दो साल का शिशु भी बिना वीडियो देखे-सुने मां का दूध नहीं पीता है। कुछ महीने पहले भारत के मशहूर पूंजीपति मुकेश अंबानी के छोटे बेटे अनंत अंबानी की शादी में कुल लगभग पांच सौ करोड़ रुपये मात्र खर्च हुए जबकि हमारी शाश्वत वैवाहिक परम्पराओं का पूरा-पूरा खयाल रखा गया जो एक प्रशंसनीय और अनुकरणीय पहल रही।

आज सबसे बड़ी चिंता तो शादी-विवाह के नाम पर आधुनिकता को लेकर है जो वास्तव में फिजूलखर्ची का पर्याय बन चुका है। अब तो पांच सितारे होटलों में नहीं सात सितारे होटलों में शादी-विवाह का आयोजन लड़का-लड़कीवाले पक्ष के लिए शान-शौकत और गौरव-गरिमा बन चुका है। आज का विवाहोत्सव आधुनिकता से पूरी तरह से प्रभावित हो चुका है। दुल्हा-दुल्हिन के साज-श्रृंगार पर ही लाखों रुपये आज खर्च किए जा रहे हैं। ऊपर से घरवालों तथा समस्त सगे-संबंधियों के श्रृंगार-पटार का खर्चा तो अलग से लाखों में हो रहा है। पहले विवाह के लिए लड़की पक्षवाले लड़के को देखने के लिए आते थे लेकिन आज तो सबसे पहले लड़की अपने योग्य वर की तलाश स्वयं करती है उसके उपरांत लड़के पक्षवाले लड़की पक्षवाले के घर आते हैं। पहले शादी-विवाह करानेवाले की चांदी रहती थी लेकिन अब तो शादी-विवाह के ऐप पर भी लड़की-लड़का अपनी पसंद से तलाश फ्री करते हैं फाइनल होने पर ही विवाह-शादी ऐपवाले अपनी फीस लेते हैं।

एक समय वह भी था जब गांव- घर में शादी-विवाह पूरी तरह से एक सामाजिक जिम्मेदारी होती थी, नाई, धोबी, दर्जी, कुम्हार से लेकर शादी का माड़ो (मण्डप) तैयार करनेवाले, उसे सजानेवाले सभी गांव के बालक-युवा होते थे।

विवाह करनेवाले परिवार को लगता था कि उसकी सामाजिक मर्यादा उसके बेटे-बेटी के विवाह में समाज के लोगों के सामूहिक रुप से हिस्सेदारी से ही मिलती है। लेकिन आज विवाहोत्सव के नाम पर दिन-प्रतिदिन बढ़नेवाली फिजूलखर्ची चिंता का मुख्य कारण बन चुकी है। आज तो लड़कीवाले की आमदनी अठन्नी तो खर्चा रुपैया हो चुका है। आज तो

गावों में भी अत्याधुनिक टेन्टवाले, डीजेवाले, डांसपार्टीवाले और डेकोरेटर आदि आसानी से परन्तु महंगे दर पर उपलब्ध हैं।

गांवों में आज शादी-विवाह के लिए किराये पर कीमती-चमचमाती कारें भी उपलब्ध हैं जो जब लड़कीवाले के घर पर बाराती को लेकर पहुंचती हैं तो पूरा गांव बाराती के साथ-साथ कारों को देखने के लिए उमड़ पड़ता है। आजकल गांव के धोबी, हजाम, कुम्हार और दर्जी आदि का स्थान क्रमशः ड्राईक्लीनर्स, सैलून और रेडीमेड कपड़े की दुकानवाले ले चुके हैं। आज तो चट मंगनी, पट विवाह हो चुका है जिसमें लाखों-करोड़ों का खर्चा आ रहा है। सबसे बड़ी चिंता तो यह है कि विवाह के कुछ ही दिनों के बाद तलाक का प्रचलन भी तेजी से बढ़ रहा है। आज धूमधाम से शादी हुई और ठीक एक महीने के बाद तलाक के लिए अदालत का चक्कर शुरु हो गया जिसमें लड़केवाले अधिक पीस रहे हैं। आधुनिकता के नाम पर विवाहोत्सव में फिजूलखर्ची के लिए आज जनजागरण की आवश्यकता है। विवाह से संबंधित गांव तथा जातीय संगठन को मजबूत बनाने की आवश्यकता है। विवाह में लेन-देन को पूरी तरह से बंद की आवश्यकता है। बच्चों के स्कूली पाठ्यक्रम में तथा युवाओं के उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम में सादगीपूर्ण विवाह के महत्त्व को स्पष्ट रुप में रखना होगा।

भारत के मध्यम वर्ग को अधिक से अधिक सचेत करना होगा। विवाह के नाम पर फिजूलखर्ची के अंधाधुंध अनुकरण को बंद करना होगा। जिसप्रकार अरबपति मुकेश अंबानी ने अपनी बेटी ईशा अंबानी की शादी पूरी सादगी के साथ किया था उसी प्रकार सभी अरबपतियों को सनातनी संस्कार-संस्कृति को ध्यान में रखकर पूरी सादगी के साथ विवाहोत्सव मनाना चाहिए।

हमारी केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी जी लोक कल्याणकारी सरकार तथा राज्य की समस्त सरकारों को भी सादगीपूर्ण विवाह के आयोजन के लिए तथा विवाहोत्सव के नाम पर फिजूलखर्ची को बंद करने के लिए कारगर कानून बनाने होंगे। सबसे बड़ी पहल तो यह होनी चाहिए कि लड़का-लड़की को शादी-विवाह और तलाक आदि से संबंधित सोसलमीडिया मंच को विवाह से पूर्व बंद करना होगा। देश के युवा-युवती की विवाह से संबंधित अपनी-अपनी गलत सोच को बदलना होगा क्योंकि जोड़ियां तो ऊपर से बनकर आती हैं जिसे पूरी सादगी के साथ विवाह-संस्कार में अपनाना चाहिए और तभी जाकर विवाहोत्सव की फिजूलखर्ची बंद होगी और २०४६ तक भारत पूरी तरह से एक विकसित राष्ट्र बन सकता है। ■

-अशोक पाण्डेय

Contact: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in

मेष राशि

मेष राशि के जातकों के लिए जनवरी माह की शुरुआत मिश्रित फलदायी रहने वाली है। जनवरी माह के दूसरे सप्ताह में व्यवसाय से होने वाले लाभ में कमी देखने को मिल सकती है। इस दौरान बाजार में अचानक से आई मंदी से जूझना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों पर अचानक से कामकाज का बोझ बढ़ सकता है। कार्यक्षेत्र में कामकाज के दबाव के कारण आप पर शारीरिक एवं मानसिक दबाव बना रहेगा। करियर-कारोबार में आपको माह के उत्तरार्ध में जाकर ही अनुकूलता बन पाएगी। तब तक आपको बहुत सावधानी के साथ काम करना होगा। माह के उत्तरार्ध का समय कला जगत से जुड़े लोगों के लिए शुभ साबित होगा। आर्थिक दिक्कत से बचने के लिए माह की शुरुआत से ही धन का प्रबंधन करके चल `। इस माह आपको अपनी सेहत और संबंध का विशेष ध्यान रखना होगा। माह के मध्य में किसी बात को लेकर लव पार्टनर अथवा लाइफ पार्टनर से तकरार हो सकती है। स्वजनों के साथ मतभेद मनभेद में न बदल ने पाए इसका आपको ख्याल रखना होगा।

वृषभ राशि-

वृष राशि के जातकों के लिए साल का पहला महीना थोड़ा उतार-चढ़ाव लिए रहने वाला है। जनवरी २०२५ की शुरुआत थोड़ी संघर्ष भरी रह सकती है। इस दौरान आपको छोटे-छोटे कार्यों को पूरा करने के लिए भी अधिक परिश्रम और प्रयास करने पड़ सकते हैं। करियर-कारोबार से जुड़े आवश्यक कार्यों को पूरा करते समय कुछेक अड़चनें भी आ सकती हैं। वृष राशि के जातकों के लिए जनवरी के उत्तरार्ध का समय राहत भरा रहने वाला है। इस दौरान करियर-कारोबार के सिलसिले में की गई यात्राएं सुखद एवं लाभप्रद साबित होंगी। परीक्षा-प्रतियोगिता में मनोकूल परिणाम प्राप्त होंगे। रिश्ते-नाते की बात करें तो माह के पूर्वार्ध में स्वजनों के साथ सामंजस्य में कमी देखने को मिल सकती है। हालांकि माह के उत्तरार्ध तक सभी गलतफहमियां दूर हो जाएंगी। प्रेम संबंध में सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाएं। माह के उत्तरार्ध का समय वैवाहिक सुख की दृष्टि से उत्तम है।

मिथुन राशि-

मिथुन राशि के जातकों के लिए साल के पहले महीने में धन और समय का बहुत प्रबंधन करके चलने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान आपको सोचे हुए कार्य को पूरा करने के लिए थोड़ा अतिरिक्त परिश्रम और प्रयास करना पड़ेगा। करियर हो या कारोबार आपको कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने विरोधियों से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है। यदि आप व्यवसायी हैं तो अपना धन किसी योजना अथवा कारोबार में खूब सोच-समझकर लगाएं। सेहत की दृष्टि से भी जनवरी माह के पूर्वार्ध का समय थोड़ा दिक्कत लिए रह सकता है। इस दौरान मौसमी बीमारी अथवा किसी पुराने रोग के उभरने पर अपना विशेष ख्याल रखें। माह के मध्य में आपके सिर पर अचानक से कोई बड़ा खर्च आ सकता है। इस दौरान संतान से जुड़ी कोई बड़ी चिंता सताएगी।

कर्क राशि-

कर्क राशि के जातकों के लिए जनवरी का महीने की शुरुआत सेहत और संबंध की दृष्टि से बहुत ज्यादा उत्साहजनक नहीं कही जा सकती है। यात्रा थकान भरी और अपेक्षा से कम फलदायी साबित होने के कारण आपका मन खिन्न रहेगा। नौकरीपेशा लोगों को इस पूरे माह कार्यक्षेत्र में काम करते समय किसी भी प्रकार की लापरवाही करने से बचना चाहिए अन्यथा आप न सिर्फ अपने बॉस के गुस्से के शिकार हो सकते हैं, बल्कि आपकी नौकरी भी खतरे में आ सकती है। व्यवसाय से जुड़े लोग यदि अपने कारोबार से जुड़े फैसले खूब सोच-समझकर कर करते हैं तभी उन्हें मनचाहे लाभ की प्राप्ति संभव हो पाएगी। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को अधिक परिश्रम की आवश्यकता बनी रहेगी। माह के उत्तरार्ध में अचानक से कुछेक बड़े खर्च आ सकते हैं। इस दौरान आपको करियर-कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा पर निकल ना पड़ सकता है। यात्रा सुखद एवं मनचाहा फल देने वाली साबित होगी।

सिंह राशि-

जनवरी महीने की शुरुआत किसी शुभ सूचना से होगी। इस पूरे माह आपके साथ गुडलक बना रहेगा। यदि आप किसी विशेष क्षेत्र में रोजी-रोजगार की तलाश में हैं तो इस माह आपकी मनोकामना पूरी हो जाएगी। किसी मित्र अथवा प्रभावी व्यक्ति की मदद से आप अपने सपने को सच करने में कामयाब हो जाएंगे। इस माह आपका करियर तेजी से आगे बढ़ता हुआ नजर आएगा। माह के दूसरे सप्ताह में आपको कार्यक्षेत्र में उच्च पद की प्राप्ति अथवा बड़ी जिम्मेदारी का मिलना संभव है। राजनीति और समाज सेवा से जुड़े हुए लोगों के सितारे बुलंदी पर हैं। आपके यश एवं लोकप्रियता में वृद्धि होगी। माह के मध्य में आपको किसी विशेष सम्मान से नवाजा जा सकता है। सिंह राशि के जातकों को इस माह विभिन्न स्रोतों से आय होगी ल `किन साथ ही साथ सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर आप खूब खर्च भी करेंगे। माह के उत्तरार्ध में कारोबार के विस्तार की योजना

फलीभूत होती हुई नजर आएगी। इस दौरान आप कारोबार में अच्छा लाभ कमाएंगे। आपको इस अवधि के दौरान पेशेवर जीवन में बड़े एवं सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे।

तुला राशि-

माह की शुरुआत में आप किसी बहुप्रतीक्षित कार्य को पूरा करने में कामयाब हो जाएंगे। इस दौरान आपको सौभाग्य का पूरा साथ मिलेगा। सेहत की दृष्टि से इस दौरान आपका जोश-पराक्रम बढ़ा-चढ़ा रहेगा। परिजनों का परस्पर सहयोग और प्रेम बना रहेगा। कार्यक्षेत्र में आप किसी नये प्रोजेक्ट से जुड़ सकते हैं। व्यवसाय से जुड़े लोगों को माह के पूर्वार्ध में मनचाहा लाभ होगा। बाजार में आपकी साख बढ़ेगी। इस दौरान आर्थिक मामलों में बड़ी उपलब्धि के योग बन रहे हैं। इस दौरान व्यवसाय के विस्तार के लिए धन की व्यवस्था बड़ी सरलता से हो जाएगी। आप अपने कारोबार के लिए नई नीतियां बना सकते हैं। माह के तीसरे हफ्ते में आपको कोई भी कदम खूब सोच-समझकर आगे बढ़ाने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान आप किसी चीज का आकलन करने में बड़ी गलती कर सकते हैं। यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो दूसरों के भरोसे अपना कार्य न छोड़ें अन्यथा बना-बनाया काम भी बिगड़ सकता है।

वृश्चिक राशि-

इस माह आपको अपने काम को पूरे मनोयोग के साथ समय पर करने की आवश्यकता बनी रहेगी। थोड़ी सी भी लापरवाही या आलस्य से आपके बने-बनाए काम बिगड़ सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को माह की शुरुआत में कामकाज से जुड़ी कुछेक मुश्किलें आ सकती हैं लेकिन आप अपनी बुद्धि और विवेक तथा इष्टमित्रों की मदद से उसे दूर करने में अंततः कामयाब हो जाएंगे। माह के दूसरा सप्ताह थोड़ा राहत भरा रहने वाला है। इस दौरान कार्यक्षेत्र में सकारात्मक संभावनाएं बनेंगी। वृश्चिक राशि के जातकों को इस माह आर्थिक मामलों में योजनाबद्ध तरीके से काम करने पर ही लाभ होगा। यदि आप पार्टनरशिप में कारोबार करते हैं तो कागजी काम समय पर निबटाएं और धन का लेनदेन करते समय खूब सावधानी बरतें। कारोबार से जुड़ी बड़ी डील करने से पहले अथवा कोई बड़ा निर्णय लेने से पहले अपने शुभचिंतकों की सलाह अवश्य लें।

धनु राशि-

धनु राशि के जातकों को माह के पूर्वार्ध में अपने इष्टमित्रों और स्वजनों से ज्यादा अपेक्षाएं नहीं पालनी चाहिए अन्यथा उसके न पूरे होने पर आपके भीतर निराशा के भाव जाग सकते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से जनवरी माह का पूवार्ध शुभ रहने वाला है। इस दौरान आप जितना परिश्रम और प्रयास करेंगे आपको उतनी ही सफलता प्राप्त होगी। जनवरी के मध्य में आपकी मुलाकात किसी प्रभावी व्यक्ति से होगी। जिसके जरिए आपको भविष्य में लाभ की योजना से जुड़ने का अवसर प्राप्त होगा। इस दौरान कार्यक्षेत्र में आपके कामकाज की खूब तारीफ होगी। कार्यक्षेत्र हो या फिर निजी जीवन आप अपनी बुद्धि और विवेक से प्रत्येक जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाने में कामयाब होंगे। रिश्ते-नाते की दृष्टि से पूर्वार्ध का कुछ समय मिश्रित फलदायी रहने वाला है। इस दौरान आपके जीवनसाथी के साथ तालमेल में कमी देखने को मिल सकती।

मकर राशि-

इस माह आपके काम कभी बनते तो कभी अटकते हुए नजर आएंगे। ऐसे में आपको अपने किसी भी कार्य में लापरवाही करने से बचना चाहिए। माह की शुरुआत में आप अपने किसी परिजन की सेहत अथवा उससे जुड़ी किसी अन्य समस्या को लेकर चिंतित रह सकते हैं। वित्तीय दृष्टि से जनवरी महीने का पूर्वार्ध थोड़ा प्रतिकूल रहने वाला है। इस दौरान आय के मुकाबले व्यय की अधिकता रहेगी। टारगेट ओरिएंटेड काम करने वालों को अपने लक्ष्य पूर्ति में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। माह के मध्य में आपको सौभाग्य का साथ मिलना प्रारंभ हो जाएगा। इस दौरान आप अपने साहस एवं परिक्रम से कुछ लाभकारी निर्णय लेने में कामयाब हो जाएंगे। अचानक से किसी तीर्थ स्थान की यात्रा के योग बनेंगे। माह के उत्तरार्ध में घरेलू महिलाओं का अधिकांश समय पूजा-पाठ में बीतेगा। माह के उत्तरार्ध में आपको अति भावुकता अथवा असमंजस में आकर कोई बड़ा निर्णय लेने से बचना चाहिए।

कुंभ राशि-

माह की शुरुआत में यदि आप कार्यक्षेत्र में अपने सीनियर और जूनियर के साथ बेहतर तालमेल बिठाते हुए कार्य करते हैं तो आपको मनचाही सफलता मिल सकती है। इस माह आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर पूरा नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी। माह के दूसरे सप्ताह में आपको करियर और कारोबार के सिलसिले में लंबी दूरी की यात्रा करनी पड़ सकती है। यात्रा थकान भरी और उम्मीद से कम फलदायी साबित होने पर आपके मन में हताशा के भाव जाग सकते हैं। इस दौरान योजनाबद्ध तरीके से कारोबार करने पर ही आर्थिक लाभ होने की संभावना बनेगी। माह के मध्य में नौकरीपेशा जातकों पर अचानक से कार्य का बोझ बढ़ सकता है। इस दौरान अचानक से आपके सामने कुछेक बड़े खर्च भी आ सकते हैं, जिसके लिए आपको धन तक उधार लेना पड़ सकता है। माह के उत्तरार्ध के समय आप अपनी योजनाओं को गुप्त रखें अन्यथा आपके विरोधी उसमें अड़ंगे डाल सकते हैं।

मीन राशि-

इस माह आपके सोचे हुए कार्य समय से पूरे होते हुए नजर आएंगे। माह के पूर्वार्ध में आपकी बहुप्रतीक्षित मनोकामना पूरी हो सकती है। यदि आप इस माह अपने कार्य को योजनाबद्ध तरीके से करते हैं तो आपको उम्मीद से कहीं ज्यादा सफलता मिल सकती है। यदि आप लंबे समय से भूमि-भवन या वाहन क्रय करने की सोच रहे थे तो आपकी यह मनोकामना माह के प्रारंभ में पूरी हो सकती है। इस माह कार्यक्षेत्र में आपके कामकाज की खूब तारीफ होगी। समाजसेवा और राजनीति से जुड़े लोगों की मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रभावी लोगों के साथ आपके संपर्क बनेंगे।

माह के दूसरे सप्ताह में आपके करियर अथवा कामकाज में आमूलचूल बदलाव हो सकता है जो आपके लिए सकारात्मक साबित होगा। माह के मध्य का समय व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए अत्यंत ही शुभ साबित होगा। इस दौरान आप कोई बड़ी कारोबारी डील कर सकते हैं। इस माह आपकी बाजार में साख बढ़ेगी। ईमानदार रहें। माह के उत्तरार्ध में खर्च की अधिकता रहेगी। इस दौरान आप सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों पर बड़ी धन राशि खर्च कर सकते हैं। रिश्ते-नाते की दृष्टि से पूरा माह अनुकूल रहने वाला है। लव लाइफ शानदार बनी रहेगी।

महाबलेश्वर

महाराष्ट्र का खूबसूरत हिल स्टेशन

महाबलेश्वर महाराष्ट्र का एक प्रमुख हिल स्टेशन है, जो अपने शानदार मौसम, हरी-भरी घाटियों, और स्ट्रॉबेरी के बागानों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आप प्रतापगढ़ किला, वीनर्ही लेक, और विभिन्न व्यू प्वाइंट्स जैसे आर्थर सीट पॉइंट और एलफिन्स्टन पॉइंट का आनंद ले सकते हैं। सर्दियों के मौसम में महाबलेश्वर की यात्रा एक यादगार अनुभव होता है। ठंडी हवाओं के बीच सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य मन मोह लेते हैं। यह स्थान परिवार, दोस्तों, और रोमांटिक यात्राओं के लिए एकदम उपयुक्त है।

महाबलेश्वर महाराष्ट्र का सबसे बेहतरीन हिल स्टेशन है। यह सह्याद्री पर्वतमाला पर समुद्र तल से लगभग ४५०० फीट ऊपर स्थित है। यह पुराने बॉम्बे प्रेसीडेंसी की पूर्व ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। पर्यटक इसकी आकर्षक हरियाली, सुंदर उद्यानों और मनमोहक दृश्यों से रोमांचित हो जाते हैं। ब्रिटिश काल में निर्मित कई राजसी हवेलियाँ आज भी राज के स्मारकों के रूप में खड़ी हैं। यहाँ आने का पसंदीदा मौसम मार्च से जून तक है। यह स्थान अपनी प्राकृतिक सुंदरता, स्ट्रॉबेरी के बागानों, और सुखद जलवायु के लिए जाना जाता है। महाबलेश्वर १,३७२ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और पुणे से लगभग १२० किलोमीटर और मुंबई से लगभग २६० किलोमीटर की दूरी पर है।

कैसे पहुँचें?

सड़क मार्गः पुणे और मुंबई से नियमित बसें और टैक्सियाँ उपलब्ध हैं।

रेल मार्गः नजदीकी रेलवे स्टेशन वाठार (६० किमी) है।

हवाई मार्गः पुणे हवाई अड्डा (१२० किमी) निकटतम एयरपोर्ट है।

सबसे अच्छा समय

महाबलेश्वर घूमने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से जून के बीच है। सर्दियों के दौरान

महाबलेश्वर में प्रमुख आकर्षण

एलीफैंट हेड पॉइंट

यह महाबलेश्वर में सबसे मनोरम दृश्यों में से एक है जो सह्याद्री पर्वतमाला के आश्चर्यजनक दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। हाथी के सिर और सूंड जैसा दिखने के कारण इसका नाम पड़ा एलीफैंट हेड पॉइंट। यह पॉइंट मानसून के दौरान हरा-भरा हो जाता है। यह नीडल पॉइंट के रूप में भी जाना जाता है, यह प्रसिद्ध पर्यटन स्थल सूर्योदय और सूर्यास्त के दौरान सबसे अच्छा दौरा किया

जाता है।

२. वेन्ना झील

२८ एकड़ में फैली मानव निर्मित झील, वेन्ना झील महाबलेश्वर में घूमने के लिए सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है। इसे शुरू में शहर की पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया था। झील में कुछ तीर्थ स्थान भी हैं जो १ से २ किलोमीटर के भीतर डूबे हुए हैं। इसके तट पर स्थित

महाबलेश्वर शहर का नाम भगवान शिव (महाबली) के नाम पर पड़ा है, यह मंदिर पुराने महाबलेश्वर में स्थित है, जिसे क्षेत्र महाबलेश्वर के नाम से जाना जाता है। यह मश्वर शहर से ५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ कई मंदिर हैं, जिनमें से एक कृष्णाबाई मंदिर है, जो १३वीं शताब्दी में बना सबसे पुराना मंदिर है। यहाँ से पाँच पवित्र नदियाँ कृष्णा, वेन्ना, कोयना, सावित्री और गायत्री निकलती हैं, जिन्हें 'पंचगंगा मंदिर' कहा जाता है। महाबलेश्वर अपनी स्ट्रॉबेरी के लिए मशहूर है। महाबलेश्वर की ज़रूरी चीज़ों में खेत से आने वाली ताज़ी स्ट्रॉबेरी और रसभरी शामिल हैं, जिनके लिए यह शहर जाना जाता है। इसके अलावा आप घर पर जेली, शहद, जैम और भी बहुत कुछ ले जा सकते हैं। टाउन बाज़ार से हस्तशिल्प, चमड़े की चीज़ें, कोल्हापुरी जूते और भी बहुत कुछ खरीदा जा सकता है।

४. लिंगमाला फॉल्स

लिंगमाला महाराष्ट्र राज्य के महाबलेश्वर क्षेत्र में स्थित बहोत खूबसूरत झरना है। यह सबसे विस्मयकारी फॉल्स है जिसे देखने से आपको कभी नहीं चूकना चाहिए। यदि आप मन की परम शांति के लिए एक शांत जगह की तलाश में हैं, तो लिंगमाला फॉल्स आपके लिए एक बेहतरीन पिक है।

५. तपोला

एक देहाती गांव है, जिसमें एक सुंदर झील है, जिसे शिवसागर झील कहा जाता है। यह अपने साहसिक जंगल ट्रेक और देहाती सुंदरता के लिए जाना जाता है। यदि आप गर्मियों में महाबलेश्वर जा रहे हैं तो यह घूमने के लिए सबसे अच्छी जगहों में से एक है । आप झील के शांत पानी में एक आरामदायक नाव की सवारी का आनंद ले सकते हैं। तपोला में झील के चारों ओर घने जंगल में वसोता और जयगढ़ जैसे कई अज्ञात किले हैं, जो अपने आप में एक साहसिक कार्य करते हैं। जंगल ट्रेक, विशेष रूप से वसोटा किले का ट्रेक तपोला में एक रोमांचकारी गतिविधि है और पर्यटकों के बीच तेजी से लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है।

६. आर्थर सीट पॉइंट -

१४७० मीटर की ऊंचाई पर स्थित, आर्थर की सीट महाबलेश्वर में घूमने के लि ए शीर्ष स्थानों में से एक है । मढ़ी महल के

नाम से भी मशहूर इस जगह की एक अनूठी और दिलचस्प विशेषता है। यदि आप यहां से किसी भी हल्की चीज को घाटी के नीचे फेंकते हैं, तो वह हवा के दबाव के कारण वापस ऊपर आ जाती है। आर्थर की सीट को 'अंकों की रानी' के रूप में संबोधित किया जाता है क्योंकि कोई भी दक्कन और कोंकण के दोनों ओर के निर्बाध मनोरम दृश्यों का आनंद ले सकता है ।

७. भगवान महाबलेश्वर मंदिर

यह मंदिर मराठा महिमा और विरासत के प्रमाण के रूप में खड़ा है। भगवान शिव को समर्पित एक प्राचीन मंदिर, इसके चारों ओर ५ फीट की दीवार है और इसे दो खंडों में विभाजित किया गया है - केंद्रीय हॉल और गर्भगृह और यह महाबलेश्वर में घूमने के लिए पवित्र स्थानों में से एक है। उत्तरार्द्ध में एक ५०० साल पुराना स्वयं उत्पन्न लिंगम है जिसे महालिंगम के नाम से जाना जाता है। मंदिर में भगवान शिव के त्रिशूल, रुद्राक्ष, डमरू और एक बिस्तर भी है।

८. विल्सन पॉइंट

१४३९ मीटर की ऊंचाई पर स्थित महाबलेश्वर का सबसे ऊंचा स्थान विल्सन प्वाइंट है। सनराइज पॉइंट के रूप में भी प्रसिद्ध, यह आश्चर्यजनक सूर्योदय देखने के लिए एक प्रसिद्ध पर्यटक आकर्षण है। विल्सन पॉइंट एक विशाल पठार है जिसमें विभिन्न स्थानों पर तीन वॉच टावर हैं जो महाबलेश्वर का शानदार मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

९. धोबी फॉल्स

हरियाली और चट्टानों से घिरे, ये प्रकृति के बीच एक असली अनुभव के लिए आदर्श हैं। झरना कोयना नदी से नीचे गिरता है और धुंध और इंद्रधनुष के साथ बहोत सुंदर दिखता है। मुख्य महाबलेश्वर शहर से ३ किमी दूर स्थित, धोबी झरना एक आदर्श पिकनिक स्थल है। झरने तक पहुँचने के लिए एक छोटी सी चढ़ाई करनी पड़ती है। यहाँ मानसून के मौसम के दौरान सबसे अच्छा दौरा किया जाता है।

१०. प्रतापगढ़

शानदार किला ऐतिहासिक महत्व और अतुलनीय दृश्यों में समृद्ध है। एक पहाड़ी की चोटी पर रणनीतिक रूप से स्थित, किला मूल रूप से १६६५ में मराठा शासकों द्वारा बनाया गया था। इसकी आसपास की सुंदरता और विरासत मूल्य आज तक लोगों को लुभाता है।

वायरल हो रही हेमा मालिनी की फोटोज

हिन्दी फिल्मों की दिग्गज अभिनेत्री और मथुरा लोकसभा सीट से भाजपा सांसद हेमा मालिनी हाल ही में नवी मुंबई के खारघर इलाके में स्थित इस्कॉन मंदिर पहुंचीं. हाल ही में एक्ट्रेस ने मंदिर से ली गई फोटो के साथ एक पोस्ट शेयर कर अपनी खुशी जाहिर की. गुरुवार को हेमा मालिनी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम से इस्कॉन मंदिर परिसर में ली कुछ फोटोज फैंस के साथ शेयर की. एक्ट्रेस की इन फोटोज पर फैंस प्यार लुटा रहे हैं. एक्ट्रेस ने इन फोटोज को शेयर करते हुए लंबा नोट भी लिखा और बताया कि मंदिर का उद्घाटन १५ जनवरी, २०२५ को होगा. हेमा मालिनी के फैंस उनकी फोटोज पर अक्सर प्यार लुटाते हैं. सोशल मीडिया पर वह फैंस के साथ अपना हर अपडेट शेयर करती हैं. हाल ही में उन्होंने अपनी पोस्ट शेयर की है. इस पोस्ट के साथउन्होंने लिखा, 'नवी मुंबई के खारघर में कुछ खूबसूरत होने वाला है. यह मेरे दिल के बहुत करीब है। इस्कॉन ने एक बेहद खूबसूरत मंदिर बनाया है, जहां मुख्य देवता राधा मदनमोहन हैं.' अपनी बात आगे रखते हुए एक्ट्रेस ने बताया कि, 'यह सब सूरदास प्रभु जी और इतने सारे भक्तों और कारीगरों की अथक मेहनत का नतीजा है, जिन्होंने इस मंदिर को हकीकत बनाने के लिए १० साल तक कड़ी मेहनत की है. मैं नए साल के दिन खारघर में प्रणाम करने गई और मुझे बहुत अच्छा महसूस हुआ. मंदिर का उद्घाटन १५ जनवरी, २०२५ को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया जाएगा.'

शाहिद कपूर की 'देवा' का टीजर हुआ रिलीज!

शाहिद कपूर की अपकमिंग फिल्म 'देवा' का टीजर आखिरकार रिलीज हो गया है. जी स्टूडियो और रॉय कपूर फिल्म्स के बैनर तले बनी फिल्म का टीजर अब लोगों के बीच तहलका मचा रहा है. इस टीजर को लेकर लोगों में काफी एक्साइटमेंट थी जो आखिरकार अब खत्म हो गई. पहले दो पोस्टरों के जरिए फिल्म के एक्शन पैक सीन्स की झलक मिली थी, लेकिन अब टीजर में शाहिद कपूर की दमदार परफॉर्मेंस देखने को मिल रही है. टीजर रिलीज से पहले, 'देवा' को लेकर एक ग्रैंड फैन इवेंट हुआ था. इस इवेंट में बहुत से लोग शामिल हुए थे. इवेंट में शाहिद कपूर ने अपने फैंस के साथ दिल छूने वाली बातचीत की थी. इस प्रोग्राम में शाहिद ने अपने फैंस का धन्यवाद किया. फैंस की एक्साइटमेंट पहले से ही सातवें आसमान पर थी और फिल्म के टीजर ने उनकी उम्मीदों को अब और भी बढ़ा दिया है.

महाराष्ट्र में किस आईएएस का कहां ट्रांसफर?

महाराष्ट्र में देवेन्द्र फडणवीस सरकार बनते ही भारतीय प्रशासनिक सेवा के १२ अधिकारियों के तबादले किए हैं। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव २०२४ में भाजपा की बंपर जीत के बाद पहली बार आईएएस अफसरों को इधर-उधर किया गया है।

डॉ. अंबलगन पी. (२००१ बैच के आईएएस) उद्योग, ऊर्जा और श्रम विभाग, मंत्रालय में सचिव हर्षदीप कांबले को मुंबई नागरिक परिवहन उपक्रम बीईएसटी का महाप्रबंधक अनिल दिग्गिकार (१९९० बैच के IAS को दिव्यांग कल्याण विभाग, मंत्रालय का अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. राधाकृष्णन बी. (२००८ बैच के आईएएस) MAHAGENCO का नया चेयरमैन और प्रबंध निदेशक।

संजय डैने (२०१२ बैच के आईएएस) नागपुर टेक्सटाइल कमिश्नर। राहुल कारिडले (२०१५ बैच के आईएएस) नासिक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के म्यूनिसिपल कमिश्नर। वानमथी सी. (२०१५ बैच की आईएएस) वर्धा की नई कलेक्टर संजय पवार (२०१५ बैच के आईएएस) स्टेट टैक्स मुंबई में ज्वाइंट कमिश्नर। अविश्यंत पांडा (२०१७ बैच के आईएएस) गढ़चिरौली का कलेक्टर। विवेक जॉनसन (२०१८ बैच के आईएएस) को चंद्रपुर का जिला परिषद का चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर। अन्नासाहेब दादू चव्हान (सीएससी प्रमोटेड) महात्मा फुले जीवनदाई आरोग्य योजना सोसाइटी का चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर। गोपीचंद मुरलीधर कदम (एससीएस प्रमोटेड) को सोलापुर स्मार्टसिटी का सीईओ आईएएस वानमथी सी. को वर्धा की नई कलेक्टर।

लाड़की बहन योजना : ... 'यह' लाभार्थी महिला अयोग्य होगी: अदिति तटकरे

चुनाव संपन्न होने के बाद प्रदेश में नौवीं सरकार का गठन हुआ है। इस नई सरकार ने लाभार्थी महिलाओं के खातों में लाड़की बहन योजना की दिसंबर किस्त जमा कर दी है। कुछ लाभार्थी महिलाओं को एक साथ छह महीने की किस्तें मिली हैं। हालांकि, कुछ लाभार्थी महिलाओं को अब अयोग्य घोषित किए जाने की संभावना है। यदि किसी लाभार्थी महिला के संबंध में शिकायत प्राप्त होती है, तो उसके आवेदन की और जांच की जाएगी।

महिला एवं बाल विकास मंत्री अदिति तटकरे ने कहा, 'गैर-मानक आवेदनों से भरे गए आवेदनों को अयोग्य घोषित करने का निर्णय लिया गया है. वह कैबिनेट की बैठक खत्म होने के बाद मीडिया से बात कर रही थीं। उन्होंने कहा, 'हम बिना शिकायत के किसी भी आवेदन की जांच नहीं करेंगे. यदि आय में वृद्धि हुई है, यदि आय २.५ लाख रुपये से अधिक हो गई है, तो वे महिलाएं योजना के लिए पात्र नहीं हैं; चार पहिया वाहन वाली महिलाओं को अयोग्य घोषित किया जाएगा; अंतरराज्यीय विवाह करने वाली महिलाएं इस योजना के लिए पात्र नहीं हैं; आधार कार्ड पर दर्ज नाम बैंक में दर्ज नाम से अलग होगा और अगर

१. यदि आय २.५ लाख रुपये से अधिक हो गई है, तो वे महिलाएं योजना के लिए पात्र नहीं हैं;
२. चार पहिया वाहन वाली महिलाओं को अयोग्य घोषित किया जाएगा;
३. अंतरराज्यीय विवाह करने वाली महिलाएं इस योजना के लिए पात्र नहीं हैं;
४. आधार कार्ड पर दर्ज नाम बैंक में दर्ज नाम से अलग होगा और अगर यह सामने आया तो संबंधित महिला अयोग्य हो जाएगी।

यह सामने आया तो संबंधित महिला अयोग्य हो जाएगी। जुलाई में शुरू हुई इस योजना के लिए राज्य भर से २.६३ करोड़ आवेदन प्राप्त हुए थे। इनमें से २.४७ करोड़ आवेदन पात्र थे। १२.८७ लाख बहनों के बैंक खाते आधार कार्ड से लिंक नहीं थे। चुनाव से पहले उन्हें योजना का लाभ नहीं मिला था। अक्टूबर में बैंक खातों में ७,५०० रुपये जमा किए गए जबकि नवंबर तक १,५००-१,५०० रुपये जमा किए गए थे। दिसंबर का लाभ देने के लिए १,४०० करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। अदिति तटकरे के पास महिला विकास विभाग बना रहा, जिससे शनिवार को पोर्टफोलियो आवंटन के बाद दिसंबर महीने के लिए लाभ देने के काम में तेजी आई।

१२ लाख से अधिक नए लाभार्थी

१२.८७ लाख बहनों के पास छह महीने के कुल ९,००० बैंक खाते जमा किए गए हैं, जिन्हें अब तक कोई लाभ नहीं मिला है। विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री प्रिय बहन योजना का लाभ महायुति सरकार को मिला। प्रदेश की हितग्राही बहनों द्वारा डाले गए मतों ने महागठबंधन को प्रचंड जीत दिलाई।

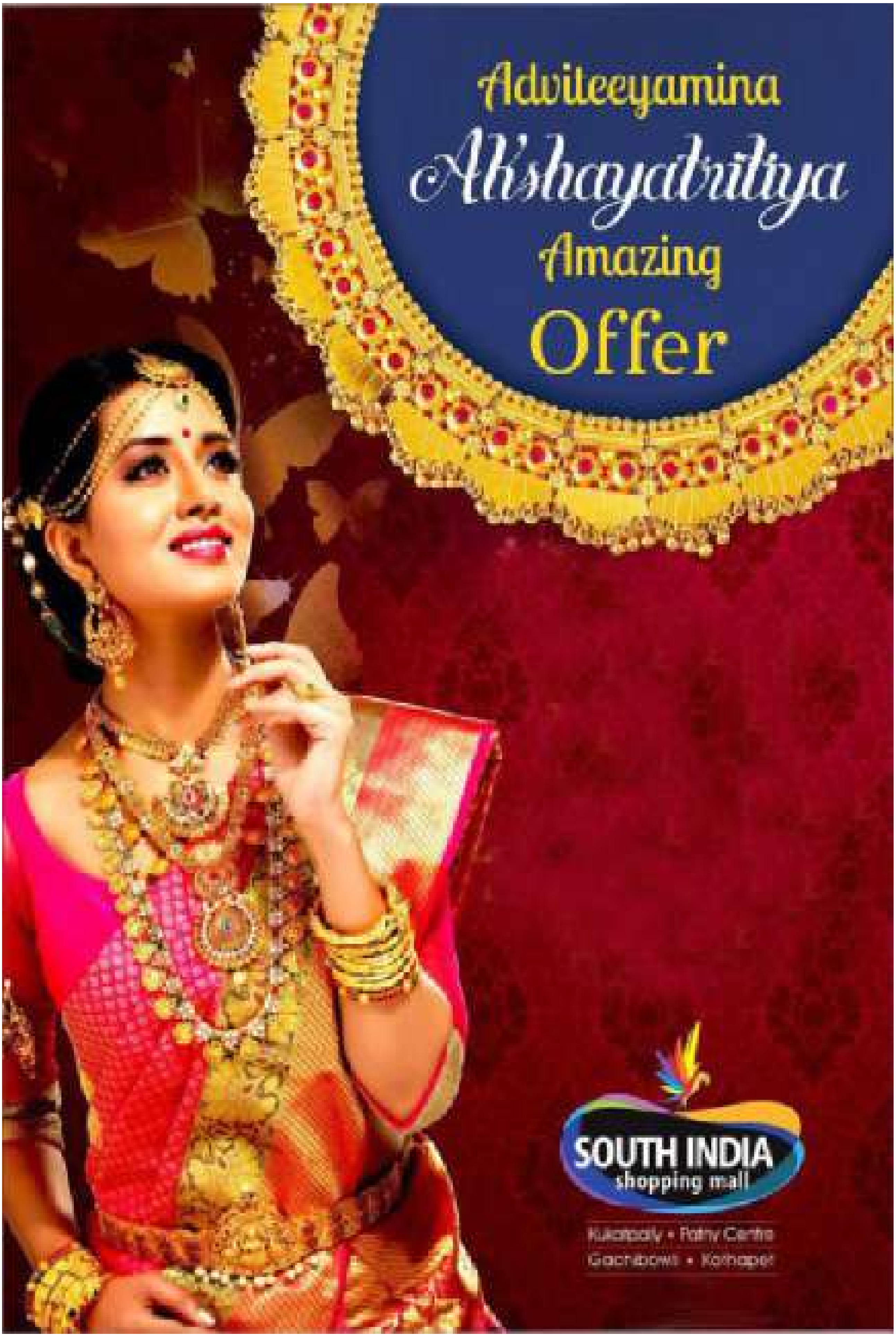
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

कीट नन्हीं परी लिटिल मिस इण्डिया : २०२४
अवार्ड जीतीं ओडिशा की दिलीशा बेहरा ने

२३ दिसंबर को कीट कंवेंशन सेंटर पर सायंकाल कीट नन्हीं परी लिटिल मिस इण्डियाः२०२४ का ग्रैण्ड फिनाले आयोजित किया गया जिसमें गृह राज्य ओडिशा की दिलीशा बेहरा ने कीट नन्हीं परी लिटिल मिस इंडिया २०२४ का खिताब जीता। फेमिना मिस इण्डिया वर्ल्ड २०२४ निकिता पोरवाल की गरिमामई उपस्थिति में कीट नन्हीं परी अवार्ड के मुख्य संरक्षक कीट-कीस के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने दिलीशा बेहरा को कीट नन्हीं परी मिस इण्डिया का ताज पहनाया। प्रथम उपविजेता रहीं रेखा पाण्डेय तथा द्वितीय उपविजेता रहीं आयुषी ढोलकिया। कीट नन्हीं परी लिटिल मिस इण्डियाः२०२४ अवार्ड

१. २०२५ प्रतियोगिता के रजत वर्ष के उपलक्ष्य में अवार्ड राशि बढ़ाकर क्रमशः १०लाख रुपये, ७ लाख रुपये और ५ लाख रुपये की जाएगी

२. प्रतियोगिता आयोजन के मुख्य संरक्षक, कीटकीस के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत

जीतनेवाली ओडिशा की दिलीशा बेहरा को मिला तीन लाख रुपये का कैश अवार्ड जबकि अरुणाचल प्रदेश की हेमन्या बुरहागोहेन को प्रथम रनर और मध्य प्रदेश की ईशा डांगी को द्वितीय रनर-अप चुना गया जिन्हें क्रमशः १ लाख रुपये और ५०,००० रुपये का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। सभी पुरस्कारों की राशि कुल २१ लाख रुपये थी। इसके अलावा यह भी सुविधा विजेताओं को प्रतिवर्ष प्राप्त रहता है कि अगर विजेता विश्वविद्यालय में अपनी उच्च शिक्षा जारी रखना चाहती हैं तो उन्हें कीट में १०० प्रतिशत शुल्क माफ़ किया जाता है। यह अवार्ड प्रतिवर्ष प्रतियोगी किशोरियों की स्टाइल, प्रतिभा, बुद्धिमत्ता, लालित्य, करुणा तथा संवेदनाओं को विकसित करने का एक सफल प्रयास है। विगत २४ वर्षों से आयोजित होनेवाले इस किशोरी सौंदर्य प्रतियोगिता के इस वर्ष के प्रतियोगी किशोरियों के रैंप पर कदम रखते ही पूरा माहौल तालियों से गूंज उठा।

देश भर में आयोजित क्षेत्रीय ऑडिशन से १३-१५ वर्ष के बीच के २३ प्रतिभागियों को सेमीफाइनल के लिए चुना गया था। साथ ही अन्य उपहार और कीट में उनकी पढ़ाई के लिए पर्याप्त शुल्क छूट भी मिली। कीट नन्हीं परी प्रतियोगिता के आयोजन का अगले साल २५ वर्ष पूरा हो रहा है जिसको ध्यान में रखकर महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर सामंत ने घोषणा की कि नन्हीं पारी २०२५ के लिए पुरस्कार राशि बढ़ाकर क्रमशः १० लाख रुपये, ७ लाख रुपये और ५ लाख रुपये कर दी जाएगी। अंतिम दौर में कई अन्य खिताबों का फैसला किया गया। मिस रॅपन्ज़ेल का खिताब दीवान खुशनुमा तौहीद (मेघालय) ने जीता, जबकि मिस सेल्फी का खिताब हियाश्री पालीवाल (राजस्थान) ने जीता। रेशमी घोष (त्रिपुरा) को मिस एक्टिव का ताज पहनाया गया, और यशश्री सागरिका (ओडिशा) ने मिस उर्वशी का खिताब जीता। कशिश चंदेल (हिमाचल प्रदेश) मिस मोनालिसा के खिताब की विजेता रहीं, जबकि निधि आर गौड़ा (कर्नाटक) ने मिस फोटोजेनिक का खिताब जीता। हेमन्या बुरहागोहेन (अरुणाचल प्रदेश) ने मिस पर्सनालिटी का खिताब भी जीता। नव्या कुमावत (राजस्थान) ने मिस फैशन का खिताब जीता। मिस सिंड्रेला का खिताब सुदेशना गुरुंग (सिक्किम) ने जीता, जबकि मिस विज्किड का खिताब दिलिशा बेहरा (ओडिशा) ने जीता, जिन्होंने विजेता का ताज भी अपने नाम किया।

आलोक पुरुष एवं शांतिदूत : महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत

सुब्रमण्यम भारतीजी के जन्मदिन, ११ दिसंबर को सम्पूर्ण भारतवर्ष भाषा दिवस के रुप में मनाता है ठीक उसीप्रकार ओड़िशा प्रदेश के महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत के जन्मदिन २० जनवरी को आलोक पुरुष एवं शांतिदूत दिवस के रुप में मनाया जाना चाहिए। महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत आज २१वीं सदी के वास्तविक और यथार्थ आलोकपुरुष एवं शांतिदूत बन चुके हैं। उन्हें भारत समेत दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों से कुल ६४ कीर्तिमान मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है। वे अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक पहल कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से पूरे विश्व में शांति का पैगाम दे रहे हैं।

५९ वर्षीय महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ओड़िशा प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर स्थित दो विश्वविख्यात शैक्षिक संस्थाओं कीट-कीस के संस्थापक हैं जो आज कीट-कीस दो डीम्ड विश्वविद्यालय हैं। कीट जहां पर नालंदा के इतिहास को तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के माध्यम से साकार कर रहा है वहीं कीस वास्तविक शांतिनिकेतन बनकर सच्चे मानव निर्माण का केन्द्र बन चुका है। मेरा यह व्यक्तिगत मत है कि जिस प्रकार तमिल कवि स्वर्गीय सी. सुब्रमण्यम भारतीजी के जन्मदिन, ११ दिसंबर को सम्पूर्ण भारतवर्ष भाषा दिवस के रुप में मनाता है ठीक उसीप्रकार ओड़िशा प्रदेश के महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत के जन्मदिन २० जनवरी को आलोक पुरुष एवं शांतिदूत दिवस के रुप में मनाया जाना चाहिए।

महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत आज २१वीं सदी के वास्तविक और यथार्थ आलोकपुरुष एवं शांतिदूत बन चुके हैं। उन्हें भारत समेत दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों से कुल ६४ कीर्तिमान मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है। वे अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक पहल कीट-कीस-कीम्स के माध्यम से पूरे विश्व में शांति का पैगाम दे रहे हैं। जिसप्रकार तमिल कवि स्वर्गीय सी. सुब्रमण्यम भारतीजी ने अपनी तमिल कविता के माध्यम से देशप्रेम का संदेश दिया है जिसका हिन्दी रुपांतर हैः

चमक रहा उत्तुंग हिमालय,
यह नगराज हमारा ही है।
जोड़ नहीं धरती पर जिसका,
वह नगराज हमारा ही है।
नदी हमारी ही है गंगा,
प्लावित करती मधुरस धारा,
बहती है क्या कहीं और भी,
ऐसी पावन कल-कल धारा।
सम्मानित जो सकल विश्व में,
महिमा जिनकी बहुत रही है

अमर ग्रन्थ वे सभी हमारे,
उपनिषदों का देश यही है।
गाएंगे यश हम सब इसका,
यह है स्वर्णिम देश हमारा,
आगे कौन जगत में हमसे,
यह है भारत देश हमारा।

ठीक उसी प्रकार महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत ने अपने नैतिक दायित्वों (कीट-कीस-कीम्स) के माध्यम से विश्व के अनेक महान् नोबेल पुरस्कारप्राप्त विभूतियों, धर्मगुरुओं, रतन टाटा तथा बिलग्रेट आदि को कीस मानवतावादी अवार्ड प्रदानकर सच्चे मानवतावादी बन चुके हैं। एक साक्षात्कार में प्रोफेसर अच्युत सामंत ने यह स्पष्ट किया कि उनके व्यक्तिगत जीवन में तथा उनकी विश्वविख्यात शैक्षिक संस्थाएं कीट-कीस की स्थापना के मूल में सत्य, करुणा और प्रेम ही हैं। कौन बनेगा करोड़पति के हॉट सीट पर जब प्रोफेसर अच्युत सामंत बैठे तो २१वीं सदी के महानायक अमिताभ बच्चन जी ने उन्हें सच्चा कर्मवीर बताया था। मेरी व्यक्तिगत अनुभूति के अनुसार प्रोफेसर अच्युत सामंत गरीबों के जीवित मसीहा हैं। आदिवासी समुदाय के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए देवदूत हैं। महिला सशक्तिकरण के आदर्श हैं।बाल प्रतिभा, विज्ञान प्रतिभा तथा खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए शांतिदूत हैं।

वे २१वीं सदी के युवाओं के यथार्थ पथप्रदर्शक हैं। वे वास्विक जननायक हैं। उनके जीवन के यथार्थ आदर्शों को अपनाकर बच्चे, युवा और समाजसेवी सदाचारी बन सकते हैं तथा देश के शक्तिबोध तथा सौंदर्य बोध को बढ़ा सकते हैं। आलोक पुरुष एवं शांतिदूतः महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत की ओर से नव वर्षः२०२५ की बहुत-बहुत बधाइयां तथा अनेकानेक शुभकामनाएं।

-अशोक पाण्डेय

प्रोफेसर अच्युत सामंत को एलायंस विश्वविद्यालय, बेंगलुरु द्वारा मिली मानद डॉक्टरेट की डिग्री

अब तक कुल ६४ मानद डॉक्टरेट की डिग्री पानेवाले प्रथम शिक्षाविद् बने प्रोफेसर अच्युत सामंत

ओड़िशा प्रदेश की राजधानी भुवनेश्वर स्थित कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक तथा निःस्वार्थ समाजसेवी महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत को एलायंस विश्वविद्यालय, बेंगलुरु द्वारा अपने १३वें वार्षिक दीक्षांत समारोह में प्रोफेसर सामंत की उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय सामाजिक और शैक्षिक पहल के लिए मानद डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया गया।

गौरतलब है कि इस मानद डॉक्टरेट की डिग्री को मिलाकर प्रोफेसर अच्युत सामंत को अबतक कुल ६४ मानद डॉक्टरेट की डिग्री मिल चुकी है जो एक नया कीर्तिमान है। इसप्रकार महान् शिक्षाविद् और निःस्वार्थ समाजसेवी प्रोफेसर सामंत भारत के प्रथम शिक्षाविद् बन गये हैं। अपनी प्रतिक्रिया में प्रोफेसर अच्युत सामंत ने बताया कि वे, ''पिछले ३३ वर्षों से, निःस्वार्थ भाव से समाज की भलाई के लिए काम कर रहे हैं।

यह मानद डॉक्टरेट की डिग्री निश्चित रुप से उनके भावी जीवन के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगी जिसके लिए वे एलायंस विश्वविद्यालय, बेंगलुरु के समस्त शीर्ष अधिकारियों प्रति आभार जताया। आयोजित दीक्षांत समारोह में जो अन्य विभूतियां मानद डॉक्टरेट की डिग्री से सम्मानित हुईं उनमें गोवा के राज्यपाल पी एस श्रीधरन पिल्लई, पद्म भूषण डॉ. विजय कुमार सारस्वत, नीति आयोग के माननीय सदस्य और जेएनयू के चांसलर; और पद्मश्री अंजू बॉबी जॉर्ज, एथलेटिक फेडरेशन ऑफ इंडिया की उपाध्यक्ष आदि शामिल थे।

महान् शिक्षाविद् प्रो. अच्युत सामंत को मिली ६२वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री

अपनी ६२वीं मानद डॉक्टरेट उपाधि प्राप्त करते हुए, डॉ. सामंत ने कहा, 'पिछले ३३ वर्षों से, मैं समाज में लोगों के लिए लगातार काम कर रहा हूं। यह मानद डॉक्टरेट मुझे आने वाले समय में हमेशा याद रहेगी।'

प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद् और कीट- कीस के संस्थापक प्रोफेसर अच्युता सामंत को पूर्णिमा विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान से उनके उल्लेखनीय और प्रशंसनीय शैक्षिक पहल और निः स्वार्थ समाजसेवा के बदौलत मानद डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान ७ दिसंबर २०२४ को पूर्णिमा विश्वविद्यालय के ११वें दीक्षांत समारोह के दौरान प्रदान किया गया। यह मानद डॉक्टरेट की डिग्री प्रो अच्युत सामंत को अबतक मिली ६२वीं मानद डॉक्टरेट की डिग्री है जो भारत के किसी भी शिक्षाविद् को अबतक मिली एक कीर्तिमान मानद डॉक्टरेट की डिग्री है।

श्री अशोक पाण्डेय जी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कीट-कीस-कीम्स के संस्थापक, समाजसेवी तथा महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत, बीजेपी युवा नेता उमेश खण्डेलवाल जी, पत्रकार हरिभारती जी और हेमंत तिवारी जी।

ओड़िया कादंबनी के वार्षिक समारोह में रामायण टेलीविजन धारावाहिक के रावण की सफल भूमिका निभाने वाले श्री अमरेन्द्र मिश्र

जिस प्रकार अग्नि लकड़ी को जला देती है, उसी प्रकार ईर्ष्या भी मनुष्य जीवन की सारी खुशी, सारे उमंग को जला देती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों के लिए तो क्या जी पायेगा, उसका सारा जीवन अपने लिए ही अभिशप्त हो जाता है।

ईर्ष्या की अग्नि जला देती है मन

-श्री मृदुल कृष्ण महाराज

वर्तमान युग में तो यह एक असाध्य रोग के समान फैल गया है। व्यक्ति को अपने हित या अहित का ध्यान नहीं रहता है। दूसरों को आगे बढ़ते देख, सम्पन्न देख, अपने से अधिक सफल देखकर वह मन ही मन अपनी तुलना उससे करने लगता है। उसे अपना जीवन अंधकारपूर्ण प्रतीत होने लगता है। यह इस स्थिति को प्राप्त हो गया और मैं क्यों नहीं हुआ। बस, यही सोच उसके भीतर ईर्ष्या की अग्नि को प्रज्वलित कर देती है। कुछ लोगों की यह आदत बन जाती है या यूं कहिए कि एक प्रकार का मानसिक रोग हो जाता है। किसी पड़ोसी ने चार मंजिल मकान बनवाया तो वे भी फटाफट बनवाने लगेंगे। अब भले ही उन्हें मकान की चार मंजिलों की आवश्यकता हो या न हो। किसी ने बड़ी गाड़ी खरीदी तो हम भी मारुति छोड़कर बड़ी गाड़ी लेंगे। चाहे इसके लिए कर्ज ही क्यों न उठाना पड़े। कपड़े, जेवर के पीछे तो महिलाओं की ईर्ष्या सारी सीमाएँ पार कर जाती है।

दरअसल, ईर्ष्या एक ऐसी घुटन है, जो व्यक्ति के जीवन का सारा रस सोख लेती है। ईर्ष्या के साथ-साथ क्रोध, शक और संशय के बीज भी फूट पड़ते हैं। व्यक्ति का चिंतन भी विषाक्त हो उठता है। उसके समूचे व्यक्तित्व से यह विष छलकता रहता है। दूसरे की उन्नति, दूसरे की लोकप्रियता, दूसरे की प्रतिष्ठा को ईर्ष्यालु व्यक्ति कभी भी प्रेरणा के समान ग्रहण नहीं करता। किसी को पदोन्नति मिली है या कोई पुरस्कार मिला है तो इसके पीछे उस व्यक्ति की मेहनत और योग्यता है, ये बात ईर्ष्यालु लोगों की समझ में नहीं आती। ईर्ष्यालु मनोवृति से किसी का भला नहीं होता। यह समूचे समाज के लिए अभिशाप है।

व्यक्ति चाहे तो दूसरों को सफलता की राह पर आगे बढ़ते देखकर प्रेरणा ले सकता है। अपना जीवन भी सुधार सकता है और जो लोग ऐसा करते हैं, वे अपने जीवन में फूलों की बगिया लगा लेते हैं जिनकी सुगन्ध से उनका जीवन महक उठता है लेकिन जो ईर्ष्या का दामन थामते हैं, उनका खुद का जीवन तो नारकीय बन ही जाता है साथ ही वे दूसरों की जिन्दगी का स्वाद भी कसैला कर देते हैं। ईर्ष्या से सिर्फ नुकसान होता है। लाभ की न तो गुंजाइश होती है और न ही संभावना। व्यक्ति अपने पतन के साथ-साथ दूसरों को भी नीचे धकेल देता है। इस मनोवृत्ति से ग्रस्त व्यक्ति को पता भी नहीं चलता कि कब उनका स्वयं का सर्वनाश हो गया। कब वे दूसरों से, समाज से कट गये।

ध्यान से देखना, जो लोग इसके अधिक शिकार होते हैं, समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी नहीं रहती। भद्र पुरुष ऐसे व्यक्तियों से सदा दूर ही रहते हैं। ईर्ष्या के कारण ही व्यक्ति सदा निन्दा रूपी पाप में निमग्न रहता है। उसकी सारी ताकत सही को गलत साबित करने में लग जाती है और अन्ततः ऐसा व्यक्ति अपने शरीर को रोगी बना डालता है। सारी जिंदगी दूसरों की खुशी से जलने वाला, दूसरों की तरक्की से घृणा करने वाला अपने लिए एक टुकड़ा संतोष या खुशी की प्राप्ति नहीं कर सकता।

उसकी जलन धीरे-धीरे एसिडिटी में बदल जाती है, असमय ही वृद्घावस्था घेर लेती है और फिर हृदयरोग बिना किसी निमंत्रण के आकर विराजमान हो जाता है। इसलिए अगर आपके भीतर भी यह प्रवृत्ति है तो इससे उबरिये। इसकी जड़ों को काट डालिए। परमात्मा ने इस मानव शरीर को देकर जो उपकार किया है, उसके लिये नतमस्तक होकर प्रभु का धन्यवाद करिये।

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-91

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

१. किस गुप्त कालीन शासक की मूर्ति सिक्को पर वीणा बजाते हुए मिलती है ?

२. सातवाहन वंश की संरक्षिका के रूप में किन दो महिलाओ ने शासन किया ?

३. कांग्रेस के त्रिपुरी अधिवेशन में गाँधी समर्थित प्रत्यासी कोन था जिसे सुभाष चन्द्र बोसे ने पराजित किया ?

४. थिओसोफिकल सोसायाटी का अन्तराष्ट्रीय मुख्यालय १८८२ में कहा बनाया गया ?

५. भारत में सर्व प्रथम नगरीय निकाय की स्थापना कहा हुई ?

६. ब्रिटिश सरकार ने भारत विभाजन की घोषणा कब की ?

७. सिन्धु घाटी सभ्यता (हड्डपा सभ्यता) के किस पुरातत्त्व स्तःल को सिन्धु का बाग या मुर्दी का टीला कहा जाता है ?

८. प्रभावती गुप्ता की माता कोन थी ?

९.गाँधी इरविन पैक्ट का प्रारूप किसने तैयार किया ?

१०. सेर्वट्स ऑफ़ इंडिया सोसायटी की स्थापना किसने की ?

१०. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (१९१६) जिसमे कांग्रेस का एकीकरण हुआ की अध्क्षता किसने की ?

११. अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की स्थापना किसने और कब की ?

१२. अकबर के शासन में राजकीय भाषा क्या थी ?

१३. पेशवा जिसके शासन कल में मराठा शक्ति चरम पर थी ?

१४. विजय नगर साम्राज्य की प्रथम और दिवतीय राजधानी कोनसी थी ?

१५. किस मुग़ल सम्राट के शासन कल में हिन्दू मंसबदारो की संख्या सर्वाधिक थी ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS MRP ₹ 599
MEGABUY ₹499
SAVE ₹100
MENS FORMAL TROUSERS MRP ₹ 699
MEGABUY ₹599

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

वहम

'आखिर तुमको यह सब करने के लिए कहा किसने था?' अपने हाथ में एक चिट्ठी लिये भूपाल ने जिस तेवर के साथ अपनी प्रियतमा से यह प्रश्न किया, उसे प्रेमालाप तो किसी भी मायने में नहीं कहा जा सकता।

कनक घबरा उठी। वह तेजी से रसोईघर से बाहर निकली लेकिन उसने डरते-डरते पूछा, 'क्यों, मैंने क्या किया भला ?'

'मेरी नौकरी के लिए तुमने अपने भैया के पास चिट्ठी लिखी थी...है न...।

खूब रो-धोकर और कलेजा पीटकर?'

'मेरी' और अपने 'भैया' शब्दों पर भूपाल ने बड़ा जोर दिया था। कनक मन-ही-मन आहत हुई या नहीं...कहा नहीं जा सकता। उसने बड़ी सहजता से उत्तर दिया-'अच्छा... तो यह बात थी। तभी तो मैं कह रही थी कि आखिर मुझसे कौन-सी चूक हो गयी ? और इसमें रोने-गाने और झींकने वाली ओछी बात भला कहाँ से आ गयी? मैंने तो उन्हें बस इतना ही लिखा था कि आप इतने बड़े दफ्तर के अफसर हैं...ढेर सारी जगहें निकलती ही होंगी...एकाध जगह के बारे में जरा इधर का भी ध्यान रखें...

....अगर ऐसा बता भी दिया तो ऐसा कौन-सा बड़ा भारी गुनाह हो गया ?'

'गुनाह ? तुम भला ऐसा कर भी कैसे सकती हो? तुमने तो मुझ पर बड़ा भारी अहसान किया है। मुझे तो तुम्हारा अहसानमन्द होना चाहिए।' भैया ने दो-टूक जवाब लिख भेजा है और वह भी अपने हाथ से...लो पढ़ना है तो पढ़ो।...और भैया को तो दोष दिया भी नहीं जा सकता। भूपाल की नौकरी चले जाने के बाद, सुनील भैया ने कई बार उससे कहा कि वह उनके दफ्तर आकर मिले। लेकिन भूपाल ने भी जैसे कसम खा रखी है- 'अपने साला के अधीन काम नहीं कर सकूँगा।'

सुनील भैया भी आखिर क्या करें ?

और इसके बाद के आठ महीनों में किस तरह गुजर-बसर हुई है, इसे कनक ही जानती है। कनक ने झाड़-पोंछा करने वाली नौकरानी को पहले ही हटा दिया था जबकि नौकर खुद काम छोड़कर चला गया था। कनक ने यह भी सोचा था कि धोबी का बँधा-बँधाया चक्कर हटा देने पर शायद कुछ बचत हो लेकिन साबुन और सोडा खरीद पाना भी बड़ा कठिन हो गया है।...धीरे-धीरे और एक-एक करके नाश्ता और जलपान... चाय और भात के संग-साथ जुड़े रहने वाले दूसरे उपकरण धीरे-धीरे गायब होते चले गये और अब सिर्फ दाल से ही गुजारा हो रहा है। गनीमत है कि अभी भी उसे 'दाल' कहा जा रहा है...अगर उसे 'जल' कहा जाता तो कोई गुस्ताखी न होती।

अपनी खातिर न सही लेकिन बच्चों के चेहरे की तरफ देखकर कनक के जी में आता है कि वह दीवार पर सिर पटककर अपनी जान दे दे।...चीख-चिल्लाकर रोया भी नहीं जा सकता। लोक-लाज का लिहाज न होता तो वह कभी-कभार बुक्का फाड़कर अवश्य ही रो लेती। कैसा हो गया था यह... असहाय और अभिशप्त जीवन!

उसने इतनी पढ़ाई-लिखाई भी नहीं की थी कि अपने तई कुछ कमाने-धमाने की कोशिश करती। निम्न मध्यवर्ग की घर-गृहस्थी जिस तरह चला करती है उसी तरह दिन कट रहे हैं। किशोरावस्था से लेकर जवानी तक और जवानी से...अधेड़ावस्था की ओर। शिल्पकला या दस्तकारी का काम

कनक ने बड़े कष्ट से अपनी स्वाभाविक भंगिमा को बनाये रखा। होठों पर जबरदस्ती मुस्कान लादकर और बनावटी भाषा-कौशल के सहारे। उसने नकली गुस्से के साथ कहा, 'आखिर तुमने मेरी चिट्ठी को खोला ही क्यों था ?' 'कैसे नहीं खोलता, हुजूर सरकार! वैसे इस चिट्ठी का इकलौता वारिस तो मैं ही था,' भूपाल ने चुटकी ली, 'तुम्हारे करुणावतार भैया ने तो बड़े स्नेह के साथ मुझे बताया है कि बाम्हन की गाय की तरह एक बड़ी ही शानदार नौकरी उनके हाथ में है। इसमें काम तो कुछ है ही नहीं, लेकिन तनख्वाह बहुत अधिक है। बस...सारा कुछ मुझ पर निर्भर है कि मैं उन पर कृपा करूँ और उस खाली कुर्सी को सुशोभित करूँ।...' 'हे भगवान ! तो तुम अब तक विराजमान हो।'... 'तुमने कनक की लाज रख ली।'... अगर भूपाल की बातों में इतना व्यंग्य न होता तो कनक की आँखों से खुशी के आँसू बह निकलते।...उसने बड़ी मुश्किल से अपनी उद्विग्नता को छिपाते हुए चुहल के अन्दाज में कहा, 'तो फिर देर किस बात की है? माँ दुर्गा का नाम लेकर निकल पड़ो।...किसे पता है कि देर हो जाने पर वह कुर्सी भी हाथ से खिसक जाए ?'

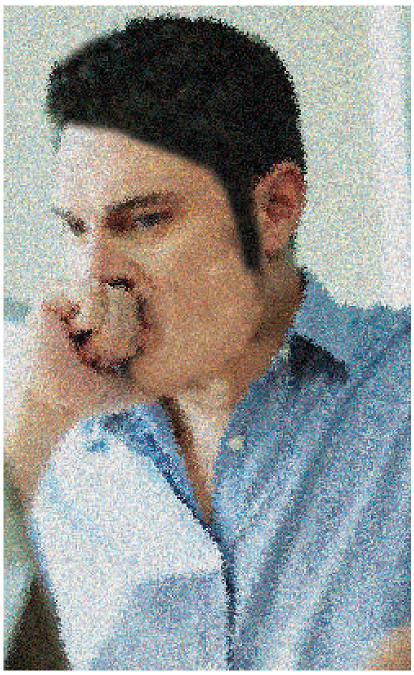

भी उस स्तर तक नहीं सीख पायी कि उसकी बदौलत कोई सुविधा जुटा पाती। आखिर वह करे भी क्या? उसमें काम करने या सीखने की जितनी क्षमता थी, वह सब वह पहले ही कर चुकी है...अब शंख की शाखा और प्लास्टिक की जुड़वाँ चूड़ियों को धो-धोकर पीने से कहीं किसी का पेट भरता है?

तकलीफ के ये दिन कैसे भी नहीं कटते ! एक-एक दिन एक साल की तरह बीत रहे हैं। ऐसा नहीं है कि वह सिर पर सवार दिनों को बाल की लटों की तरह झटक दे। उसे एक-एक घण्टे और घण्टों में बँधे एक-एक मिनट और सेकेण्ड को झेलना था। स्कूल से वापस आते ही भात खाने देने का लालच दिखाकर बच्चों का मुँह सुखाये बैठे देखना भी वह किसी तरह झेल रही थी लेकिन जब स्कूल की फीस चुकाये न जाने के अपराध में उन्हें वहाँ अपमानित कर घर वापस भेजा जाने लगा तो वह जैसे तिलमिला उठी थी।

और तभी एकदम से कातर होकर उसने भैया को चिट्ठी लिखी थी।

अब इसमें बातें बढ़ा-चढ़ाकर या रो-धोकर भले ही न की गयी हों लेकिन उसमें हल्का-सा उलाहना तो था ही। भूपाल के साथ इस बारे में कोई सलाह-मशविरा करने का साहस भी वह जुटा न पायी थी। पता नहीं, सुनील भैया का क्या उत्तर आए? अगर बात बन गयी या मौका मिला तो वह भूपाल से इस बारे में जरूर बताएगी।

इतनी परेशानियों के बाद भी क्या भूपाल नरम नहीं पड़ेगा? कम-से-कम कनक के सामने तो उसे शर्मिन्दा होना चाहिए। या फिर बच्चों की जिम्मेदारी की खातिर ही सही। इधर से तो एक तरह से निश्चिन्त हो चुकी थी कनक। उसे अगर कोई चिन्ता लगी थी तो वह थी सुनील की ओर से। अगर वह कहे कि नौकरी तो किसी की बाट नहीं जोहती कनक बहन...या पेड़ों पर नहीं फलती...तो वह कर भी क्या सकता है ? कहाँ से लाए वह ? वह तो यही कहेगा- 'मैंने जब कहा था...?'

आखिरकार यही हुआ।

चिट्ठी भी किसी दूसरे ने नहीं, भूपाल ने ही खोली थी। कनक ने बड़े कष्ट से अपनी स्वाभाविक भंगिमा को बनाये रखा। होंठों पर जबरदस्ती मुस्कान लादकर और बनावटी भाषा-कौशल के सहारे। उसने नकली गुस्से के साथ कहा, 'आखिर तुमने मेरी चिट्ठी को खोला ही क्यों था ?' 'कैसे नहीं खोलता, हुजूर सरकार! वैसे इस चिट्ठी का इकलौता वारिस तो मैं ही था,' भूपाल ने चुटकी ली, 'तुम्हारे करुणावतार भैया ने तो बड़े स्नेह के साथ मुझे बताया है कि बाम्हन की गाय की तरह एक बड़ी ही शानदार नौकरी उनके हाथ में है। इसमें काम तो कुछ है ही नहीं, लेकिन तनख्वाह बहुत अधिक है। बस...सारा कुछ मुझ पर निर्भर है कि मैं उन पर कृपा करूँ और उस खाली कुर्सी को सुशोभित करूँ।...'

'हे भगवान ! तो तुम अब तक विराजमान हो।'... 'तुमने कनक की लाज रख ली।'...

अगर भूपाल की बातों में इतना व्यंग्य न होता तो कनक की आँखों से खुशी के आँसू बह निकलते।...उसने बड़ी मुश्किल से अपनी उद्विग्नता को छिपाते हुए चुहल के अन्दाज में कहा, 'तो फिर देर किस बात की है? माँ दुर्गा का नाम लेकर निकल पड़ो।... किसे पता है कि देर हो जाने पर वह कुर्सी भी हाथ से खिसक जाए ?'

'अच्छा !' दुबले-पतले और नसीले हाथ को ऊपर उठाकर और मुट्ठी से अपने बालों को जोर से जकड़कर भूपाल ने कहा, 'और तुम भी फूल, तुलसी दल और गंगाजल लेकर तैयार रहना।' 'फूल और तुलसी ?' कनक ने हैरानी से पूछा, 'क्यों ?'

'क्यों नहीं भला ? मनोकामना पूरी होने पर इष्ट देवता को सन्तुष्ट करने की यही तो रीत है... । एकदम सीधी बात है, भैया की दया से रोटी और कपड़े की किल्लत जो दूर होगी।...भैया क्या हुए...भगवान के भूत और भभूत हो गये।' कनक ने तिलमिलाकर कहा, 'तो इसमें मजाक वाली ऐसी क्या बात हो गयी? आखिर अपने लोगों और जान-पहचान वालों को लोग नौकरी में लगाते हैं कि नहीं? और अगर उन्हें नौकरी लगवायी जाती है तो क्या वे नौकरी लेना नहीं चाहते ?' 'लेंगे क्यों नहीं? जरूर लेंगे...लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि मैं तो उनका 'आत्मीय जन' हूँ...कोई ऐरा-गैरा दूर का रिश्तेदार नहीं। सारे नाते-रिश्तेदारों में सबसे नजदीकी...'

कनक ने इस मौके पर अपनी नाराजगी को दबाने या छिपाने की कोशिश नहीं की। उसने तीखे स्वर में कहा, 'तुम्हारे लिए भला वह आत्मीय जन क्यों होने लगा-वह तो सड़क पर चलता हुआ एक अनजाना-सा आदमी है। लेकिन याद रखना...कि वह मेरा सगा भाई है।'

'तो फिर तुम्हीं नौकरी कर लो न जाकर ?' भूपाल कड़वी बातें नहीं बढ़ा रहा था... जहर उगलकर लौट रहा था। इस बीच उसके सिर में जोर का दर्द होने लगा था। उसे बातें करने में भी तकलीफ होने लगी थी।...भात न खाकर भी वह कुछ दिन गुजार सकता था लेकिन चाय के बिना वह रह नहीं सकता था। तो भी...उसे चाय के बिना रहना तो पड़ ही रहा है। और तभी शरीर उससे बदला ले रहा है। भूपाल अपने बिछावन पर पड़ जाना चाहता था लेकिन कनक ने रास्ता काटते हुए जले-भूने स्वर में पूछा-'तुम समझते हो... तुम्हारे मन में जो आएगा...तुम वही करोगे? तुम्हें पता भी है कि घर-संसार कैसे चल रहा है...देख नहीं पा रहे...?'

लेकिन भूपाल ने भी छूटते ही उत्तर दिया, 'यूँ ही देख भी कैसे सकता हूँ? टपाटप राजभोग निगल रहा हूँ...किमखाब के गद्दे पर सो रहा हूँ...बाहर-भीतर क्या हो रहा है...कुछ पता नहीं चल रहा।'

'राजभोग तुम्ही नहीं...सभी भकोस रहे हैं।' कनक जैसे चीख पड़ी, 'बच्चों के सुखे चेहरे की तरफ कभी देखा भी है तुमने? मैं ठहरी औरत जात...तो भी मेरे जी में यही आता रहता है कि बाहर सड़क पर निकल जाऊँ और छोटा-मोटा जो भी काम मिले, करूँ...उससे गुजारे लायक कुछ तो पैसे मिलेंगे। और एक तुम हो मर्द की औलाद...तुम्हें जरा शरम नहीं आती। सर-दर्द के बहाने तकिये पर तकिया चढ़ाये पड़े रहते हो।...और ऊपर से झूठा गुमान भी कैसा, 'साले के मातहत काम नहीं करूँगा...अरे देख लेना उनके ही सामने तुम्हें हाथ फैलाना पड़ेगा।' 'वैसी नौबत आने के पहले मैं सड़क पर भीख माँगना पसन्द करूँगा,' कहता हुआ भूपाल फिर अपने कमरे की तरफ बढ़ चला।

लेकिन कनक ने भी तय कर लिया था चाहे जो हो जाए...वह उसे आज इस तरह बख्शेगी नहीं। आज वह सारा आसमान सिर पर उठा लेगी।

आज का एक-एक पल कनक के लिए जहर की तरह है।...इस जहर से भूपाल का चेहरा नीला हो उठा है। सचमुच... वैसा ही अपमानजनक और मौत की तरह भयानक... । सुनने में भले ही लगे लेकिन उसकी मन की आँखों के सामने सब कुछ

साफ दिखता है। भूपाल का चेहरा देखते ही उसके रोम-रोम में जैसे आग सुलग उठती है।

क्यों...भला क्यों...चारों हाथ-पाँव सलामत रहने के बावजूद भूपाल इस तरह काहिलों की तरह क्यों पड़ा रहता है?...भूपाल अपने तईं काहिल नहीं जान पड़ता...लेकिन कनक चाहती है कि भूपाल और भी कोशिश कर देखे। पास-पड़ोस से अखबार माँगकर पढ़ने और खाली जगहों के विज्ञापन देखने भर या कभी-कभार एकाध जगह पर साक्षात्कार देना ही काफी नहीं है। इससे भी बढ़कर कोशिश करने की जरूरत है।...रास्तों पर घूम-घूमकर...हाथ जोड़कर लोगों के पाँव पकड़कर...कुली या मोटिया का काम कर...रिक्शा खींचकर...जैसे भी हो...भूपाल को घर में दो पैसे कमाकर ल ाना है।...

पहले के दिनों में अपने पति के हताश और दयनीय चेहरे को देखकर कनक के सीने में करुणा का ज्वार-सा उमड़ा करता था...वह चाहती थी कि

भूपाल घर-संसार की तमाम परेशानियों से मुक्त रहे। लेकिन अब उसके मन में ऐसी कोई सहानुभूति पैदा नहीं होती।

तब भूपाल के मुँह से किसी तरह की कोताही की बात सुनती थी तो वह उसे रोक दिया करती थी या हँसकर उड़ा देती थी। यहाँ तक कि शास्त्र वचन का हवाला देती हुई उसे दिलासा देती थी, 'पुरुषों के मन की दस दशाएँ होती हैं...'

वही कनक आज मौके-बेमौके भूपाल की कोताही और लापरवाही को फटकार सुनाती रहती है। कोई बात चली नहीं कि उसे दुरदुरा देती है। स्नेह, सहानुभूति, करुणा, प्रेम और ममता की सभी धाराएँ सूख गयी हैं। सूख गयी हैं...भूख से बिलबिलाते नीरू और नूपुर की गर्म उसाँसों की आँच में...और उसका मन कठोर हो गया है अपमानित सनत् और सुधीर की सुनी और फीकी नजरों की चाबुक से।

चार बच्चों की चार जुड़वाँ आँखों का मौन तिरस्कार कनक को लगातार बींध जाता था। बच्चों के स्नेह से भी अधिक जो बात उसके कलेजे को गहरे बांध जाती थी वह थी खुद अपनी ही आँखों में गिरा देने वाली शरम। उसके जी में यही आता कि कैसे वह जमीन में गड़ जाए...जब भात परोसकर फीकी दाल की कटोरी आगे बढ़ाने के सिवा उसके पास कुछ भी तो नहीं रहता। धरती फटे और उसमें वह कैसे समा जाए...! उसे एक के बाद दूसरे और आने वाले हर दिनों में 'तबीयत खराब है' का बहाना बनाना पड़ता है...'क्या करूँ बेटे...खाना ठीक से बना नहीं पायी।'

अगर ऐसी स्थिति में हाथ-पाँव में कहीं चोट या खरोंच लग जाए तो शायद 'आयोडिन' तक न मिले। पेट दुखने लगे तो सोंठ का पानी चाहिए...और वह सब भी कहाँ से आए ? यह सब बताने की जरूरत पड़ सकती है...कनक को ऐसा बुरा सपना भी देखना पड़ सकता है, ऐसा उसने कब सोचा था ?

घर-गिरस्ती के काम आने वाली हर एक मौजूद चीज धीरे-धीरे गायब होती चली जा रही है और वह फिर दोबारा नहीं दीखती। कपड़े-लत्ते, जूते-मोजे सब धीरे-धीरे विदा हो रहे हैं...सारा रख-रखाव बिखर गया है। भूपाल यह सब समझ नहीं पाता।

अगर बच्चों ने कभी किसी बात पर जरा-सा भी असन्तोष प्रकट किया तो उसका जी जल जाता। उसका तर्क भी कुछ अजीब-सा था। भूपाल कहा करता-'ये कोई पराये नहीं हैं...नाते-रिश्तेदार नहीं हैं, अरे घर के बच्चे हैं। अगर ये भी अपने बाप का दुख नहीं समझेंगे तो बाप को क्या पड़ी है कि इनकी आरती उतारता रहे। मैंने कोई इनकी तमाम जिम्मेदारियाँ उठाने का ठेका ले रखा है।'

कनक की बातों से भूपाल के तर्क का कोई ताल-मेल नहीं। तभी, भूपाल की बात सुनकर कनक के तन-मन में आग-सी लग जाती है।

अपनी तीखी आवाज में ढेर सारी कड़वाहट घोलते हुए कनक बोली. 'भीख माँगोगे? फिर तो बड़ी मर्दानगी बची रहेगी? है न ? सारी हेठी तो भैया के दफ्तर में काम करते ही होगी...? और भैया की नौकरी भी कैसी है...उनका पाँव जो दबाना है...उनके तलुए में तेल जो लगाना है।'

'कोई खास फर्क नहीं है।'

'तो फिर तुम नहीं करोगे नौकरी ?'

'नहीं।'

'तो फिर भैया को क्या जवाब दोगे?'

'कोई जरूरी है उत्तर देना ? तुम चाहो तो जवाब दे देना। मुझे उसकी कोई खुशामद नहीं करनी है।'

कनक का चेहरा घृणा और गुस्से से विकृत हो गया। वह चिडचिडे स्वर में बोली, 'मुझे पता है तुम भैया से इतना क्यों चिढ़ते हो। वे एक बड़े अफसर हैं, गाड़ी पर घूमते-फिरते हैं...तुम्हारा कलेजा सुलगता रहता है। लेकिन यह याद रखना...मैं अब तुम्हारे कहने में नहीं रहूँगी। अगर हुआ तो भैया के पास चली जाऊँगी या फिर किसी के यहाँ झाड़ू-पोंछा करूँगी। अब यही तो देखना है कि तुम्हारी अकड़ भला किस बात और बूते पर टिकी रहती है।'

भूपाल और कनक आज एक-दूसरे को काट खाने वाले खूखार जानवर की तरह दिख रहे थे। वे एक-दूसरे को फाड़ खाने पर उतारू थे...वर्ना भूपाल की आँखों में ऐसी आग क्यों जल रही होती ? उसकी बोली में ऐसी कड़वाहट क्यों थी ?

'जब कमाई ही करनी है तो चाकरी करने क्यों जाओगी...और भी तो कई तरीके हैं।'

'क्या कहा तुमने...क्या कहा ?'

'न...मैंने कुछ कहा नहीं...लेकिन भैया-भाभी की खुशामद करते हुए उनके यहाँ जाकर अड्डा जमाना भी कुछ बुरा नहीं होगा।...उनकी जूठन-कूटन से भी किसी-न-किसी तरह पेट भर ही जाएगा।'

'ठीक है...मैं वही करूँगी...अगर न किया तो मैं भी...' कनक के होठों तक आकर एक कठोर और कड़वी कसम अटक गयी। क्योंकि ऐसी कसमें खाने का अभ्यास न था। उसका गला रुंध गया।

दूसरे दिन सुबह...भूपाल घर से बाहर निकल गया। शाम ढल गयी...रात हो आयी उसका कोई पता न था।

कनक गुस्से में भरी थी। तभी नीरू दौड़ती-हॉफती माँ के पास पहुँची और बोली, 'माँ...बड़े मामा आ रहे हैं।'

'भैया...'

उसे अपने पाँवों के नीचे से जमीन खिसकती-सी लगी। आँखों के सामने अँधेरा-सा छाने लगा।...वह क्या जवाब देगी...क्या बहाने जुटाएगी ? वह भूपाल को धक्के मारकर तो उनके पास नहीं भेज सकती।...खुद जाकर तो वह नौकरी माँगने से रहा।...तो फिर क्या कहे...क्या करे ?

क्या वह भूपाल की बीमारी का बहाना बनाए? या फिर उनसे यह कह दे कि... भैया...तुमको कुछ लिखकर बताना ही मेरी गलती थी।...उनकी तबीयत इन दिनों काफी

MONAD UNIVERSITY
Established by UP State Govt. Act 23 of 2010 & U/S 2(f) of U.G.C Act 1956
Recognized & Approved by : UGC UP Govt PCI BCI NCTE AIU

आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

बिगड़ गयी है। आजकल वह काम नहीं कर पाएंगे।

क्या सुनील भैया उसकी बात पर यकीन कर लेंगे। जो आदमी घर से बाहर निकल पड़ा है, उसको बीमार बताना इस मौके पर एक तरह का मजाक या बात का बतंगड़ विलास ही तो है। क्या उनकी नजर इस घर की बदहाली पर नहीं पड़ेगी?

भैया के यहाँ आने पर, कनक में इतनी भी क्षमता नहीं है कि वह उन्हें एक कप चाय तक पिला सके। क्या उसके भैया सुनील इस बात को नहीं समझते ? ऐसा न होता तो कभी-कभार जब इधर आना हुआ तो वे छूटते ही कह देते हैं, 'तू खाने-पीने का कोई हंगामा खड़ा न करना कनक... । तुझे पता नहीं मेरा पेट...बड़ा ही अपसेट है।' इसके बाद भी क्या अब भी अपना सड़ा-गला अहंकार लेकर पड़ा रहेगा भूपाल और क्या सुनील उसकी इस मानसिकता को समझ नहीं पाएगा।

वह क्या कहे भूपाल को...और किन शब्दों में उसे बुरा-भला कहे ? क्या वह भूपाल के बारे में जली-कटी सुनाकर उसे और भी जलील न करे?

'अरी कनक...कहाँ है रे...तू...कैसी है?'

भैया की स्नेहिल पुकार कनक के सीने में हथौड़ी की चोट की तरह पड़ी।

'भैया ?' अपने फटे आँचल को समेट उसे अपनी साड़ी की तहों के बीच छुपाते हुए वह आगे बढ़ आयी और बोली, 'अरे भैया... तुम ! अबकी बार तो तुम बहुत दिनों के बाद आये।' 'समय ही कहाँ मिल पाता है रे? और आजकल काम का इतना दबाव है कि...'। न आ पाने की वजह क्या हो सकती है, इसे अपनी भलमनसाहत के नाते छुपाते हुए भी वह जाहिर थी। भूपाल के स्वभाव से उखड़कर ही सुनील भैया ने इन दिनों आना-जाना कम कर दिया है।

'क्यों, आखिर काम इतना बढ़ कहाँ से गया?' हालांकि कनक को अपना यह सवाल खुद ही बेमतलब-सा जान पड़ा।

'अरे एक अफसर है...साला बम्बई जाकर जम गया है...! खैर, भूपाल को मेरी चिट्ठी तो मिली है न...?'

'तुम्हारी चिट्ठी ?' कनक जैसे आकाश से गिरी। तुमने उसे चिट्ठी भेजी थी ?' उसने हैरानी से पूछा।

'हाँ...रे...।' सुनील ने आक्षेप भरे स्वर में पूछा, 'उसे नहीं मिली? तभी मुझे शक हो रहा था। तू देख रही है न...यह आजकल डाक की क्या हालत हो गयी है ? दमदम से कलकत्ता...आखिर कितने दूर हैं दोनों... यही १५-२० किलोमीटर...और चिट्ठी आने में पाँच दिन लग जाएँगे?'

'छी...छी...।' सुनील ने कुछ सोचते हुए फिर जोड़ा, 'परसों शाम को ही चिट्ठी डलवायी है न...! खैर...मैं जरा घूम-फिर आऊँ। और हमारे बाबू साहब कहाँ हैं... उनकी मति-गति फिरी है ?'

'हाँ, भैया...और मैं भी यही बताना चाह रही थी...काफी भाग-दौड़ के बाद उन्हें एक काम मिला है...किसी बैंक में।'

'अच्छा...काम मिल गया है ?' सुनील की आँखें फटी रह गयीं...'भूपाल को नौकरी मिल गयी ?'

'हाँ, भैया...उन्होंने किसी जान-पहचान वाले को बता रखा था-जिस दिन मैंने तुम्हें लिखा था। उस दिन तक तो बात बनी नहीं थी लेकिन दूसरे ही दिन उन्होंने आकर बताया कि काम मिल गया है।'

सुनील ने निराशा के स्वर में कहा, 'इतने दिनों तक बेकार बैठा रहा और ऐन वक्त पर उसे दूसरी नौकरी भी मिल गयी? इधर मैं कितना परेशान रहा...कितनी मुश्किलों से उसके लिए एक अच्छी-सी नौकरी का जुगाड़ करा पाया।'

अबकी बार कनक के हैरान होने की बारी थी...'क्या...तुमने सचमुच उनके लिए नौकरी का बन्दोबस्त कर दिया? और वह भी पलक झपकते?...सचमुच? मैं तो कल ही हँसी-हँसी में उनसे कह रही थी...चलो नसीब ने पलटा तो खाया...और हो सकता है, भैया भी तुम्हारे लिए कोई-न-कोई नौकरी अवश्य जुटा देंगे...तो पता है उन्होंने क्या कहा, 'लगता है...नौकरी ऐसे ही पेड़ों पर फला करती है।...बस यही तो सात दिन पहले अर्जी दी थी और नौकरी मिल गयी।... और सचमुच ऐसा ही हुआ भैया ? अगर नौकरी इतनी आसानी से मिलनी थी तो वे काहिलों की तरह इतने दिनों तक घर में क्यों बैठे रहे?'

कनक यह सब पूछकर बड़ी हैरानी से और बड़े भोलेपन से भैया की ओर ताकती रही...एक नन्ही बालिका की तरह। कुछ ऐसी मासूमियत से कि दीन-दुनिया के बारे में उसे कुछ नहीं मालूम! उसे तो बस यही जान पड़ता था कि अगर मर्द घर में बेकार बैठा हो तो काहिल ही हो जाता है।

सुनील थोड़ी देर तक चुप बैठा रहा... फिर उसने कनक से पूछा, 'तू किस बैंक के बारे में बता रही थी ?'

'नाम तो मैं नहीं जानती भैया...लेकिन बता तो किसी बैंक के बारे में ही रहे थे। उनके किसी दोस्त के चाचा या ताऊ वहाँ कैशियर हैं। कह रहे थे पगार भी अच्छी ही मिलेगी...फिर तुमने जो इतना कुछ किया... उसका क्या होगा, भैया !'

'हाँ...थोड़ी-बहुत परेशानी तो होगी... और क्या? वैसे बड़ी कोशिश की थी। और यह भी पता नहीं चल रहा है कि आखिर उसे वहाँ काम कैसा मिला? वैसे यह काम सचमुच अच्छा था। आगे तरक्की मिलने की भी उम्मीद थी।'

'फिर तो यह तुम्हारे लिए बड़ी परेशानी की बात हुई ? ऐसा नहीं हो सकता कि तुम इसे किसी और को दे दो...हाँ...?' कनक ने पूछा और आगे जोड़ा, 'वैसे ये भी जान-पहचान वाले हैं...दोस्त के चाचा...।'

सुनील उठ खड़े हुए।

'यह क्या...? इतनी जल्दी जा रहे हो... ऐसा नहीं होगा...आज मुंह मीठा कराये बिना में तुम्हें जाने न दूँगी...अब जैसा भी है...खबर तो अच्छी है। अरे ओ...सुन तो बेटे...,' कहती हुई वह अन्दर वाले कमरे में गयी और बेटे से बड़ी धीमी आवाज में गिड़गिड़ाते हुए बोली, 'सुन बेटे...दौड़कर जा और मामाजी के लिए दो बर्फी तो ले आ, पैसे में बाद में चुका दूँगी।...दूकानदार से कहना में हड़बड़ी में दौड़ा चला आया।'

'क्या फिर उधार लाना होगा...नहीं... भले ही तू मेरा गला काट दे...' और यह कहकर सनत् ने खिड़की की तरफ मुँह फेर लिया।...'क्या पता मामाजी पढ़ाई-लिखाई के बारे में कुछ पूछ बैठे ? इसी डर से तो मैं अब तक बाहर नहीं निकला था।'

'इससे क्या हो गया बेटे', कनक की आवाज धीरे-धीरे और भी धीमी और फीकी पड़ गयी।...तुम लोगों ने तो जैसे कसम ही खा रखी है... । जरूरत पड़ने पर क्या मुहल्ले की दूकान से लोग सामान उधार नहीं लाते हैं?'

'वही लाते हैं जो उधार चुका पाते हैं,' सनत् ने खिड़की से बाहर ताकते हुए ही कहा।

'तो तुम यही कहना चाहते हो कि मैं उसका उधार नहीं चुकाती। ठीक है...मैं देखती हूँ, कहीं कुछ है।...आखिर बड़े बाप के बेटे जो ठहरे तुम !'

पिछवाड़े के दरवाजे से पीछे घूमकर कनक रसोईघर में आयी।

है...अभी भी एक रुपया बचा है। पौष-संक्रान्ति के दिन उसने एक रुपये के सिक्के के साथ 'बाउनी' बाँधा था...खुली छप्पर के नीचे जाले में वह पोटली आज भी बँधी हुई है। फूस से मढ़ा और सिन्दूर से पता वह सिक्का...! अभाव के राक्षसी पंजे ने आज तक कम-से-कम उसकी तरफ हाथ नहीं बढ़ाया था। शायद उसने बढ़ाने का साहस किया भी न था। कनक का हाथ वहां तक पहुंचेगा? सहस्र बाहु की तरह अपना जाल फैलाये काल की सीमा में ?.... लेकिन इसके बिना चारा भी क्या है?

बाहर वाले कमरे में भैया बैठे हैं। पति को नौकरी मिली है...इस खुशी में वह उनका मुंह मीठा कराएगी...ऐसा ही तो कहकर आयी है वह !

सिक्का में लगा सिन्दूर पोंछते-पोंछते उसके पुराने आँचल में छेद हो गया।... लेकिन तो भी उसे इस बात का सन्देह था... कि कहीं उसकी विवशता का अन्तिम चिन्ह तो नहीं मिट गया...सिन्दूर का वह दाग...। कहीं दुकानदार इस बात को समझ तो नहीं जाएगा?

और सनत् ... कहीं सनत् इस बात को ना समझ ले।

लक्ष्मी के नाम पर चढ़ाये गये रुपये से बरफी मँगाकर खिलाने के बारे में...वह कोई तर्क नहीं जुटा पायी। लेकिन क्या कनक भी कोई दलील दे सकती थी इस बारे में।

.....लपलपाती आग के हाथों से अपने को बचाने के लिए आदमी पानी में क्यों कूद पड़ता है भला ? और तब तैरना जानने और न जानने का सवाल ही कहाँ रह जाता है?

क्या उस समय डूब जाने का डर होता है? ■

आशापूर्ण देवी
(अनुवाद : रणजीत कुमार साहा)

With Best Compliments
from
SHREEJI INDUSTRIES
Authorised Dealer JSW Steel Limited UTTAM Uttam Galva Steels Limited
CRCA/GP/GC/PPGI COILS/SHEETS/PPGI COILS & SHEETS
Regd. Office: Gut No. 286, Kondi Village, Poona Road, KONDI, Dist. Solapur. Tel: Godown: 2357718
Admn. Office: 301, Jeeevan Anand, Jeevan CHS Building No. 4, M.G. Cross Road No.4, Kandivali (W), Mumbai-400 067. Tel: 022- 28010222

रामू काका

आर. श्रीवास्तव

मेरे चेहरे का रंग पढ़ कर रामू काका समझ गए कि मुझे दुःख पहुँचा है। अतः मुझे सांत्वना देने के लिए बोले, 'चलो बबुआ कोई नाही है तो क्या हुआ, मैं तो हूँ। चलो हम तुम्हारे लिए गरमा गरम पकौड़ा बनाते हैं अउर चाय पीलाते हैं। तोहार बाबूजी दार्जिलिंग से चायपत्ती लाये हैं। बड़ा बढ़िया चाय का स्वाद है।'

'अरे! बबुआ। तुम कईसे-कईसे यहाँ पहुँच गए।' रामू काका अचानक मुझे दरवाज़े पर खड़ा पाकर हैरान थे। दरवाज़ा खोलकर झट मुझे अपनी गोद में उठाना चाहा। लेकिन अब मैं इतना भारी हो गया था कि काका उठाने के अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाये।

मै हँसते-हँसते उनसे लिपट गया और बोला, 'काका अब मैं बड़ा हो गया हूँ। मुझे अब तुम गोद में नहीं उठा सकते।' काका ने तुरंत मुझे अपने गले से ल गा लिया।

रामू काका मेरे घर में लगभग बीस वर्षों से नौकरी करते हैं। छोटा कद, गहरा रंग, घुटने तक धोती और बाहों वाली गंजी पहने काका कभी बाल नहीं झाड़ते। ल `किन सुबह उठकर नहा ज़रूर ल `ते। हमारे घर में रसोई बनाने से लेकर बागवानी और घर की पहरेदारी तक का सारा ज़िम्मा रामू काका ही सम्भालते है। वे कहाँ से आये और कैसे आये ये तो मुझे नहीं पता लेकिन इतना पता है की वे आज तक कभी अपने घर नहीं गए। वे बताते हैं कि उनका अब कोई नहीं है। मुझसे वे बहुत प्यार करते हैं।

मेरे पिताजी अक्सर अपने बिज़नेस के सिलसिले में बाहर ही रहते हैं। माँ भी कई सामाजिक संगठनों से जुड़ी हैं। इसलिए वो भी घर में बहुत कम समय दे पाती हैं। पिताजी कहते हैं कि माँ की सामाजिक पहचान उनके व्यवसाय वृद्धि में बहुत सहायता प्रदान करती है। इसलिए मेरा बचपन रामू काका के साथ ही ज़्यादा गुज़रा है। वे पढ़े-खे नहीं हैं लेकिन बहुत सारी कहानियाँ जानते हैं। मैं रोज़ उनसे कहानियाँ सुनता। मुझे याद है जिस दिन मेरे मम्मी-पापा मुझे पहली बार होस्टल में रहने के

लिए मुझे छोड़ने जा रहे थे रामू काका खूब रोये थे। मैं तब छह वर्ष का था और पहली कक्षा में पढ़ने जा रहा था। मुझे भी अपनी मम्मी-पापा से बिछुड़ने से ज़्यादा दुःख रामू काका से बिछड़ने का था। तब मेरे नहीं आ पाते। मम्मी या पापा ही आया करते हैं वो भी फ़ीस देने। लोकिन पिछले आठ महीनों से मेरे घर से कोई भी मेरे पास नहीं आया। पिछले महीने माँ ने फ़ोन पर बतलाया था कि वो इस दीपावली में मेरे पास आएँगी। लेकिन अभी तक नहीं आ पाई।

आज बाल दिवस है मैंने सोचा क्यों न मैं घर पहुँच कर मम्मी-पापा को सरप्राइज़ दूँ और उनका आशीर्वाद लूँ। इसलिए सुबह-सुबह हॉस्टल से भाग कर घर पहुँचा हूँ।

'मम्मी -पापा घर पर हैं तो?' मैंने रामू काका से जानना चाहा।

'नाही बबुआ उ लोग घर में नाही हैं। मालिक तो तीन दिन से नाही है अउर परसु आवेंगे। मालकिन तो सुबहे-सुबहे निकल गईं। महिला हलोगन आई थी कवनो बचवन सन का (बच्चों का) परगुराम (प्रोग्राम) है। उहवें गई है। आज ना आ पावेगी। कल आवेंगी।' रामू काका ने जीतनी सहजता से बताया मेरे मन ने इस बात को उतनी सहजता से नहीं ग्रहण किया। मेरे चेहरे का रंग पढ़ कर रामू काका समझ गए कि मुझे दुःख पहुँचा है। अतः मुझे सांत्वना देने के लिए बोले, 'चलो बबुआ कोई नाही है तो क्या हुआ, मैं तो हूँ। चलो हम तुम्हारे लिए गरमा गरम पकौड़ा बनाते हैं अउर चाय पीलाते हैं। तोहार बाबूजी दार्जिलिंग से चायपत्ती लाये हैं। बड़ा बढ़िया चाय का स्वाद है।'

'नहीं काका मुझे नहीं पीनी पिताजी की लायी चाय। मैं तो तुम्हारे हाथों की बनी तुलसी और अदरख वाली चाय पिऊँगा। बहुत दिनों से नहीं पीय।'

ऐसा नहीं कि मुझे दार्जिलिंग चाय नहीं पसंद है लेकिन मुझे पिताजी से चिढ हो रही थी इसलिए मैं उनकी लायी चाय पीने से इंकार कर दिया।

रामू काका एक तरफ पकौड़े तल रहे थे और दूसरी ओर तुल सी और अदरख वाली चाय बना रहे थे। वे बहुत ख़ुश थे। 'बबुआ तू तो अब जवान हो गए हो,' रामू काका मेरे पूरे शरीर को निहार रहे थे।

मैंने हँसते -हँसते कहा, 'हाँ काका अब मेरे लिए कोई दुल्हनिया खोजो।'

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

'बबुआ उठो। भोजन तैयार है,' काका के आवाज़ से मेरी निद्रा भंग हुई। मैंने हाथ मुँह धोकर खाने के मेज़ पर नज़र डाली। फली-फुली कचाड़ियाँ, गोभी की सब्जी, खीर, गुलाब जामुन, मीठी चटनी, सलाद, पापड़। काका को मेरी पसंद अब तक याद है।' मम्मी-पापा कैसे हैं,' मैंने खाना खाते-खाते पूछा। 'मालिक को घर आये तो बहुते-बहुते दिन हो जात है। मालकिन भी कहाँ घर में रह पावत है। कोई ना कोई रोज बुलाई लेत है।' 'दोनों लोगों कि मुलाक़ात भी हो पाती है कि नहीं।' 'महीनों बीत जावत है। ये कोई नई बात नहीं थी इसलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ।

'नाही बबुआ। नाही। अभी तू शादी-वादी नाही करना। पढ़-लिख लो। डाक्टर बाबू बन जइयो तो तोहार ला सुन्दर दुल्हनिया तोहार बाबूजी लाइ दिहे,' काका को शायद लगा कि मैं सचमुच शादी करना चाहता हूँ।

'लेकिन काका मैं तो तुम्हारे पसंद कि दुल्हनिया से शादी करूँगा,' मैंने भी अपनी शर्त रख दी।

'ठीक है मैं तुम्हारे लिए परी जैसा दुल्हनिया खोज दूँगा,' काका बोले भी जा रहे थे और पकौड़े तले भी जा रहे थे।मैंने कहा, 'काका केवल पकौड़े तलते रहोगे या फिर खिलाओगे भी।' 'अभी लाया बबुआ,' काका ने तुरंत गरमा-गरम पकौड़े और तुल सी-अदरख की चाय मेरे सामने परोस दी।

'अब अपनी हाथों से एक पकौड़ा खिला भी दो,' मैंने काका से निवेदन किया।

'नाही मैं ना खिलाऊँगा। तुम दाँतों से हाथ काट देते हो,' काका को याद था। जब भी कभी काका बचपन में मुझे कुछ खिलाना चाहते थे तो मैं जानबूझ कर उनके उँगलियों को काट लेता था। काका को जितना दर्द होता उससे ज़्यादा वो चिल्लाते और मैं खूब हँसता। 'काका अब मैं बड़ा हो गया हूँ। नहीं काटूँगा,' मैंने उनको आश्वस्त किया।

काका एक-एक कर मुझे सारे पकौड़े खिला डाले। उनके हाथों से पकौड़े खाने से मुझे जितना आनंद मिला शायद उतना आनंद श्रीराम को शबरी के बेर खाने से भी नहीं मिला होगा। 'अब तुम थोडा आराम करो। मैं तुम्हारे लिए भोजन तैयार कर दूँ।' काका ने भोजन के लिए मेरी पसंद को नहीं जानना चाहा क्योंकि वो मेरी एक-एक पसंद को बचपन से जानते थे। 'काका तुम मुझे आज कहानियाँ नहीं सुनाओगे,' मैं जब तक इस घर में था उनकी कहानियाँ सुने बगैर नहीं सोता था। काका कहानी सुनाने लगे। कहानी सुनते-सुनते मैं कब सो गया मुझे पता ही नहीं चला।

'बबुआ उठो। भोजन तैयार है,' काका के आवाज़ से मेरी निद्रा भंग हुई। मैंने हाथ मुँह धोकर खाने के मेज़ पर नज़र डाली। फुली-फुली कचाड़ियाँ, गोभी की सब्जी, खीर, गुलाब जामुन, मीठी चटनी , सलाद, पापड़। काका को मेरी पसंद अब तक याद है।'मम्मी-पापा कैसे हैं,' मैंने खाना खाते-खाते पूछा।

'मालिक को घर आये तो बहुते-बहुते दिन हो जात है। मालकिन भी कहाँ घर में रह पावत है। कोई ना कोई रोज बुलाई लेत है।' 'दोनों लोगों कि मुलाक़ात भी हो पाती है कि नहीं।'

'महीनों बीत जावत है। कभी मालिक आवत है तो मालकिन नाही रहत है अउर मालकिन आवत है तो मालिक नहीं। कबो कभार दोनों मिल जावत है।' ये कोई नई बात नहीं थी इसलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। मेरे पिताजी बहुत बड़े ठेकेदार हैं। करोड़ों की आय है। अधिकांश अपने साइट पर ही रहते हैं। कभी-कभार घर आते तो मेरे लिए महँगे-महँगे उपहार लाते। लेकिन नशे में धुत रहने के कारण मैं उनसे बात नहीं कर पाता। माँ कई सामाजिक और राजनितिक संगठनों से जुड़ी हैं। रोज़ कही ना कही कोई ना कोई कार्यक्रम में उनका निमंत्रण रहता है। घर में भी होती हैं तो संगठनों के लोगो के साथ बैठक में समय गुज़ार देती हैं। पिताजी भी उनके साथ कुछ पल गुज़ारने के लिए तरसते हैं। लेकिन वो अच्छी तरह जानते हैं कि माँ के सामाजिक और राजनैतिक पहचान के कारण ही उनकी ठेकेदारी चलती है। इसलिए कुछ नहीं बोल ते। खाने खाकर उठा तो दिन के दो बज चुके थे। मैंने कहा, 'काका आज तुम्हारे हाथों का खाना खाकर मज़ा आ गया।'

'रात में इससे भी बढ़िया खाना खिल ाऊँगा,' काका भी खाना खा कर हाथ-मुँह धोने लगे। 'लेकिन मैं रात में यहाँ नहीं ठहरने वाला।' 'काहे बबुआ। बिना माल किन से मिले चले जाओगे।' 'हाँ काका। मैं होस्टल से भाग कर आया हूँ ना। आज बाल दिवस है। मैंने सोचा था मम्मी-पापा से मिलकर आशीर्वाद लूँगा। रात होने के पहले हॉस्टल पहुँचना होगा।'

'तो आगे क्यों नहीं मालकिन को बताय दिए। नाही जाती वो परोगराम में।' 'नहीं काका। तुम तो जानते हो पापा को अपने व्यवशास और मम्मी को अपने कैरियर सँवारने से मौक़ा कब मिलता है जो वो मेरे लिए अपना कार्यक्रम बदल देती,' मैं मायूस होकर काका से बोला। 'अभी हम टेलीफून कइके मालकिन के बुलाई लेत है,' कहते-कहते काका जैसे ही टेलीफोन कि ओर बढ़े मैंने उनका हाथ पकड़ लिया। 'कोई ज़रूरत नहीं काका। मैं आज अपने अभिभावकों से आशीर्वाद लेने आया था। मम्मी-पापा नहीं है तो क्या हुआ। तुम भी क्या कोई कम हो काका। तुम हमेशा मुझे मेरी मम्मी-पापा की कमी को पूरा किये हो। आज तुम्हीं मुझे आशीर्वाद दे दो,' कहकर मैं काका के पैरों में झुक गया।

काका तुरंत मुझे उठाकर अपने गले से लगा लिए। उनके आँखों से निकले आँसू आशीर्वाद बनकर मेरे सर पर गिर रहे थे। मुझे बाल दिवस का उपहार मिल चुका था। मुझे रामू काका के मोती से झरते आँसू मम्मी-पापा के दिए महँगे उपहारों से ज़्यादा कीमती लग रहे थे।

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF
GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

बीड सरपंच हत्याकांड

अब सीआईडी करेगी जांच...

महाराष्ट्र में मसाजोग गांव के सरपंच संतोष देशमुख की हत्या से जुड़े दो मामलों का नियंत्रण अपराध अन्वेषण विभाग (सीआईडी) ने अपने हाथ में ले लिया है। अधिकारियों ने गुरुवार को इस घटना की पुष्टि की। सीआईडी ने राज्य सरकार के आदेशों के बाद १२ दिसंबर को देशमुख की हत्या की जांच पहले ही अपने हाथ में ले ली थी। संतोष देशमुख का ९ दिसंबर को अपहरण कर हत्या कर दी गई थी। जांच के दौरान, वाल्मीक कराड, विष्णु चाटे और सुदर्शन घुले के साथ एक २ करोड़ रुपये के जबरन वसूली के मामले का सीआईडी ने अब तक विस्तार किया है। सीआईडी एक सुरक्षा गार्ड पर हमले से जुड़े मामले की भी जांच कर रहा है। गुरुवार को, सीआईडी की एक टीम मसाजोग गांव में जानकारी एकत्र करने के लिए गई थी।

सीआईडी की योजना विष्णु चाटे, जो वर्तमान में बीड पुलिस की हिरासत में है, की रिमांड २७ दिसंबर तक बढ़ाने की है। सीआईडी टीम के एक पुलिस अधीक्षक रैंक के अधिकारी के नेतृत्व में गुरुवार सुबह से बीड जिले के केज तालुका में जांच के प्रयास जारी हैं। विष्णु चाटे ने कथित तौर पर जिले में एक पवनचक्की चलाने वाली ऊर्जा कंपनी से २ करोड़ रुपये की मांग की थी और धमकी दी थी कि अगर उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं तो कंपनी का संचालन बंद कर दिया जाएगा। देशमुख ने इस जबरन वसूली को रोकने का प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप ९ दिसंबर को उनका अपहरण कर हत्या कर दी गई। इस मामले में सात आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। विपक्षी नेताओं ने आरोप लगाया है कि वाल्मीक कराड बीड जिले के

१. सरपंच संतोष देशमुख की हत्या से बीड में उथल-पुथल

२. सामाजिक और राजनीतिक में अशांति

३. प्रदर्शनकारियों ने सड़कें जाम कर बस में आग लगाई

४. वाल्मीक कराड पर हत्या और अपहरण के मामले दर्ज

एनसीपी मंत्री धनंजय मुंडे के करीबी संपर्क में हैं।

अपराध के खिलाफ गुस्सा

- वाल्मीक कराड को बीड के स्थानीय लोगों ने 'स्थानीय बाहुबली' बताया है, जो खुद को 'कानून से ऊपर' मानता था।

- कराड के खिलाफ हत्या के प्रयास से लेकर अपहरण तक के कम से कम १० आपराधिक मामले दर्ज हैं

- उसका बिजनस रियल एस्टेट से लेकर रेत खनन तक फैले हुए हैं।

- वह मंत्री धनंजय मुंडे के लिए क्षेत्र में 'गो-टू' व्यक्ति भी हैं, जो राजनीतिक अभियान और कार्यक्रमों के आयोजन के लि

केज तहसील में एक निजी पवनचक्की कंपनी, अवाडा के कर्मचारियों को कुछ लोगों ने अगवा कर लिया। लोगों ने कथित तौर पर परिचालन फिर से शुरू करने के लिए उनसे २ करोड़ रुपये की मांग की। कंपनी पवनचक्की परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में थी। मुख्य आरोपी रमेश घुले है। केज पुलिस ने मामला दर्ज किया। घुले के नेतृत्व में समूह ने ६ दिसंबर अवाडा साइट पर हमल ा किया। कर्मचारियों और गार्ड पर हमला किया, जिन्होंने उन्हें अंदर जाने से रोकने की कोशिश की। सरपंच संतोष देशमुख को संदेश भेजा गया। वह कुछ ग्रामीणों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। उन्होंने समूह के साथ हाथापाई की। संतोष देशमुख ने सुदर्शन घुले नामक एक व्यक्ति के साथ हाथापाई की। इस घटना को ग्रामीणों ने मोबाइल फोन के कैमरे में रिकॉर्ड कर लिया, जिन्होंने वीडियो को उपद्रवियों को संदेश के रूप में स्टेटस मैसेज के रूप में रखा। घुले को गिरफ्तार कर लिया गया, लेकिन एक दिन बाद उसे जमानत मिल गई। ९ दिसंबर दोपहर करीब ३ बजे सुदर्शन घुले के नेतृत्व में इन आरोपियों ने देशमुख की कार को रोक लिया और उसे एक एसयूवी में खींच लिया। घंटों बाद उसका शव बरामद हुआ।

ए जिम्मेदार हैं।

बीड में प्रकाश सोलंके, सुरेश धास जैसे विधायक ४-५ बार चुनाव जीत चुके हैं, लेकिन उन्हें मंत्री पद नहीं मिला है। यहां तक कि वंजारी समुदाय से आने वाले जीतेंद्र आव्हाड और ओबीसी समुदाय से दूसरी बार विधायक बने संदीप क्षीरसागर जैसे विधायकों ने भी मुंडे और कराड पर निशाना साधा है।

धनंजय मुंडे और उनकी चचेरी बहन पंकजा मुंडे के लिए स्थिति नाजुक हो गई है, दोनों को इस्तीफा देने के लिए कहा गया है। पंकजा इस मामले पर काफी हद तक चुप रही हैं, हालांकि देशमुख एक वफादार और भाजपा समर्थक थे। मुंडे परिवार ने देशमुख के परिवार से मुलाकात भी नहीं की है।

बीड सरपंच हत्या मामले में अभिनेत्री प्राजक्ता माली ने फडणवीस से मुलाकात की, सीएम ने दिया ये भरोसा

महाराष्ट्र के बीड जिले में सरपंच संतोष देशमुख की हत्या को लेकर राजनीतिक विवाद गहराता जा रहा है. इस हत्या मामले में अभिनेत्री प्राजक्ता माली ने हाल ही में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस से मुलाकात की. माली ने बीजेपी विधायक सुरेश धास द्वारा राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के मंत्री धनंजय मुंडे का नाम घसीटने और उन्हें निशाना बनाने की आलोचना की थी. अभिनेत्री ने धास से माफी की मांग की और इसे महिला कलाकारों के लिए अपमानजनक भी बताया.

अभिनेत्री माली ने इस मुद्दे पर कहा कि धास की टिप्पणी पूरी तरह से निराधार और गलत थी. शनिवार को माली ने कहा था कि महिलाओं, खासकर कलाकारों को राजनीतिक विवादों में घसीटना उचित नहीं है. उन्होंने यह भी कहा, 'मुझे धनंजय मुंडे से जोड़ने वाली धास की टिप्पणी अपमानजनक है. मुझे एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और पुरस्कार समारोह के लिए परली जाना था. मेरा काम दर्शकों का मनोरंजन करना है.' माली ने यह भी आरोप लगाया कि विधायक धास ने अपने स्वार्थ के लिए उनका नाम इस्तेमाल किया.

फर्जी वीडियो पर कार्रवाई की मांग

माली ने मुख्यमंत्री से अपनी मुलाकात में यह भी कहा कि वह उन लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करना चाहती हैं, जो उनके बारे में फर्जी वीडियो क्लिप्स बना रहे हैं. अभिनेत्री ने जोर देते हुए कहा कि वह

इस मुद्दे को लेकर पूरी तरह से गंभीर हैं और मुख्यमंत्री से मदद की उम्मीद करती हैं. मुख्यमंत्री से यह मुलाकात मुंबई स्थित उनके सरकारी आवास पर हुई, हालांकि इस मुलाकात का ब्योरा अब तक सार्वजनिक नहीं किया गया है.

वाल्मीकि कराड की हिरासत में

संतोष देशमुख हत्याकांड में हर दिन नई जानकारी सामने आ रही है, जो पिछले कुछ दिनों से पूरे राज्य में चर्चा में है। संतोष देशमुख की बेरहमी से हत्या करने वाले तीनों हत्यारे अभी फरार हैं। हत्या का मास्टरमाइंड होने के आरोपी वाल्मिक कराड ने पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया है। वाल्मिक कराड से सीआईडी के वरिष्ठ अधिकारी बीड शहर पुलिस थाने में पूछताछ कर रहे हैं। बुधवार को बीड सिटी थाने के एक बंद कमरे में वाल्मिक कराड से पूछताछ

की गई। हालांकि, एक और घटना ने कई लोगों का ध्यान खींचा। बुधवार को संतोष देशमुख के भाई धनंजय देशमुख अचानक बीड सिटी पुलिस स्टेशन पहुंचे, जहां वाल्मिक कराड बंद था। वे कुछ देर पुलिस स्टेशन में रहे, अधिकारियों से बात की और फिर चले गए। बीड शहर थाने से बाहर आने के बाद धनंजय देशमुख ने मीडिया से भी बातचीत की।

इस बात पर बहस हुई कि क्या धनंजय देशमुख को अचानक पुलिस स्टेशन बुलाया गया था या वह अपनी मर्जी से यहां आए थे। देशमुख ने हालांकि कहा कि वह बीड शहर पुलिस थाने यह पता लगाने आए थे कि जांच कहां से आई है। मैं अपनी मर्जी से सीआईडी कार्यालय आया था। मैं दो दिन पहले आया था। मैंने यह जानने के लिए सीआईडी अधिकारियों से मुलाकात की कि जांच कहां से हुई। मैंने सीआईडी अधिकारियों से पूछा कि क्या मुझसे किसी सहयोग की उम्मीद है, क्या मैं मदद कर सकता हूं।

जांच अच्छी चल रही है। मैंने जांच अधिकारियों से बात की। पता चला है कि एसआईटी का गठन कर दिया गया है। हम पता लगाएंगे कि एसआईटी में कौन से अधिकारी हैं।

पुलिस द्वारा विशेष सावधानी बरती जा रही है क्योंकि वाल्मिक कराड को बीड शहर पुलिस स्टेशन में हिरासत में रखा गया है। थाने आने वाले हर व्यक्ति का नाम और आने का कारण दर्ज किया जा रहा है। डेटा दैनिक आधार पर सीआईडी और पुलिस अधीक्षक को भेजा जाएगा। सभी की निगाहें इस बात पर टिकी हैं कि वाल्मीकि कराड की जांच से सीआईडी को क्या जानकारी मिलेगी।

स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के एक सरकारी कर्मचारी ने करोड़ों की धांधली!

महाराष्ट्र में छत्रपति संभाजीनगर के डिविजनल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में २१ करोड़ ५९ लाख रुपये का घोटाला हुआ है. इस घोटाले की जानकारी सामने आने के बाद हर कोई हैरान है. इस स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के एक सरकारी कर्मचारी ने करोड़ों की धांधली करके बीएमडब्ल्यू (BMW) कार और बाइक खरीदी है. साथ ही आरोपी ने अपनी गर्लफ्रेंड को 4BHK फ्लैट भी गिफ्ट किया है. आरोपी ने अपने साथी के साथ मिल कर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स एडमिनिस्ट्रेशन से इंटरनेट बैंकिंग के जरिए ये हेरफेर की है. बताया जा रहा है कि आरोपी कर्मचारी हर्षल कुमार अनिल क्षीरसागर यहां कॉन्ट्रैक्ट पर कंप्यूटर ऑपरेटर का काम करता था और उसकी सैलरी सिर्फ १३ हजार रुपये थी. २१.५९ करोड़ रुपये के मामले में मुख्य आरोपी हर्षल कुमार फिलहाल फरार है और पुलिस उसकी तलाश कर रही है. मंगलवार को छत्रपति संभाजीनगर शहर पुलिस की आर्थिक क्राइम शाखा ने औरंगाबाद एयरपोर्ट के पास ४बीएचके फ्लैट की तलाशी ली.

अधिकारियों ने करीब चार घंटे तक फ्लैट की तलाशी ली गई, लेकिन उन्हें केवल घरेलू सामान ही मिला. आरोपी द्वारा इस मामले में कुछ अन्य लोगों की भी मदद ली गई थी जिनमें यशोदा शेट्टी और उसके पति बीके जीवन शामिल थे. पुलिस ने दोनों को गिरफ्तार कर लिया है. पुलिस की तरफ से सभी अकाउंट्स और जुड़े हुए दस्तावेज जब्त करते हुए फ्रीज कर लिए गए हैं. पुलिस को शक है कि इसमें कुछ और लोग शामिल हो सकते हैं.

मुख्य आरोपी ने कथित तौर पर खेल विभाग के पुराने लेटरहेड का इस्तेमाल किया और बैंक को एक ईमेल भेजा, जिसमें खेल परिसर के बैंक खाते से जुड़े ईमेल पते को बदलने का अनुरोध किया गया था. उसने सिर्फ एक अक्षर बदलकर एक समान ईमेल पता तैयार किया था. मुख्य आरोपी नए बनाए गए ईमेल को उपयोग करने में सक्षम था. फिर उसने जालना रोड पर एक राष्ट्रीयकृत बैंक के साथ डिवीजनल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स कमेटी के खाते के लिए नेटबैंकिंग सर्विस एक्टिव की.

पुलिस ने बताया कि १ जुलाई से ७ दिसंबर २०२४ के बीच कंप्यूटर ऑपरेटर ने अपने और १२ अन्य बैंक खातों में पैसे ट्रांसफर किए. इनमें से एक खाते में तीन करोड़ रुपये आए. जांच में पता चला है कि फरार कंप्यूटर ऑपरेटर ने १.२ करोड़ की एक बीएमडब्ल्यू कार, १.३ करोड़ की एक और एसयूवी, ३२ लाख की एक बीएमडब्ल्यू मोटरसाइकिल और एक आलीशान 4BHK फ्लैट खरीदा है.

उसने अपनी गर्लफ्रेंड के लिए हीरे जड़े चश्मे का भी ऑर्डर दिया था. पुलिस ने बीएमडब्ल्यू कार और बाइक को पहले ही जब्त कर लिया है. जांच में पता लगा कि आरोपी में १२ अलग-अलग अकाउंट में पैसे ट्रांसफर किए थे. फिलहाल पुलिस की इकोनामिक ऑफेंस विंग दफ्तर में जुड़े हुए सभी लोगों से पूछताछ कर रही है और आगे कुछ अन्य लोगों से भी पूछताछ की जा सकती है. यह पूरा मामला तब सामने आया जब स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट के अधिकारी दीपक कुलकर्णी ने जवाहर नगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई.

डीसीपी प्रशांत कदम ने बताया हमने इस मामले में कुल मिलाकर तीन लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है. दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है. एक अभी भी फरार है. जांच के दौरान पता चला है कि उसने BMW कार और बाइक खरीदी थी.

१. करोड़ों की धांधली करके बीएमडब्ल्यू (BMW) कार और बाइक खरीदी
२. गर्लफ्रेंड को 4BHK फ्लैट भी गिफ्ट
३. उसने अपनी गर्लफ्रेंड के लिए हीरे जड़े चश्मे का भी ऑर्डर दिया

30% off
Enriched With
Vitamin E
Keeps eyes nourished
Almond Oil
Gives a smooth glide for an
intense black color in one stroke
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

30% off
3-in-1 Kajal
Kajal + Liner + Smoky Eye Shadow
Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

17% off
GET INSTANT
GLOWING SKIN
WITH
UBTAN RANGE
GOOD VIBES
UBTAN RANGE
CTSM

30% off
SUPER SAVER
DEEP CLEANSING CHARCOAL COMBO
DEEP CLEANSING
GOOD VIBES
SKIN PURIFYING FACE WASH
Activated Charcoal
DEEP CLEANSING FACE SCRUB
PEEL OFF MASK
DEEP CLEANSING SHEET MASK
Activated Charcoal

वैष्णो देवी रोपवे प्रोजेक्ट के खिलाफ प्रदर्शन...

४०,००० लोगों का रोजगार प्रभावित

जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले की त्रिकुटा पहाड़ियों में रोपवे प्रोजेक्ट के खिलाफ प्रदर्शन जारी है। १८ प्रदर्शनकारियों को कटरा पुलिस ने ३ दिन पहले गिरफ्तार किया था, जिनकी रिहाई की मांग के लिए ५ अन्य प्रदर्शनकारी भूख हड़ताल पर बैठ गए।

जम्मू चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (JCCI) ने श्री माता वैष्णो देवी संघर्ष समिति को अपना समर्थन दिया है और प्रशासन से बातचीत के जरिए मुद्दे को सुलझाने की बात कही है। इस बीच, डिप्टी CM सुरिंदर चौधरी ने प्रदर्शनकारियों का समर्थन करते हुए कहा- रोपवे प्रोजेक्ट का फैसला गलत है। यदि कटरा के लोग रोपवे परियोजना नहीं चाहते हैं, तो श्राइन बोर्ड और एलजी को उनकी बात सुननी चाहिए और समस्याएं हल करनी चाहिए, क्योंकि इससे ४० हजार लोगों का रोजगार छिन जाएगा।

दरअसल, वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड श्रद्धालुओं के मंदिर जाने के लिए कटरा में ताराकोट मार्ग और सांझी छत के बीच १२ किलोमीटर के मार्ग पर २५० करोड़ रुपए की लागत से रोपवे का निर्माण करवा रहा है। अभी तक वैष्णो देवी आने वाले श्रद्धालुओं को खच्चर और पालकीवाले ही मंदिर दर्शन कराने ले जाते हैं। ये उनके कमाई का जरिया

- **व्यापारियों ने कहा कि रोपवे और ६ लेन प्रोजेक्ट से उनकी आजीविका छिन जाएगी।**
- **२५ दिसंबर को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने**
- **प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया था।**
- **प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज, १८ लोग गिरफ्तार,**
- **कांग्रेस समर्थन में आई**
- **प्रदर्शनकारियों ने लाठचार्ज के भी आरोप लगाए**
- **प्रदर्शनकारी २० लाख मुआवजा मांग रहे**
- **LG बोले- जनवरी तक प्रोजेक्ट काम पूरा हो जाएगा**
- **२०२४ में अब तक ८४ लाख लोगों ने दर्शन किए**

श्री माता वैष्णो देवी संर्घष समिति के आह्वान पर पैंथल, सिड़ा, सुल, कक्ड़याल, चडयाई मुत्ल, संदरानी, पागा और अघार जित्तो गांवों से हजारों लोग रोपवे के विरोध में कटड़ा पहुंचे। परियोजना के काम में लगे मजदूरों ने भी काम बंद रखा। होटल व्यवसायी, दुकानदार, टट्टू संचालक, मजदूर और ट्रांसपोर्टर सड़कों पर उतरे। शालीमार बाग से निकली रोष रैली अप्पर बाजार, मुख्य बाजार से होते हुए श्रीधर चौक पर पहुंची और यहां धरना दिया गया। इसके बाद जम्मू मार्ग की ओर कूच किया गया। शहर के एशिया चौक पर शाम पांच बजे तक नारेबाजी हुई। उपायुक्त रियासी निधी मलिक ने कटड़ा पहुंचकर संघर्ष समिति के सदस्यों से एक घंटा बैठक की। उपायुक्त ने कहा कि उनका कुछ दिन पहले ही तबादला हुआ है।

आपकी बात सरकार तक पहुंचाई जाएगी। इसके लिए कुछ दिन का समय दें। उन्होंने २३ दिसंबर तक जवाब देने का समय लिया। इसके बाद प्रदर्शन समाप्त कर दिया गया। अब समिति २३ दिसंबर को दोपहर दो बजे शालीमार बाग में बैठक करेगी। समिति के सदस्यों ने बताया कि उनके दो मुद्दे हैं। पहला रोपवे परियोजना पर रोक लगे और दूसरा दिल्ली-अमृतसर-कटड़ा एक्सप्रेसवे की सिक्सलेन ताराकोट को छोड़कर कटड़ा में ही समाप्त हो। ताराकोट तक रोड जाने से बसा बसाया कस्बा उजड़ जाएगा।

है। इसलिए वे रोपवे प्रोजेक्ट का विरोध कर रहे हैं। अभी वैष्णो देवी मंदिर तक पैदल चढ़ाई कर, पालकी पर या खच्चर पर ही जा सकते हैं। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि श्राइन बोर्ड विकलांग लोगों के नाम पर बिजनेस करना चाहता है।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि कटरा पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे लोगों को गिरफ्तार किया। उन्होंने लाठीचार्ज भी किया। इसी कारण हमने ७२ घंटे बंद को बढ़ाया है। कांग्रेस के पूर्व मंत्री जुगल शर्मा भी प्रदर्शनकारियों के समर्थन में आए।

जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल (LG) मनोज सिन्हा ने निर्माणाधीन जम्मू तवी रिवरफ्रंट परियोजना के स्थल का दौरा किया था। उन्होंने कहा था- ९०% काम पूरा हो चुका है। उम्मीद है कि यह जनवरी तक पूरा हो जाएगा। कटरा में चल रहे विरोध प्रदर्शन पर उन्होंने कहा था कि श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड द्वारा घोषित रोपवे परियोजना का उद्देश्य तीर्थयात्रियों के लिए तेज और सुरक्षित यात्रा प्रदान करना है।

रोपवे प्रोजेक्ट के खिलाफ चले प्रदर्शन में मजदूर संघ के अध्यक्ष भूपिंदर सिंह जामवाल और शिवसेना (UBT) के प्रदेश अध्यक्ष मनीष साहनी भी शामिल हुए थे। उन्होंने रोपवे प्रोजेक्ट से प्रभावित होने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए ₹२० लाख का मुआवजा देने की मांग की थी। साथ ही प्रभावित लोगों के लिए पुनर्वास प्लान बनाने के लिए भी कहा था।वैष्णो देवी के दर्शन के लिए इस साल अक्टूबर तक ८६ लाख से ज्यादा लोग पहुंच चुके है। श्राइन बोर्ड के अधिकारियों को कहना है कि आंकड़ा १ करोड़ से ऊपर पहुंच जाएगा। पिछले साल ९५ लाख से ज्यादा लोगों ने दर्शन किए थे।

करेले की खेती...

करेले की खेती सम्पूर्ण भारत मे की जाती है। इसका फल खुरदरी सतह वाला कडवा होता है। इसके फल को सब्जी के रूप मे पकाकर, फ्राई करके करि तथा कलोजी के रूप मे प्रयोग किया जाता है। उच्च पोषक तत्व और औषधियो गूणो से युक्त होने के कारण इस सब्जी का जन जीवन मे बडा ही मह्त्व है। इसकी सब्जी बल्दायक, कीटनाशक, दस्तावार और उदरशूल को दूर करने वाली है। करेले का जन्मस्थान अफ्रीका एवं चीन माना जाता है। यह भारत मे जंगली रूप मे भी पाया जाता है। गर्म आद्र जलवायु करेले की खेती के लिये उपयुक्त होती है। करेले के लिये उत्तम जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी युक्त भूमि सर्वोत्तम होती है। करेले की किस्मो को आकार के अनुसार दो वर्गो मे बाटा जा सकता है-

१- प्रथम वर्ग के छोटे आकार वाली (१० सेमी तक) जो की प्राय ग्रीष्म ऋतु मे उगायी जाती है ।

२- दुसरे वर्ग के बड़े आकार वाली (१० से १८ सेमी तक) जो की प्राय वर्षा ऋतु मे उगायी जाती है।

करेले की प्रमुख उन्त किस्मे निम्न प्रकार की है- पूसा २ मौसमी, कल्याणपूर, बारामासी, अक्र हरित, कोयेम्ब्टूर लम्बी, hight long, green long, एम बी टी एच -१०१, एम वी टी एच -१०२ ।

करेले की कुछ प्रमुख किस्मो का विवरण

१- पूसा दो मौसमी - यह किस्म भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली द्वारा विकसित की गयी है। यह खरिफ और जायद दोनो के लिये उपयुक्त किस्म है। इसकी लता अधिक फैलने वाली, फल मध्यम मोटाई के, हरे और ७-८ सेमी लम्बे होते है। इसके फल लगभग ५५ दिन मे तैयार हो जाते हैं इसके प्रत्येक पौधे से औसत ४ से ५ किलो उपज प्राप्त होती है।

२- कल्याणपुर बारामासी- इसका विकास सब्जी अनुसंधान केंद्र कल्याणपुर (उत्तरप्रदेश) से हुआ है। यह खरिफ के लिये उत्तम किस्म है।

३- कोयेम्ब्टूर लम्बी- यह किस्म अधिक फैलने व अधिक फलने वाली है। इसके फल लम्बे, मुलायम, सफेद रंग के होते है। यह वर्षा ऋतु के लिये उत्तम किस्म है।

करेले की खेती के लिये भूमि की तैयारी कैसे करते है

कद्दू वर्ग के अन्य फसल के समान ही करेले की फसल के लिये भी भूमि की तैयारी

हमारे देश में करेला की खेती काफी समय से होती आ रही है। इसका ग्रीष्मकालीन सब्जियों में महत्वपूर्ण स्थान है। पौष्टिकता एवं अपने औषधीय गुणों के कारण यह काफी लोकप्रिय है। इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके धूप में सुखाकर रख लिया जाता हैं, जिनका बाद में बेमौसम की सब्जी के रूप में भी उपयोग किया जाता है। करेले का जन्मस्थान अफ्रीका एवं चीन माना जाता है। यह भारत मे जंगली रूप मे भी पाया जाता है। गर्म आद्र जलवायु करेले की खेती के लिये उपयुक्त होती है।

करनी चाहिए। एक बार खेत की मिट्टी पल टने वाले हल से गहरा जोत कर बाद मे ३-४ जोताई देशी हल से करनी चाहिए। प्रतेय्क जोताई के बाद पाटा लगाकर भूमि को भुरभुरी व समतल तैयार कर लेना चाहिए। करेला की खेती के लिए ऐसी भूमि का चयन करना चाहिए, जिनमें अम्ल एवं नमक का प्रतिशत सामान्य से अधिक न हो अर्थात् भूमि का पी.एच. ६.५ से ८.०० के मध्य तथा मृदा में जीवांश का प्रतिशत अधिक से अधिक होना चाहिए, ताकि पौधों को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व उपलब्ध हो सकें।

करेले की खेती के लिए खेत की तैयारी करते समय २०० लीटर बायोगैस स्लरी अथवा २००० लीटर संजीवक खाद खेत में डालकर ४-५ दिन पश्चात मिट्टी पलट हल से जुताई करें। इसके उपरान्त एक सप्ताह तक खेत को खुला छोड़ देते हैं। तत्पश्चात तीन से चार बार देशी हल से जुताई कर मेंडा (पटेला) लगाकर खेत को समतल करें, तत्पश्चात तीन-तीन फीट के अन्तराल पर १ फीट गहरा तथा २ फीट चौड़ा थावला बनाकर प्रत्येक थावले में ५०० ग्राम वर्मी कम्पोस्ट तथा ५० ग्राम कॉपर सल्फेट पाउडर एवं २०० ग्राम राख मिलाकर थावले को मिट्टी से ढ़क देते हैं तथा खेत की सिंचाई कर लें। सिंचाई के ५-६ दिन पश्चात करेल ा बीजों की बुवाई थावले में कर दें। बुवाई करते समय प्रत्येक थावले में ४ से ५ बीज पौध हेतु डालें।

करेले की खेती मे कौन कौन से

खाद व उर्वरक डालने चाहिए

करेला को तोरई के बराबर खाद एवं उर्वरक देने चाहिए। करेला को २५०-३००क्विंटल गोबर तथा कम्पोस्ट खाद तथा ३०-४० किलोग्राम nitogen, २५-३० किलोग्राम फास्फोरस और २०-३० किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। गोबर की खाद की मात्रा कम होने पर उर्वरको की मात्रा बढा देना चाहिए।गोबर की खाद खेत तैयार करते समय मिट्टी मे मिला देनी चाहिए। nitrogen की आधी मात्रा, फास्फोरस और पोटाश की पूर्ण मात्रा बोते समय तथा nitrogen की बची हुई आधी मात्रा बोने के १-१/२ माह बाद जड के पास top dressing के रूप मे देनी चाहिए। बीज बुवाई के ३ सप्ताह पश्चात जब करेला के पौधे में ३-४ पत्ते निकलना प्रारम्भ हो जाएं, उस समय २००० लीटर बायोगैस स्लरी अथवा २००० लीटर संजीवक खाद अथवा ४० किलो गोबर से निर्मित जीवामृत खाद प्रति एकड़ की दर से फसल को दें।

दूसरी बार जब पौधों पर फूल निकल ने प्रारम्भ हो जाएं, उस समय पुनः उपरोक्त कुदरती खाद फसल को देनी चाहिए। इसी प्रकार जब करेला फसल की प्रथम तुड़ाई प्रारम्भ हो, उस समय २०० किलोग्राम वर्मी कम्पोस्ट में ५० किलोग्राम राख मिलाकर फसल पर छिड़काव कर देना चाहिए, ताकि फसल की उपज अधिक से अधिक मिल सके।

करेले की खेती के लिए बीज की

मात्रा क्या होनी चाहिये

६ से ७.५ किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। करेला को भी लौकी की भाँति क्यारियो में, नालियो या गड्ढों में बोया जाता है। बोन की दूरि निम्न प्रकार रखनी चाहिए- ग्रीष्म फसल मे- लाईन से लाईन की दूरि-१.५ मीटर। पौधे से पौधे की दुरी-५० सेमी तक। वर्षा ऋतु फसल मे- लाईन से लाईन की दरी-२.५मीटर पौधे से पौधे की दूरी- ६० सेमी तक। एक स्थान पर ३-४ बीज ३-४ सेमी की गहराई मे बोते है। पौधे उग आने पर एक स्थान पर १-२स्वस्थ पौधो को बढने देते है, बाकी पौधो को उखाड़ देते है। जायद की फसल मे उपयुक्त अन्तर पर ५० सेमी चौडी २५ से ३० सेमी गहरी नालियाँ बनाते है। नालियों के दोनो किनारो पर ५० से ६० सेमी की दूरी पर बीज बो दिये जाते है।

करेले की खेती मे सिंचाई कैसे ओर किस समय मे करनी चाहिए

समय समय पर सिंचाई करते रहना चाहिए जिससे पौधे पानी की कमी से न मुरझाए। जायद वाली फसल मे प्रति सप्ताह सिंचाई करनी चाहिए। बरसात वाली फसल में सुखा पड़ने पर सिंचाई करनी चाहिए। करेला की फसल में सिंचाई काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है, अतः समय-समय पर सिंचाई अवश्य करते रहना चाहिए। चुंकि करेला की फसल ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु में उगाई जाती है, जिस वजह से खरपतवार अधिक संख्या में उग जाते हैं। अतः इनको समय-समय पर खेत से निकालना

बहुत जरूरी है। इसी प्रकार खेत का नियमित अन्तराल पर निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए, ताकि फसल पर फल-फूल अधिक से अधिक संख्या में आए।

करेले की खेती मे निराई गूडाई एवं पौधो को सहारा देना

जायद वाली फसल मे २-३ तथा बरसात वाली फसल मे ३ से ४ निराई गूडाई करनी चाहिए। बरसात वाली फसल को सहारा देकर उगाने पर अधिक उपज मिलती है। सहारे के लिए बांस या किसी मजबुत पेड के डन्डे या खूँटे का उपयोग करते है। सहारा देने से फल सडने से बच जाते है। क्युकी फल मिट्टी की सम्पर्क मे नही आ पाते है।

करेले की खेती मे फलो की तो. डाई कब की जाती है और उपज कितनी मिलती है-

फलो की तोडाई मुलायम एवं छोटी अवस्था में ही कर लेनी चाहिए। फल सावधानी से तोड़ने चाहिए अन्यथा बेल को क्षति पहुंचती है। लगातर बेलों से फल लेने के लिए फलो को जल्दी तोड़ लेना चाहिए और उन्हें बेलों पर पकने नहीं देना चाहिए। वैसे सामान्यतः बीज बुवाई के ९० दिन पश्चात फल तोड़ने लायक हो जाते हैं। फल तुड़ाई का कार्य सप्ताह में २ या ३ बार करना चाहिए।करेले की उपज उपरोक्त निर्देशानुसार करेले की उपज ५५ क्विंटल प्रति एकड़ तक प्राप्त की जा सकती है

बरसाती फसल मे गरमी की फसल से अधिक फल लगते है। करेले की उपज १०० से १२६ क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

करेले के पौधो मे लगने वाले रोग एवं कीट तथा उनसे बचाव के तरीके

१-रोमिल फन्फुंदी - पत्तियों की उपरी सतह पर पीले, लाल तथा निचली सतह पर बैगनी धब्बे पड़ जाते है इससे प्रभावित होती है, इसके लिए-

१- daiethen एम ०-४५ के ०.२% घोल का छिड़काव करना चाहिए।

२- bordex mixture का फसल पर छिडकव करना चाहिए।

२- चूर्णी फन्फुदी- पत्तियॉं एवं तानो पर सफेद धब्बे बन जाते है जो धीरे धीरे बढ़कर उपरी सतह पर सफेद चूर्ण के रूप मे दिखाई देते है, इसके लिए-

१- फसल पर १५-२० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर गन्धक का छिड़काव किया जाए

२- कोसान का ०.१/१०० लीटर पानी प्रति हेक्टेयर छिड़काव किया जाए।

३- मोजैक - पत्तियाँ सिकुड जाती है एवं उनकी वृद्घि रुक जाती है इसके लिए-

१- रोगी पौधो को उखाड़कर जल देना चाहिए।

२-अवरोधि जातियाँ उगानी चाहिए।

३- daimecron दवा २५ ग्राम दवा १०० लीटर पानी मे घोलकर छिडकी जाए।

कीट नियंत्रण- १- लाल किडा- यह लाल रँग की मक्खी होती है, जो अंकुरित पौधो को नष्ट कर देती है इसके लिए- ०.१% रोगोर का छिड़काव करे।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
ज्यादा लंबी रचना न भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें ; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं।
रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

**Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com**

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका
स्वर्णिम मुंबई
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9820820147 , 9082391833
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:www.swarnimumbai.com

गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ
JANUARY
HAPPY REPUBLIC DAY
बलिदानो का सपना जब सच हुआ देश तभी आजाद
हुआ आज सलाम करे उन वीरों को जिनकी
शहादत से ये भारत गणतंत्र हुआ